MARSHMAN'S

HISTORY OF INDIA,

FROM

REMOTE ANTIQUITY

TO

THE ACCESSION OF THE MOGUL DYNASTY.

DONE INTO HINDI

FOR

THE AGRA SCHOOL-BOOK SOCIETY.

BY

THE REV. J. J. MOORE,

SECRETARY.

SECOND EDITION.

CALCUTTA:

PRINTED AT THE BAPTIST MISSION PRESS, CIRCULAR ROAD,

FOR THE AGRA SCHOOL-BOOK SOCIETY.

1846.

भारतबर्षीय इतिहास।

अर्थात्

हिंदुस्थान की कथा।

आगरा स्कूलबुक सोसईटी की आज्ञा से

और पादरी जान जेम्स मोर साहिब की सहायता से

यह उलथा हिंदी भाषा में छपा।

मई ईसवी संबत्

१८४६

॥ हिंदुस्थान की कथा ॥

॥ प्रथम भाग ॥

॥ हिंदुओं का काल ॥

॥ पहला अध्याय ॥

हिंदुस्थान—उसकी कथा के बिभाग—हिंदुओं का पूर्व काल—चारों युग—हिंदुओं के कालवर्णनविद्या की अधिकाई—भारत वर्ष—हिंदुस्थान के आदि निवासी—हिंदुओं की क्रम पूर्वक-वृद्धि—इस देश के प्राचीन बिभाग—संस्कृत और चलित भाषा—परंपरा की मतरीत—वेद—हिंदुओं के पुराण ॥

हिंदुस्थान की संक्षेप कथा का वर्णन करते हैं, वह एशिया के दक्षिण देश के बीचों बीच है; उसको उत्तर और ईशान सीमा हिमालय पर्वत; दक्षिण में समुद्र; पश्चिम में सिंधु नदी; और पूरब सीमा वह

पर्वत श्रेणी जो ब्रह्म पुत्र से ले नेग्रेस नाम अंतरीप तक विस्तृत है॥

हिंदुस्थान की कथा के तीन विभाग हैं, पहला हिंदुओं का, दूसरा मुसलमानों का, तीसरा खीष्ट-मतावलंबियों का॥ हिंदुओं की कथा का प्रारंभ उस समय से है जिसका अति प्राचीन होने के कारण कुछ यथार्थ ज्ञान नहीं होता है, और उस का अंत जब मुसलमान सिंधु नदी पर आए, जिसको आठसौ बरस हुए और हिंदुस्थान को जय करने लगे॥ महमूद की पहली जय से ले प्लासी की लड़ाई तक मुसलमानों का समय था, यह युद्ध १७५७ संबत् ईसवी में हुआ, उस समय से हिंदुस्थान में अंग्रेजों के राज्य की नीम पड़ी॥ जब से अब तक अंग्रेजों का समय चला आता है॥ हिंदुओं की कथा अत्यंत खंडित है, क्योंकि जो प्राचीन लेख हिंदुस्थान का था भी, सो बहुत काल के बितीत होने से, और राज्यों की उलट पलट से नष्ट होगया है, या प्राचीन इतिहासवेत्ताओंने उन्हें बिगाड़ा है॥ मुसलमानों के समय का वर्णन अधिक विस्तार पूर्वक है; परंतु अंग्रेजों के राज्य का कथा संबंधी वर्णन अत्यंत ब्योरेवार और सत्य है॥

हिंदुस्थान की प्राचीन कथा और अनेक राजकुलों के वर्णन के इतिहास जो कुछ हैं सो भी बिश्वास करने योग्य नहीं हैं॥ पूर्व काल में केवल कवि इतिहास-

बेत्ता थे, और केवल ज्योतषी लोग कालनिरूपक॥ कवियोंने कथा संबंधी वर्णन कल्पना करके लिखने से अशुद्ध करदिया, और ज्योतषियों का विश्वास इसलिये नहीं करसकते कि उन्होंने ग्रह नक्षत्रादिकों की गति अपने मन से ठहराकर उस के अनुसार कथा संबंधी वृत्तांतों के काल और संवत् निश्चय कर लिये हैं॥

हिंदू अपने को अत्यंत प्राचीन जानते हैं, पर इस बात की कोई पक्की जड़ नहीं; वे केवल बड़ाई मारते हैं, या इस बात में पंडितोंने कुछ चतुराई की है॥ प्राचीनता के विषय में केवल हिंदू ही बातें नहीं मारते, परंतु एथन देश निवासी अपनी बड़ाई करते थे कि हम चंद्रमा से आयु में बड़े हैं॥ कैल्डियादेश में बैबीलन नगर निवासी अपनी कथा डेढ़ लाख वर्ष तक की बताते हैं॥ और चीनवाले भी अपने इतिहास ऐसे प्राचीन बताते हैं कि उन का विश्वास नहीं होसकता; परंतु इस विषय में ब्रह्मावालों का कहना अत्यंत असंगत और उपहास करने जोग है क्योंकि उनके कथा संबंधी वृत्तांत के अगाड़ी हिंदुओं की कालवर्णनविद्या केवल आज कल की सी दिखाई देती है॥ वे ऐसा कहते हैं कि हमारे पूर्व निवासियों की आयु इतने बर्षों की होती थी कि जितनी बूंदें सारी पृथ्वी पर तीन बर्ष में पड़ती हैं॥

निद्रान एथेन निवासी, बेबीलन बासी, चीनी, और अश्वावालों की इस विषय में हिंदुओं की भांति बनावट की सी बातें जान पड़ती हैं॥ वे केवल कवियों की कहानी हैं, इसलिये कथा में वस्तुता कुछ सचावट नहीं॥ यहूदियों की कथा को छोड़कर जो धर्म पुस्तक में लिखी है, किसी और जात के पास दो सहस्र आठ सौ बरस से पहले का कोई लेख नहीं है॥

हिंदू पुराणवेत्ता चार युग ठहराते हैं॥ वर्त्तमान युग को कलियुग कहते हैं, जो कई सहस्र बर्ष से चला आता है, और ४३२००० वर्ष तक रहैगा॥ द्वापर जिस के पीछे कलयुग आया दूना था अर्थात् ८६४००० का; त्रेता युग जिसके पीछे द्वापर आया पहले दोनो के समान अर्थात् १२९६००० बरस का; सत्ययुग अर्थात् प्रथम काल हिंदू कहते हैं कि कलियुग से चोगुना था॥ ये चारों युग मिलकर ४३२०००० के हैं और हिंदुओंने एक और काल ठहराया है जिसे कल्प कहते हैं, इस के बर्षों की संख्या चारों युगों के बर्षों को मिलाके सहस्र गुणा करने से उसके बर्षों की संख्या के समान होते हैं॥ प्रसिद्ध है कि यह सब गणना ग्रहों की पूर्व गति के अनुसार है और पृथ्वी की कथा के काल से कुछ संबंध नहीं रखती॥ हिंदू ज्योतषियोंने गणना की कि जब ये युग पूरे होते हैं तब किसी भांति का ग्रह नक्षत्रादि को

का योग होता है, इसलिये उन्होंने इन युगों को पृथ्वी की कालवर्णनविद्या के लिये ठहराया है॥ ज्योतषी ही याजक थे, और वे सब सामर्थवान और प्रजा लोग अज्ञान, इसलिये उस गणना को कोई हुलख के नहीं पूछता था, और उस को मान लेना यही धर्म था, जो कोई उस में संदेह करे उसे नास्तिक जानते थे॥

परंतु प्रगट है कि यह कालवर्णनविद्या ऐसी प्राचीन नहीं है; वरन जब से कि हिंदुओं का मत पुरानी रीत से पलट कर अब की नई रीत पर ठहरा है तब से इस लेख का प्रारंभ होता है॥ अब के नये मत की रीत ऐसे प्रकार की बनी हैं कि मूरख उन की बनावट देख अचंभा करें॥ जो हिंदुओं की कालवर्णनविद्या बनावट समझी जाय, तो निश्चय जानना चाहिये कि और प्रत्येक बात भी ऐसी ही हैं जिन का कुछ ठिकाना नहीं॥ मनुष्य की आयु अधिक से अधिक सौ बरस से कुछेक विशेष हो सकती है, परंतु पुराणों से जान पड़ता है कि पूर्व काल में दस सहस्र बर्ष से भी विशेष मनुष्य की आयु होती थी॥ किसी २ मनुष्य की संतान जो विशेष करके हो तो दस लड़के बालों से अधिक नहीं होते, परंतु हिंदू इतिहासवेत्ता कहते हैं कि राजा सगर के साठ सहस्र पुत्र थे जो कहू

है उत्पन्न ऊए, और दूध के कढ़ाव में पका करे और एक ऋषि के सराप से जलकर राख हो गये ॥ ईश्वरने मनुष्य को दो बांह और एक मुख दिया है; पर हिंदू कवि अपने किसी बीर की बीस भुजा और दस शिर बताते हैं ॥ यूरप के लोगोंने जहाज़ पर चढ़कर पृथ्वी प्रदक्षिणा की, और अपनी दिन-वारी चाल को नाप कर जानलिया कि पृथ्वी गोला-कार है और उस का घेर कुछ अधिक २१००० मील; और हिंदुओं की पुस्तकों में लिखा है कि वह इस प्रमाण से चालीस गुण अधिक है ॥ पृथ्वी में ऊंचे से ऊंचा पहाड़ अति ठीक नाप से जाना गया है कि उस की उंचाई पांच मील से अधिक नहीं ॥ परंतु हिंदू कवि कहते हैं कि सुमेरु पर्बत पृथ्वी से कइ लाख मील ऊंचा है जिसको उन्होंने न कभी नापा न देखा ॥ इन बातों से जाना जाता है कि हिंदुओं के शास्त्रों में पृथ्वी की कालवर्णनविद्या, मनुष्य की संतान और आयु, भूमि का विस्तार, पहाड़ों की उंचाई, और मनुष्यों के हाथ और मुख की संख्या में भी बऊत बढ़ाके कहा है ॥ इसलिये एक बात की सचाई दूसरी बात के सच और झूठ का बिचार करने से प्रगट होजायगी ॥ जो पहाड़ों की उंचाई की संख्या शुद्ध होय तो हिंदुओं की कालवर्णनविद्या भी ठीक हो सकती है ॥ पृथ्वी का व्यास आठ

सहस्र मील से न्यून है, उसके ऊपर जो ऐसा एक पहाड़ होसके कि जिस की उंचाई पृथ्वी से तीन लाख मील ऊंची हो और एक लाख अट्ठाईस सहस्र मील उस से नीचो तो उन्हों के युगों की वर्ष संख्या भी विश्वास करने जोग होसकती है। और हिंदुओं के अनुसार सुमेरु पर्वत की उंचाई कहानी है तो उनके पुराण में लिखी ऊई कालवर्णन-विद्या भी कहानी ही होगी॥

इसलिये चारों युगों की संख्या जो कही है सो संपूर्ण रूप से विश्वास करने योग्य नहीं है; और जो इस बात के निश्चय करने को कोई और प्रमाण चाहिये, तो यह प्रमाण बक्रत है कि हिंदुओं के युगों की वर्ष संख्या उन सब देशों के संवतों से नहीं मिलती जिन देशों का सच्चा आदि लेख हमारे पास है॥ परंतु यह जाना जाता है कि कथा में चारों युगों के ठीक काल थे, पर भूल केवल इतनी है कि उन के काल की संख्या बक्रत बढ़ाकर कही है॥ और देशवालों की भांति हिंदू भी अपनी कथा सुगम होने के लिये कई युगों में विभाग करते हैं; परंतु उन युगों के वर्षों की ठीक संख्या जानना कठिन है, क्योंकि हिंदू अपने काल की संख्या अत्यंत प्राचीन बताते हैं॥ बेंटली साहिब हिंदुओं की कालवर्णनविद्या बड़े परिश्रम से पढ़कर

ऐसा विचार कर कहता है कि अब के ब्राह्मण युगों की संख्या अति प्राचीन बताते हैं॥ वही साहिब कहता है कि सतजुग नूह की प्रलय से लेकर ईसवी संवत् पंद्रह सौ अट्ठाईस बरस आगे तक था; और त्रेता युग उस बरस से लेकर ईसवी संवत् के पूर्व नौ सौ एक बरस तक रहा; और उसी बरस से द्वापर जुग का प्रारंभ होता है और पांचसो चालीस बरस आगे ईसा मसीह के उसका अंत; और कल युग उसी बरस से लेकर ईसवी संवत् के २९९ बरस आगे तक था॥ यद्यपि यह अनुमान वर्षों का ठीकसा जान पड़ता है पर सब लोग उस का भी विश्वास नहीं करते॥ यद्यपि इस लेखे में संदेह है फिर भी हम को आवश्यक है कि और देशों की शुद्ध कालवर्णनविद्या से हिंदुओं की कालवर्णनविद्या को मिलावें॥ जैसे हमारे पास यहूदियों बाबल निवासियों, मिसर के रहनेवालों, और यूनानियों की अगली कथा हैं जिन से ऐसी बातें जानी जाती हैं जो विश्वास करने योग्य हैं और उन से जान सकें कि वे लोग प्रलय के पीछे कब बसे थे; और इसलिये हम यह नहीं कह सकते हैं कि हिंदू निश्चय करके इन सब से पहले बसे थे॥ कल युग का प्रारंभ जो हिंदुओंने लिखा है वह प्रलय के पीछे जो और देश बसे हैं, उनके सच्चे संवत् के साथ अच्छा मिलता है, इसलिये कलियुग के समय की

हिंदुओं की काल वर्णन विद्या बहुधा शुद्ध है इसी हेतु हम उन सब वृत्तांतों को इसी युग में कहे कहते हैं, जिन का वर्णन हिंदू और २ जुगों में कहते हैं॥ जैसे इक्ष्वाकु, सगर, राम, और युधिष्ठिर का राज्य इसी कलियुग में था॥

बड़े परिश्रम से यह बात जानी है कि हिंदुस्थान में हिंदू राजकुलों की पूर्व कथा स्पष्ट नहीं॥ हिंदुस्थान भरत के नाम से भारत बर्ष कहलाता है, और उस को सब हिंदुस्थान का राजा कहते हैं॥ यद्यपि यह भारी संदेह है कि उसने सारे हिंदुस्थान पर राज्य किया हो, पर यह संभव है कि वह हिंदुओं में नामी और पहला राजा था॥ परंतु इस भारी बात का निश्चय करना कुछ बहुत काम नहीं आता; क्योंकि वे कहते हैं कि भरतने दस सहस्र बरस राज्य किया और मरने के पीछे हिरन हुआ॥ हिंदुओं की कथा ऐसी २ कहानियों से भरी हुई हैं॥ जो हम हिंदू राजाओं की बंशावली निरी झूठी जाने तो हमें उस समय का कथा संबंधी विषय नहीं जान पड़ेगा; और जो प्रत्येक राज्य में से हम कई कई सहस्र बरस घटा दें तो भी हमें कथा संबंधी वर्णन के सच जानने का कुछ सहारा नहीं मिलता॥ हिंदुस्थान की क़थाओं में केवल दो चार वृत्तांत और दो चार नाम मिल सकते

हैं जिन पर हम को अच्छा निश्चय नहीं हो सकता है, और उनके होने की मिती और संवत् भी नहीं ठहरा सकते हैं॥ हम केवल संदेह के समुद्र में गिरते हैं, प्रत्येक बात कहानी और कहावत है, निदान सब बातों में हमें आपही बिचार के अनुमान करना पड़ता है॥ जब हम कोई समाचार प्रगट करा चाहते हैं तो ऐसा बिचारते हैं कि इसके अत्यंत बढ़ाव को घटा दें, तो भी हम यह नहीं निश्चय कर सकते हैं कि यह किस बृत्तांत से संबंध रखता है॥ बड़ा अचंभा है कि हिंदुओं की भाषा निपट मीठी और अत्यंत शुद्ध ह, और उन की विद्या भी पृथ्वी भर में अत्यंत पुरानी पर तो भी उन के पास कोई कथा संबंधी लेख ऐसा नहीं जो निश्चय और बिश्वास करने योग्य होय॥

हिंदुस्थान के बृत्तांत में पहली बात पूछने के योग्य यह है कि जो लोग हिंदू मत पर हैं वे हिंदुस्थान के प्राचीन रहनेवाले हैं कि नहीं और इस प्रश्न का उत्तर इन बातों से जो नित नित देखी जाती हैं प्राप्त होजाता है॥ इस बात में कुछ संदेह नहीं है कि पृथ्वी के आदि रहनेवाले प्रलय के पीछे सिंधु नदी के पच्छम ओर उन देशों के आस पास बसे थे जहां नूह की नाव टिकी थी, और फिर उन में से लोग उठ उठ कर पृथ्वी के नाना

देशों में जाकर रहने लगें; और हिंदुओं के सारे ग्रंथों से भी जाना जाता है कि पश्चिम की ओर से हिंदुस्थान में लोग सदा आया करते थे॥ हिंदुस्थान के आदि निवासी हिंदू नहीं थे, और पहले रहनेवालों की कई एक जातें जा जंगलियों की सी हैं, सो अब नरबदा, सोन, महानदी के जंगलों में और सरगूजा के पहाड़ों में और छोटे नागपूर के निकट बसते हैं और वे भील, गौंड, मीने, कोल, और चुआर कहलाते हैं; वे ऐसी एक बोली बोलते हैं जो संस्कृत से तनक भी नहीं मिलती है और उनका मत भी हिंदुओं के मत से जुदा है जब कि परदेशी लोग हिंदुस्थान को जीतते गये तब आदि निवासी पहाड़ों और जंगलों और घाटियों में भाग कर चलेगये; और हिंदुस्थान भर में राज्यों की उलट पलट होने पर भी उन स्थानों के रहनेवालों की बोल चाल वैसीही जों की तों बनी रही और उनकी रीत भांति और धरम भी न पलटने पाया और जब से वे कभी और हिंदुस्थानियों से न मिले॥

यद्यपि यह बात प्रगट है कि हिंदुस्थान के आदि निवासी हिंदू न थे, परंतु इस में कुछ संदेह नहीं है कि उन्होंने हिंदुस्थान को सब से पहले जीता था; हिंदुस्थान में उन के आने की मिती

ढूंढ़ना व्यर्थ है ॥ परंतु वे भी बहुत दिनों पीछे जब कि लोगों को बुद्ध आने लगी थी पच्छम की ओर से आये और सिंधु नदी को उतर कर हिंदुस्थान के उत्तर के देशों में फैल गये; और होले होले उसी ओर से और और लोग भी आने लगें जिनका मत कदाचित् पूर्व के आनेवालों के मत से बिपरीत था और उन दोनों मतों के मिलने से हिंदुओं का शास्त्र बना ॥ जो हम यह बात न ठहरावें कि हिंदुस्थान में और देशवाले सब एकही संग नहीं आये, बरन बहुत बहुत दिनों पीछे आकर बसने लगें, तो जातों के अलग अलग होने का कारण जानना बहुत कठिन होगा ॥ यह बात जानी जाती है कि पहले हिंदू केवल उत्तरही की ओर राज करते थे, यद्यपि वे कभी कभी दक्खन पर भी चढ़ाई करते थे परंतु बहुत दिनों लों हिंदू उन देशों को जो नरबदा के दक्षिण की ओर हैं अपने राज में अच्छे प्रकार से न लासके थे ॥

इस बात की सचाई हिंदुओं के इतिहास से बहुत प्रगट है कि जिस समय मनु का धर्म शास्त्र बना था तब हिंदुओं का राज केवल उत्तर में था; क्योंकि शास्त्र में लिखा है कि उत्तर में देवताओं औ प्रधान लोगों अर्थात् हिंदुओं का वास है; और हिंदुस्थान म्लेच्छमय अर्थात् आदि निवासियों करके

परिपूर्ण है ॥ वे चारों जगह जो चारों युगों में पवित्र थीं उत्तर ही में हैं; पर अब दक्षिण की ओर भी बहुतेरे स्थान हैं जो बहुत पवित्र गिने जाते हैं ॥ जिन दोनों राजकुलोंने बहुत काल तक हिंदुओं पर राज किया है उन की राजधानी हिंदुस्थान के उन भागों में थी जहां कि गंगा बहती है ॥ यह बात उन लोगों के वर्णन को बहुत दृढ़ करती है, जो कहते हैं कि हिंदुओंने दक्खन के देशों को उत्तर के देशों की अपेक्षा बहुत दिनों पीछे जीता; यद्यपि ऐसा जान पड़ता है, कि हिंदुओंने उन देशों को जो नरबदा के दक्खन की ओर बसते हैं चंद्रगुप्त औ विक्रमादित्य के समय के मध्य में जय किया था; फिर भी यह बात खूब ठीक निश्चय नहीं हो सकती है ॥ टाड॰ साहिब राज स्थान के प्राचीन ब्योरे में लिखता है और और कवि लोग भी कहते हैं कि दो सहस्र बरस हुए होंगे, एक सूरमाओं के नये बंशने जिसे अग्नि कुल कहते थे, उत्तर हिंदुस्थान को जीता, और हिंदू राजाओंने हारकर नरबदा उत्तर दक्खन की ओर नवीन राज्य स्थापन किये ॥ जिस समैं महाभारत और रामायन बनाई गई थीं, तब तक हिंदू दक्खन को अच्छी भांति नहीं जानते थे, दक्षिण को कहानी में सुना करते थे, और

उसको बंदरों के रहने की जगह जानते थे, जिन में सेनापति और सूर्मा भी होते थे; और वहां रीछों का सेनापति और राक्षसों का राजा रहा करता था। इस बात से निश्चय जाना जाता है कि जिन को बंदर और रीछ और राक्षस ठहराया है वे उत्तर के रहनेवालों से हिंदुओं के मत में पीछे आये॥

हिंदुओं के किसी किसी प्राचीन लेख से जाना जाता है कि भरत खंड में पहले दस राज्य थे, पहला सरस्वती जिस में कि पंजाब है। दूसरा कनौज जिसमें दिल्ली, आगरा, श्रीनगर अवध है। तीसरा तिरहुत जो कि कौसी नदी से लेकर गंडक तक है। चौथा गौड अर्थात् बंगाला, और थोडासा*देश बिहार का। पांचवां गुजरात जिस में गुजेरात और थोड़ासा खान देश और मालव देश है। छटा उत्कल अर्थात् उड़ीसा। और सातवां महाराष्ट्र अर्थात् मरहटों का देश। अठवां तैलिंग जो कि गोदावरी और कृष्णा नदी के बीच में है। नवां करनाटक जो कि कृष्णा नदी के दक्खन और घाटों के ऊपर को है। दसवां द्राविड़ अर्थात तामिल का देश है॥ और इन्हीं बिभागों के अनुसार दस सुंदर भाषा हैं, जो बहुतसे देशों में बोली जाती हैं, उनके नाम, प्राकृत, हिंदी, मिथला, बंगाली,

गुजराती, उड़िया, मरहटी, तैलिंगा करनाटकी, और तामल ॥

ये भाषा और और सब भाषा जो हिंदुस्थान में बोलते हैं उनकी जड़ संस्कृत है॥ हिंदुओं की कथाओं से यह जानना आवश्यक है कि संस्कृत भाषा की जड़ क्या है, और हिंदुस्थानी और बोलियों से कैसे मिलती है॥ कोई कोई कहते हैं कि हिंदुस्थान की सारी बोलियों को सुधारने से संस्कृत बनी; परंतु यह इसलिये सच नहीं दीख पड़ती है, कि उत्तर और दक्षिण की बोलियों में बहुत भेद पाया जाता है, वे बोलियां जिन में इतना भेद हो उन से एक ऐसी स्पष्ट बोली मिलकर नहीं बन सकती है जो संपूर्ण हिंदुस्थान और दक्खन के अंत तक पढ़े हुये लोगों की समझ में आवे॥ जो संस्कृत हिंदुस्थान की चलित भाषाओं को सुधारने से बनाई गई हो, जिस में धर्म की छिपी हुई बातें लिखी जाती थीं, तो यह बात समझ में नहीं आसकती है कि वह सारे लोगों से अबलों क्योंकर छिपी रही॥ और जो संस्कृत और सारी बोलियों से निकली हो तो चाहिये कि संस्कृत की सब से पुरानी चलित पोथियों की भाषा और बोलियों से बहुत मिली होती क्योंकि वे पोथियां उस समय बनी थीं जब संस्कृत को बने हुये थोड़े ही दिन हुये थे; पर हम को ऐसा जान पड़ता है कि संस्कृत की

सब से पुरानी पोथियां अर्थात् वेदों की भाषा हिंदुस्थान की चलित बोलियों से इतनी कुछ नहीं मिलती है जितनी वर्तमान काल की पोथियों की भाषा मिलती है जैसा कि वर्तमान संस्कृत और बंगाली भाषा आपस में बहुत मिलती हैं॥

बहुत करके ऐसा संभव जान पडता है कि हिंदुस्थान में ब्राह्मणों के आने से पहले दो या तीन प्राचीन बोलियों का चलन होगा; बंगाली, हिंदुस्थानी, मरहटी, गुजराती, और उड़िया बोली से जो हिंदुस्थान की उत्तर दिशा में बोली जाती थीं और आपस में बहुत मिलती हैं, इससे अनुमान होता है, कि उन सब के मिलने से एक भाषा होगई है॥ और दूसरी आदि बोली तिलूंगू, तामल, करनाटकी और और दक्षिण देश की भाषाओं से जो आपस में बहुत मिलती हैं मिलकर बनी होगी; जब कि ब्राह्मण सिंधुनदी उत्तर के हिंदुस्थान में आये तब संभव है कि वे अपनी भाषा भी अपने संग हिंदुस्थान में लाये॥ वे शीघ्र हिंदुस्थान की उत्तर दिशा में फैल गये, और हिंदुओं की बोली और मत चलाने लगें॥ संस्कृत भाषा उन के सहित फैलने लगी, और उन्हों के अति परिश्रम और उपाय से हिंदुस्थान में संस्कृत भाषा को पवित्र जानने लगें॥ इसलिये कि लोग ब्राह्मणों को बड़ा जाने और उन के धर्म को पवित्र

समझें इस कारण उन्होंने सब साधारण लोगों को संस्कृत पढ़ने से मने किया॥ कोई २ कहते हैं कि संस्कृत पढ़ना तो सब को मने नहीं है पर केवल धर्म की पुस्तकें जो संस्कृत में लिखी हैं उनको पढ़ना मने है; पर ध्यान कर देखो कि ब्राह्मणोंने वेदोंही के पढ़ने से साधारण लोगों को नहीं रोका, बरन संस्कृत के व्याकरण को भी वेद का एक भाग ठहराया, इस कारण से उनको संस्कृत के आरंभ करने का भी निषेध करवाया॥ पर जितना कि ब्राह्मण और लोगों से मिलने झुलने लगे उतनी ही उन की भाषा जिसको वे सदा सुधारे जाते थे साधारण लोगों के साथ बोल चाल में आने लगी॥ और हिंदुस्थान के उत्तर में हिंदुओं का मत पहले फैला था; और दक्खन में बहुत काल पीछे इसलिये उत्तर की प्राचीन बोलियों से संस्कृत के शब्द ऐसे मिलगये कि निदान उन बोलियों की पुरानी बोल चाल पलट गई; यद्यपि बहुतेरे शब्द जो अब बोलियों में बोले जाते हैं वस्तुता पहलेही जाने जाते हैं॥ इसलिये उत्तर की भाषा में ठीक पुस्तक बनाने के लिये संस्कृत पढ़ना उचित है॥ परन्तु दक्षिण दिशा में हिंदुओं का राज उत्तर दिशा से बहुत दिनों पीछे हुआ था इस लिये संस्कृत शब्द दक्षिणी बोलियों में थोड़े मिले॥ और यह बात कही गई है, कि मत की चर्चा छोड़कर

तिलंगू भाषा और आर दक्षिणी बोलियां जो उस से मिलती ऊई हैं उनमें संस्कृत शब्दों का बोलना कुछ आवश्यक नहीं है॥ इसी भांति हिंदुओं के मत सहित संस्कृत हिंदुस्थान में आई, तो जाना जाता है कि उसी मत सहित हिंदुस्थान में फैल गई और उसके शब्द हिंदुस्थानी बोलियों में बोले जाने लगे॥

यह बोली दिन दिन सुधरती और मंजती गई है; और कदाचित् उसका नाम इसी लिये संस्कृत रक्खा गया हो क्योंकि संस्कृत का अर्थ अत्यंत शुद्ध, वेदके छन्दों को देखने से संस्कृत का पहला बिषय जाना जाता है और जिस प्रकार कि संस्कृत में वेद लिखे हैं वह भाषा अब ऐसी मिटगई है कि अब के संस्कृतवाले पंडित लोग उन वेदों को टीका बिना नहीं समझ सकते हैं॥ रामायण औ महाभारत जिन से हिन्दुओं के मतने नया चलन पाया है, संस्कृत के दूसरे समय का ब्योरा जाना जाता है॥ जो हम यह बात ठहरावें कि ये पोथियां ईसाई संवत् से दो या तीन सौ बरस पहले बनी होंगीं, तो वह जाना जाता है कि उस काल में संस्कृत भाषा अत्यंत सुधर गई और मंज गई थी; क्योंकि इन दोनों पोथियों की भाषा अब लों अति शुद्ध औ निरमल समझी जाती है॥ इसके दोसौ बरस पीछे राजा बिक्रमाजीत के द्वार पै कबीश्वरों

की एक सभा इकट्ठी ऊई थी और पुस्तकें उसकाल में बनाई गई थीं वह संस्कृत के सुधरने का तीसरा काल था ॥ पुरान नये बने जान पड़ते हैं और उनके बनाने का कारण यह है कि नाना प्रकार की जातों के धर्म की बातों के स्थापित करने के लिये हैं जो इस देश में निपट ही प्रबल हैं; सब से प्राचीन पुरान के संवत् या मिती को हम ढूंढ़ नहीं सकते कि वे कब बने थे; पर सब से पिछले पुरान को बने ऊए पांच सौ बरस से अधिक नहीं ऊये होंगे ॥ जो कोई यह प्रश्न करे कि संस्कृत भाषा किसी समय बोली भी जाती थी कि नहीं तो उसका उत्तर यह है, कि बऊत करके ऐसा जाना जाता है कि वह कभी बोली जाती थी ॥ विचारना चाहिये कि मनुष्य पहले बोलते हैं पीछे लिखते हैं; यद्यपि कई। एक भाषा ऐसी हैं जिन का बोलना छूट गया है जैसे लैटिन आदि जिनको अब कोई नहीं बोलता है, पर यह कभी नहीं होसकता कि ऐसी भी कोई भाषा हो जो पृथ्वी में कभी नहीं बोली गई होगी॥ एक मनुष्य जो कि बालकपन से सामान्य संस्कृत भाषा में अभ्यास करता हो तो वह और भाषाओं की भांति उसमें भी बात चीत कर सकता है; परंतु वह कठिन संस्कृत कभी बोलने में नहीं आती जिस में एक एक वाक्य के बीच डेढ़२ सौ पद होंय ॥ हिन्दुस्थान

राम, कृष्ण और शिव की पूजा करते हैं; यद्यपि हिन्दुस्थान के वेद की बड़ी प्रतिष्ठा रखते हैं, पर तो भी जो कोई मनुष्य वेद की पुरानी रीत पर चले तो उस को नास्तिक कहने लगेंगे॥ वेद के मत के पीछे ब्रह्मा की पूजा चली जो वेदों के धर्म की भांति मूरतों के पूजने से विरुद्ध थी॥ उस के पीछे बीरों को देवता मानने लगे, जिस से मूरत पूजने की रीत का आरंभ हुआ; यह मत रामायण और महा-भारत से बहुत पक्का और दृढ़ होगया॥ कदाचित् बुध और जैनियों का मत उस के पीछे आया है और इस बात का निश्चय करना सहज नहीं है; जब कि वेद का मत जाता रहा औ बुध का मत हिन्दु-स्थान में से निकल गया, तब ब्राम्हणोंने देवताओं और देवियों की पूजा का मत स्थापन किया॥

॥ दूसरा अध्याय ॥

सूरज बंशी और चन्द्र बंशी—इक्ष्वाकु,—राम और रावन—परसराम— सगर—यादवों की छप्पन जाति—वेद—मनुस्मृति—महाभारत—कृष्ण और पांडव—जरासंध—युधिष्ठिर और उस के भाइयों को बनवास—कुरु-क्षेत्र का युद्ध—बलराम—हिन्दुओं की प्राचीन चाल ॥

हिन्दुओं के इतिहासों से जाना जाता है कि सदा हिन्दुस्थान में दो कुलों के राजा हुआ करते थे, एक घराने के राजा सूरज बंशी और दूसरे कुल के राजा चन्द्र बंशी थे; इक्ष्वाकु राजा मनु का बेटा था और उसी से सूरज बंश हुआ है; कहते हैं कि पहले वही पूरब की ओर आया और हिन्दुस्थान में अपना राज स्थापन किया ॥ अनुमान करते हैं कि अयोध्या उसीने बसाई है, जो बहुत युगों तक सूरज बंश के राजाओं की राजधानी रही ॥ इक्ष्वाकु के पीछे हिन्दुस्थान में बुध आया; जिसने एला के साथ जो

इक्ष्वाकु की संबंधनी थी विवाह किया और हिन्दुस्थान में चन्द्र वंश स्थापन किया जिनकी राजधानी बुध के समय में या उसके थोड़े दिनों पीछे प्रयाग थी जिसको अब इलाहाबाद कहते हैं इनदोनों कुलों की राजधानियां बहुत पास पास होने के कारण यह निश्चय हुआ है कि सूरज वंश और चन्द्र वंश के राजाओं का राज्य बहुत बड़ा न था॥

जाना जाता है कि इक्ष्वाकु से लेकर राम के समय तक सत्तावन राजाओंने अयोध्या में राज्य किया॥ यह बात भली हुई है कि यद्यपि हिंदू कवियोंने किसी किसी राजा के राज का समय दस२ सहस्र बरस से भी अधिक लिखा है॰ पर राजाओं की गिनती जों की तों लिखी है॥ वस्तुतः उस समय के जितने ग्रंथ कि इकट्ठे हो सकें उन में केवल राज बंशावली में पलटा पलटी थोड़ी हुई है; और इसलिये वे हिन्दुस्थान की प्राचीन कथाओं का विश्वास योग्य वर्णन जानने के लिये सब से अच्छे हैं॥ यूरप के काल निरूपक यह ठहराते हैं कि राजा इक्ष्वाकु ईसवी संबत् के बीस सौ या बाईस सौ बरस आगे हिन्दुस्थान में आया था; और यह भी ठहराया है कि इक्ष्वाकु के पीछे एक सहस्र बरस में अर्थात् राजा रामचन्द्र के समय लग सत्तावन राजाओंने राज किया॥ यद्यपि इतिहासवेत्ताओं के लेखे में थोड़ा

अंतर पाया जाता है, पर निस्संदेह ऐसा विचार किया गया है कि रामचन्द्र जो हिंदुओं का पहला राजा था जिसका वृत्तांत कुछएक विश्वास योग्य है ईसवी संवत् के बारह सौ बरस पहले उपजा था॥ बेन्टली साहिब जिसने हिन्दुओं की ज्योतिष बिद्या को पढ़ा था उसने रामचन्द्र की जन्म पत्री को जो बालमीकने लिखी है देखी और उसे बहुत ठीक ठीक बिचार के ऐसा ठहराया है कि राजा रामचन्द्र ईसवी संवत् के ९६१ बरस पहले जन्मा था; पर इस लेखे को हिंदुओं के प्राचीन वृत्तांत से मिलाना कठिन है, क्योंकि वह संवत् या मिती जो हिंदुओं के शास्त्रों में लिखी है सो बनावटसी है या असंगत।

रामचन्द्र सब से पहला शूरबीर हिंदुस्थान का था, उसके युद्ध संबंधी कर्मों का बर्णन बालमीक को छोड़ कर और सौ कबियोंने किया है; वह सूरज बंश में भूषण था; और अवध नगर के राजा दशरथ का पुत्र॥ रामचन्द्रने बालकपन में मिथला देश के राजा की बेटी से बिवाह किया, वह भूपति सूरज बंश में एक और शाखा का था; फिर उसकी सौतेली माने राजा दशरथ को बहकाके रामचन्द्र को उसकी स्त्री समेत बनोवास दिला दिया; और बन में से रावन अर्थात् लंका का राजा उसकी स्त्री को हर ले गया॥ और रामचन्द्रने अपनी सेना को सज सजा

और दक्खन के राजाओं से सहायता लेकर रावण की राजधानी पर चढ़ाई की, और समुद्र की धारा पर जो लंका और हिंदुस्थान के बीच में है पुल बांध कर निदान लंका पहुंचा और वहां रावण को मार अपनी स्त्री को फिर ले आया॥ यह बात प्रत्यक्ष है कि अगले समय में यह चढ़ाई अत्यंत बीरता का कर्म था, परंतु बहुत काल बितीत होने के कारण बृत्तांत अस्पष्ट होते हैं; जैसे बहुत दूर से पहाड़ धुंधले दिखाई देते हैं, इसी भांति इस चढ़ाई में कोन कोन बात सच है और कोन कोन बनावट की है यह जान्ना कठिन है॥ कवियों के बड़े बड़े बर्णन से ऐसा अनुमान होता है कि अवध का राजा उस समय सारे हिंदुस्थान में राज करता था; पर रामायण की कई बातों से ऐसा जाना जाता है कि राजा रामचन्द्र के राज का बिस्तार बहुत थोड़ा था; क्योंकि अयोध्या से चार दिन की बाट मिथला देश के राजा की राजधानी है जो उस समय स्वाधीन था॥ और भी यह बात प्रसिद्ध है कि राजा दशरथने अश्वमेध यज्ञ में सारे हिंदुस्थान के राजाओं को बुलाया और उन राजाओं में काशीवाला राजा भी था, जिसकी राजधानी अवध से सौ कोस से अधिक दूर न थी; इस से यह बात जानी जाती है कि रामचन्द्र की बीरता इतनी

ही थी, और उसके बड़ों का राज बिस्तार में बहुत छोटा था॥ और उसकी बीरता और यश औ बल इतना कुछ नहीं सराहने योग्य है जैसी बाल्मीक की बुद्धि और ज्ञान॥ रामायण में राम को ईश्वर का औतार बर्णन किया है, जैसा कि हिंदू लोग अपने परमात्माओं की स्तुति किया करते हैं इस कारण रामचन्द्र के बैरियों को राक्षस बखानना आवश्यक पड़ा क्योंकि देवता मनुष्यों के साथ लड़ने को तुच्छ जानते हैं॥ पर ये बातें केवल बढ़ाव और बनावट की जानी जाती हैं और बर्त्तमान समय को छोड़कर और सब काल में भाट लोग बढ़ावा देते और बनावट करते चले आये हैं॥

यह बात भी बखान करने के योग्य है क्योंकि ऐसा प्रसिद्ध है कि दंडक आरण्य अर्थात् दकबन के उजाड़ जंगलों में जो कावेरी नदी के तीर लों चला गया है, रामचन्द्र का कटक गया था॥ कहते हैं कि यह जंगल मुनि, ऋषि, रीछ और बंदरों अर्थात् बन्यलोगों के रहने की जगह थी॥ उस नदी को उतरकर रामचन्द्र की सेना जनस्थान अर्थात् मनुष्यों के रहने की जगह में पहुंची; यह देश रावण अर्थात् लंकाधिप के राज में था, जिस के देशों के रहनेवाले रामचन्द्र की प्रजा से कुछ एक अधिक गुणवान् थे, इसलिये उन को राक्षस कहते

थे॥ और जब कि हम अधिक खोज करते हैं, तो ऐसा संभव होता है कि अगले समय में दक्खन के छोर पर वे लोग बसते थे जो वहां पर समुद्र के मार्ग से आये थे, और सीख पाने की विद्या भी अपने संग लाये थे, जो उस समय हिंदुस्थान की उत्तर दिशा के रहनेवालों में न थी॥

चन्द्र बंश जिस का बर्णन आगे कर चुके हैं, उसका आदि जनक बुध था; वह हिंदुओं के आदि स्थान तातार देश से आया था॥ सूरज बंश के दो बिभाग हुए, और उन में दो छोटे २ राज्य स्थापन भये एक अवध का और दूसरा मिथला अर्थात् तिर्हुत का॥ चन्द्र बंश जिस का आदि जनक बुध था, उस में छप्पन शाखा हुईं, और उन से बहुधा सब उत्तर हिंदुस्थान भर गया॥ ऐसा जाना जाता है कि सूरज बंश के राजा उस मत की रीतपर चलते थे जो निदान होले होले सब हिंदुस्थान में फैल गया जिस का मूल यह है कि ब्राह्मण देवताओं से भी बड़े हैं॥ परंतु चन्द्र बंशवाले प्रारंभ ही से बुध के मत को मानते रहे, और उन्होंने ब्राह्मणों की देव बिषयक बिद्या को कभी नहीं माना॥ अनेक बातों से जो रामायण और महाभारत में लिखी गई हैं ऐसा जाना जाता है कि प्राचीन काल में ब्राह्मणों और क्षत्रियोंने अपनी अपनी बड़ाई के

कारण कई बार आपस में युद्ध किया था॥ जैसा कि सूरज वंश में रामचन्द्र से कई पीढ़ी पहले एक सूरबीर हुआ था जिस का नाम परसराम कहते हैं कि उसने सारे चत्रियोंको मार के नष्ट करदिया था, और ब्राह्मणों को उत्तर हिंदुस्थान में अति प्रबल करदिया था; और ब्राह्मणोंने उसके उपकार के कारण उसका नाम धर्मावतार या ईश्वर का अवतार रक्खा जो शब्द इस वर्त्तमान काल में प्रत्येक उपकारी के लिये बोला जाता है॥

पर चत्री थोड़े ही दिनों पीछे फिर जों के तों बलवान होगये, और उन्होंने सगर को जो रामचन्द्र का पुरखा और समद्र का राजा बोला जाता था, उसको हिमालय पहाड़ में भगादिया॥ उस प्राचीन समय के वृत्तांत ऐसे गूढ़ हैं कि उन में से सच्चे वृंत्तांत का जानना असंभव है॥ पर और २ समाचारों से ऐसा समझ में आता है कि राजा सगर महा बली था, कि समुद्र उसी के नाम से सागर कहलाता है; और उसने अपने जहाजों के द्वारा समुद्र में बड़े बड़े अद्भुत कर्म किये॥ हम को ऐसा जानपड़ता है कि अगले समय में पूर्ब ओर के द्वीपों में हिंदुओं का मत फैलाया गया था, और यद्यपि मुसलमानोंने हिंदू धर्म को बहुतेरे द्वीपों में से नष्ट करदिया, परंतु तो भी बली नाम द्वीप में जो जावा

के पास है अबलों हिंदुओं का धर्म फैला हुआ है॥ इस छोटे दीप में बहुत करके हिंदू ही बसते हैं और वे हिंदुओं की मूरतों को पूजते हैं, हिंदुओं की भांति यात्रा करते हैं, और ब्राह्मणों को पुरोहित बनाते हैं; और वहां स्त्रियां पत के संग सती होती हैं; और इसी दीप में देवताओं की भांति सगर भी समुद्र देवता के नाम से पूजा जाता है॥ इस लिये यह विचार सच्चा जान पड़ता है, कि पहले पहल राजा सगर के समय में हिंदुओं का कटक और धर्म समुद्र उतर के पूरब के दीपों में फैल गया था। परंतु उन दीपों में कोई मंदिर ऐसा प्राचीन नहीं है कि जो ईसवी संबत् से आठ सौ बरस आगे का बना हो॥

राजा बुध के पड़पोते का नाम ययाति था, जिस के तीन बेटे थे, पहले का नाम उरु दूसरे का पुरु और तीसरे का यदु था। पहलेने कुछ जस नहीं किया था॥ और पुरु की संतान पृथ्वी पर बढ़गई थी, और उन की संतान में से हस्तिने महाभारत से पांच सौ बरस पहले हस्तिनापुर को बसाया था॥ जैरासंध जो मगध देश का राजा था, और पांडव जिन की महाभारत में जीत हुई ये दोनों पुरु के बंश में थे॥ यदु कुल में अत्यंत नामी कृष्ण और उसका भाई बलदेव अर्थात् बलराम थे जो युधिष्ठिर

के समय में थे॥ चन्द्र बंश का वृत्तांत सूरज बंश के वृत्तांतसे भी अधिक गूढ़ है॥ जब कि हमने जान लिया कि सूरज बंश में इक्ष्वाकु से रामचन्द्र लों सत्तावन राजा हुए, औ चन्द्र बंश में राजा बुध से लेकर पांडवों के समय लों केवल इकतालीस तो इस से जाना जाता है कि रामचन्द्र कृष्ण और युधिष्ठिर से दो सौ बरस पहले हुए थे, पर यह बात संभव नहीं है॥ कई एक साहिब विद्यावान् ऐसा विचार करते हैं कि कई एक राजाओं का राज छोड़ दिया है, और जब कि संबत् मिती को बहुत ठीक ठीक मिलाया तो बहुत करके ऐसा जानागया कि महाभारत ईसवी संबत् से ग्यारह सौ बरस पहले अर्थात् रामचन्द्र के पीछे सौ बरस के भीतर भीतर हुआ था॥ यह मिती महाभारत की लिखावट से संभव होती है; जब से कि महाभारत हुआ तब से अयोध्या का राज छीन होगया; और उसके बिगड़ने से कनोज का राज नये सिरे से प्रबल हुआ, इससे हम को बिचार करना चाहिये कि रामचन्द्र के राजके समय और कृष्ण के समय के मध्य काल में अयोध्या की राजधानी बिगड़गई और कनोज नयें सिरे से राजधानी हुई॥ बेन्टली साहिब जिसने गर्गमुनि की गणित को जो उस समय का अत्यंत नामी ज्योतषी था और पांडवों

का उपदेशक जांचा है; वह साहिब यों कहता है कि महाभारत जिसका ब्योरा महाभारत नाम पुस्तक में लिखा है ईसाई संवत् से पांच सौ पिछत्तर बरस पहले हुआ था पर हम इन जुदे जदे ग्रंथों के अंतरों को मिला नहीं सकते ॥

महाभारत का वर्णन करने से पहले हमको यह भी लिखना चाहिये कि महाभारत से थोड़े एक दिनों पहले व्यास ने वेदों को जैसे अब हैं इसी डौल में संग्रह करके संवार लिया; और व्यास की माता कहारी थी पर उसका पिता राज घराने पुरु के बंश में से था; व्यासने अपने सहारे के लिये चार बड़े बड़े पंडितों को बुलाया, जिन का नाम पइलै, वैसंपायन, जयमिनि और सुमंत था; और उन्हीं पंडितों की सहायता से इन चारों वेदों को उसी रीत पर बिभाग किया जो अब चलती है॥ यहां पर हमको यह भी उचित है कि मनु की धर्म पुस्तक के संग्रह होने का कुछ ब्योरा लिखें कि उसही के पहले अध्याय में लिखा है कि मनुसंहिता को मनुने नहीं लिखा है॥ जैसा कि वेद उन धर्म्मी आज्ञाओं औ परंपरा की कहावतों से संग्रह कियेगये जो सुनी सुनाई थीं या कहावतों में उनकी चरचा होती चली आती थी वैसेही यह भी संभव होता है कि मनु की राजनीति भी ऐसी ही अन लिखी हुई

और सुनी हुई बातों से संग्रह की गई थी जिन को पीढ़ी से पीढ़ी तक स्मरण रखते चले आते थे इसलिये कि उनको बड़ी बड़ी आज्ञा समझें, ऐसा कहते थे कि उनको मनु ने जो हिंदुओं का जनक था बनाया है॥

अब हम महाभारत का ब्योरा लिखते हैं जिस को यद्यपि पचीस सौ बरस होचुके हैं तो भी वह लोगोंके मन से नहीं बिसरा; और अब के हिंदू इसी युद्ध के ब्योरे को उन लड़ाइयों के बर्णन से भी अधिक ठीक ठीक जानते हैं जो इन पिछले सत्तर बरसों में हुई हैं; जिन से सारा हिंदुस्थान दूर और अन्य देश निवासियों के अधिकार में हो गया॥ और वे चढ़ाइयां जो हिंदुस्थान में और और देशों की भांति सूरमाओंने की हैं जिन से बीती हुई बातों की सुध आती है, जिन से राज की उलट पलट हुई, और बंश पलट २ गये और धर्म फिर गया उन सब में महाभारत प्रधान है॥ इस लड़ाई के समय सूरज बंश का राज्य केवल उस थोड़े से स्थान में रहगया था जो पहाडों और गंगा के बीच है॥ और यदु बंश सारे हिंदुस्थान में फैल गया था॥ यदु बंश में अति प्रधान राजा ये थे॥ पहला जरासंध जो मगध देश का राजा था; और दूसरा कंस का घराना जो सूरसेन की राजधानी मथुरामें राज करता था जिसका ब्योरा हिंदुस्थानी और यूनानी इतिहासों में पाया जाता है; और तीसरा

पुरु बंश जो हस्तिनापुर का राजा था। इस महा युद्ध में जिस से सारा उत्तर हिंदुस्थान कांप उठा यही बंश मुख्य था। कंस मथुरा के राजा ने जरासंध की बेटी से बिवाह किया था जो मगध देश का महा बली राजा था, और कई एक राजा उसके सहायक थे जिन में यवनों का राजा बहुत बली था॥ यद्यपि हम जान नहीं सकते हैं कि कोनसा राजा ऐसा हुआ था पर इस बात से हमको यह एक दृढ़ प्रमाण है कि सब समय में और देशों के राजा, और देशाधिपतियों ने हिंदुस्थान में राज तो नहीं किया पर अधिकार रक्खा*॥ कृष्ण ने जो यदुकुल में था, कंस को मार उसकी गद्दी छीन ली॥ फिर जरासंध ने कंसका पलटा लेने के लिये मथुरा पर चढ़ाई की; कहते हैं कि उसने मथुरा को अठारह बेर घेरा था, निदान उसने मथुरा को ले लिया और कृष्ण और उसके संगी समुद्र के तीर भाग गये; और वहां जाकर द्वारका को बसाया॥ जब कि हम बिचारते हैं कि सूरसेन के बंश की बीरता कैसी प्रसिद्ध थी कि जिनके बिषय में मनु ने कहा है कि सूरसेनियों का घराना लड़ाई में हरा बल होने के योग्य है, इस से प्रगट जाना जाता है कि उन्होंने मथुरा की रक्षा करने में अत्यंत पराक्रम और बीरता दिखाई होगी॥

हस्तिनापुर के राजा सांतनु के पुत्र चित्र के कोई

बेटा न था, पर उसके विवाहिता स्त्री से दो बेटियां थीं और एक पांडिया नाम बेटी जारज थी ॥ व्यास जो राजवंश का गुरु था और राजा सांतन का बेटा उस के पांडिया के पेट से जो उसकी भतीजी लगती थी एक पुत्र उत्पन्न हुआ जिसका नाम पंडु था, जो अपने नाना की गद्दी पर बैठा था; पंडु ने कुंती से विवाह किया, जो बसुदेव की बहन थी, और कृष्ण और बलदेव की नाते में फूफी लगती थी ॥ कुंती के पांच पुत्र हुए जो पांचों पांडव कहलाते थे, उन में से एक का नाम युधिष्ठिर, दूसरे का भीम, तीसरे का अर्जुन, चौथे का नकुल, पांचवें का सहदेव, था; पर कई ग्रंथों में ऐसा लिखता है कि नकुल और सहदेव दूसरी स्त्री के पेट से थे ॥ परंतु हिंदुओं के प्राचीन इतिहास से ऐसा जाना जाता है कि अगले जनम के पापों के कारण कुंती बांझ रहगई थी, जब उसने देवताओं का मन यंत्र मंत्र से मोहित किया तब उन की दयासे उसके पांच पुत्र हुए और ये पांचों पंडु के बीज से नहीं हुए थे पर और देवताओं की संतान थे निस्संदेह इस राज वंश में यहां कुछ असंभव बात हो गई थी ॥

हिन्दुओं के शास्त्रों से ऐसा भी समझ पड़ता है कि व्यास के अंबिका के पेट से जो उसकी दूसरी भतीजी थी, और पंडिया की सगी बहन लगती थी एक अंधा

बेटा हुआ जिसका नाम धृतराष्ट्र था॥ जब कि राजा पंडु मरगया तब धृतराष्ट्र अंधे पन के कारण सिंहासन पर न बैठ सका, कहते हैं कि उसने अपने पुत्र दुर्योधन को छोड़कर निज भतीजे युधिष्ठिर को हस्तिनापुर के सिंहासन पर बैठाया॥ और बहुतेरे इतिहासवेत्ता ऐसा लिखते हैं कि दुर्योधन ने राज गद्दी छीन ली थी; निदान चचेरे भाइयों में परस्पर ऐसी लड़ाई और झगड़ा हुआ कि पांचों पांडव इस देश को छोड़कर फिर अटक पार चलेगये॥ ठीक उन्हीं दिनों हिंदुस्थान के राजा कंपिल नगर पर द्रोपदी के स्वयंवर में इकट्ठे हुए थे जो पंजाब के राजा की बेटी थी वह राजा भी यदु बंश में था और वहां यह प्रतिज्ञा थी; जो सब में बली हो सो इस कन्या को ले निदान अर्जुन ने अपनी धनुष विद्या से सबको जय किया और वह राज कन्या पांचों भाइयों की स्त्री हुई; इस बात को इतिहासवेत्ताओंने छिपा दिया है क्योंकि उस से यह बिचार निश्चय होता है कि यदु बंशी तातार से हिंदुस्थान में आये थे जहां ऐसा चलन है कि कई भाइयों के बीच एक ही स्त्री होती है॥

अर्जुन की जीत के कारण पांचों भाइयों का नाम और जस ऐसा दूर दूर तक फैल गया कि धृतराष्ट्र ने उन पांचों भाइयों को फिर हस्तिनापुर में बुलालिया, और झगड़ा मिटाने के लिये अपने राज के दो भाग

कर, अपने लड़के दुर्योधन और पांचों भतीजों को बांट दिया॥ दुर्योधन हस्तिनापुर का राजा बना और युधिष्ठिर ने वहां से थोड़ी दूर पर इन्द्रप्रस्थ को अपनी राजधानी बनाया; जो थोड़ेही दिनों में झट पट पुरानी राजधानी की समान सुन्दर और रमणीक होगई; और यधिष्ठिर का राज्य दिन २ बढ़ने लगा निदान उसने अभिमान करके अश्वमेध यज्ञ करने की सामा की जो यह एक तातार देश की रीत है; और हिंदुस्थान में केवल वे राजा जो सबसे अधिक महा बली होते हैं अश्वमेधयज्ञ करते हैं और जो अश्वमेध करता था सोई महा बली भूपति समझा जाता था; इस बात से मगधके राजा जरासंध को बड़त क्रोध उठा क्यौंकि इससे उसके इस मिथ्या अभिमान में कि मैं ही सब राजाओं में महा बली हूं अंतर आता था॥ कृष्णने समय पा युधिष्ठिर को अपनी बातों में लाकर सेना संगली अपने प्राचीन शत्रु जरासंध की क्षय करने को चला; और भीम और अर्जुन को संग लेकर पहाड़ोंके फेर फार की बाट से मगध देश की राजधानी को आनकर घेर लिया॥ जरासंध यद्यपि घबरा गया था पर तो भी उसने तीन दिन बड़ी बीरता से युद्ध किया, पर निदान भीमसेन ने उसे मारडाला; बहुतेरी जगह ऐसा लिखता है कि कृष्ण और बलदेव ने उसे आरे से चीर डाला॥

इसी बीच राजा युधिष्ठिर के यहां अश्वमेध यज्ञ होने की सभा हो रही थी और सारे उत्तरा खंड के राजा उसकी सहायता के लिये बुलाये गये॥ परंतु कौरव जो राज कुल में ज्येठे थे इस महा प्रतिष्ठा के कर्म से मन में क्रुद्ध हुए और दुर्योधन अपने बल से तो न रोक सका पर युधिष्ठिर से छल करने का उपाय कियां; ऐसा जान के कि युधिष्ठिर की इच्छा जुयें के खेल में रहती है, उसको निपटही गंभीर खेल में लगाया, और क्रम क्रम से बाजी लगाई पहले उसकी स्त्री की और दूसरी उसके राज की बाजी बदी; युधिष्ठिर एक ही पासे में दोनों हार गया, और दुर्योधन ने उसका राज पाट जीत कर बारह बरस को उसे देश निकाला दिया युधिष्ठिर और उसके चारों भाई कृष्ण और बलदेव सहित हिंदुस्थान के नाना देशों में रमते फिरे और अद्भुत कर्म करके प्रत्येक राज्य में अपनी बीरता दिखाते रहे॥ और जब उनके देश निकाले की अवधि पूरी हो चुकी तब वे जमुना तीरको फिर लोट आय, और युधिष्ठिर ने अपने बिभाग का राज्य मांगा॥ दुर्योधन ने उसको यह प्रार्थना सुन के निंदा पूर्वक कहा कि तुझे इतनी धरती न दूंगा जितनी में सुई की नोक समाय॥ युधिष्ठिर ने युद्ध करने को छोड़कर और कोई उपाय न देखा॥

यह महा युद्ध कुरुक्षेत्र में हुआ था, जहां पिछले दिनों मुसलमानों ने चढ़ाई करके हिंदुस्तान के सब से पिछले राजा को हराया था॥ इस महाभारत में यादवों की छप्पन जाति दोनों ओर बंटी हुई थीं और युधिष्ठिर और उसके भाइयों ने देश निकाले के समें बहुतेरे मित्र बना लिये थे इसलिये उनके सहायकों की चाहना न थी॥ हिमालय से लेकर महासागर लों प्रत्येक नामी अधिपति ने इस महाभारत के लिये अपने अपने कटक को इकट्ठा किया था॥ यह कहते हैं कि युद्ध अठारह दिन तक रहा और दोनों ओर मार धाड़ निपट ही भयानक रही; निदान राजा दुर्योधन इस लड़ाई में मारा गया और युधिष्ठिर के हाथ खेत रहा॥ जीत होने के पीछे जिस समय कि युधिष्ठिर ने रण भूमिमें अपने सब मित्रों और शत्रुओं की लोथें देखी जो सबके सब एक बंश में उपजे थे और आपस की लड़ाई में मारेगये थे उस समय युधिष्ठिरने संसार से दुःखी होकर उसके छोड़ने की इच्छा की; इस लिये वह हस्तिनापुर में आया और अपने संबंधी और शत्रु दुर्योधन को चिता में जला कर उसकी क्रिया करम किया और परीक्षित को जो अर्जुन का पोता था इंद्रप्रस्त के राज सिंहासन पर बिठाकर कृष्ण और बलदेव को साथ ले आप द्वारका को

चलागया ॥ इस महाभारत में वे बलहीन हो गये और थोड़े ही दिनों पीछे जंगली भीलोंने उन पर चढ़ाई की जिन में से एकने कृष्ण को कंवल के कुंड पर मारडाला ॥ युधिष्ठिर ने हिंदुस्थान में ठहरना न चाहा और बलदेव को साथ ले सिंधु नदी उतरकर हिमालय पहाड़ पर चढ़गया ॥ इसके अगाड़ी हिंदुस्थानी इतिहासवेत्ता उनका कुछ वर्णन नहीं जानते इसलिये ऐसा कहते हैं कि वे बैकुंठ को चले गये हैं पर हमको ऐसा निश्चय होता है कि वे जाबुलिस्तान में होकर तातार को जो उनके कुनबे की जन्म भूमि थी चलेगये और एक वंश को बनाया जो पीछे फिर हिन्दुस्थान में आया ॥

राजा रामचन्द्र की चढ़ाई और कुरुक्षेत्र का महाभारत ये दोनों बातें सूरज वंशी और चन्द्रवंशियों के इतिहास में सबसे बड़ी भारी हैं॥ रामायण और महाभारत में जो हिन्दुओं की कविता में सबसे अच्छी हैं उनका ब्योरा लिखा है यद्यपि इन युद्धों को दो सहस्र बरस से अधिक हुए पर इन्हीं पुस्तकों की कविता के कारण अबतक उनका स्मर्ण चला आता है और रामायण को जिसमें रामचन्द्र औ रावण के युद्ध का ब्योरा लिखा है बल्मीक ने बनाया है जिसको इस देशके रहनेवालों ने अमर वर्णन किया है॥ ऐसा कहते हैं कि बाल्मीक ने रामायण

को रामचन्द्र के जनम लेने से पहले आगम बाणी से लिखा पर यह बात केवल कहावतसी जान पड़ती है; संभव होता है कि बाल्मीक ईसाई संबत् से तीन सौ बरस पहले हुआ था और वस्तुता उसकी जनम पत्री से जिसको वह लिखकर छोड़ गया है ऐसा नहीं समझ में आता है कि उसका होना रामचन्द्र के पहले निश्चय होसके॥ महाभारत पुस्तक जिसको कोई कोई लोग पांचवां वेद कहते हैं ब्यासने बनाया है जिसको लोगों ने अनजान अथवा प्रसंसा के कारण राजबंश का करके बखाना है उसने वेदों को संग्रह किया था पर यह बात असंभव है क्योंकि वेदब्यास महाभारत के सूरमाओं का दादा था॥ और उन कथाओं से जिन में वह यवनासुर का ब्योरा लिखता है जो कृष्ण से लड़ा था इस बात से ऐसा पाया जाता है कि महाभारत नाम ग्रंथ हिंदुस्थान में सिकन्दर के आने से पीछे बनाया गया है क्योंकि हिंदू इतिहासवेत्ता लिखते हैं कि प्रत्येक काल में एक ब्यास जनम लेता है इस कारण हम इन पोथियों का ठीक संबत् नहीं ठहरा सकते हैं कि ये पोथियां कोन संबत् और कोन मिती में बनी हैं; पर यह बात निश्चय है कि ये दोनों कवीश्वर अर्थात् बाल्मीक और ब्यास एकही काल में उपजे हैं॥ और यह भी कुछ अचंभे की बात नहीं है कि जब

बाल्मीक ने सूरजबंश की कथा लिखी तब व्यास को भी उसे देखकर लिखने की इच्छा हुई; इन दोनों पोथियों से संस्कृत भाषा का बनाना बहुत दृढ़ होगया है और निस्संदेह उन से हिंदुओं की ज्ञात में सूर्माओं की पूजा ठहर गई॥

कृष्ण अपने मरने के पीछे देवता होकर हिंदुस्थान में पूजने लगा पर हम इस बात की ठीक मिती नहीं जान सकते कि वह कब से पूजने लगा इस महाभारत में जिस में उसके प्रसिद्ध होने का ब्योरा लिखा है और उसके पढ़ने से निश्चय करके उसके ईश्वर होने का बिश्वास होता होगा॥ अब कृष्ण की पूजा सारी हिंदुस्थान में फैल गई, और उसकी पूजा और सारे देवताओं की पूजा से जानी जाती है और ब्रह्मवैवर्त्त में केवल कृष्णचंद्र ही की बड़ाई का ब्योरा लिखा है, उस से ऐसा जाना जाता है कि वह हिंदुस्थान में मुसलमानों की चढ़ाई के पीछे लिखा गया है और उसे बने चार सौ बरस से अधिक नहीं हुए। बलदेवजी अर्थात् बलराम जो हिन्दुस्थान का बीर कहते हैं कि उसने पाटलिपुत्र का राज बनाया, और उस नगर को गंगा किनारे बसाया जो पीछे से ऐसा रमणीक और सुन्दर बनगया कि हिंदुस्थान के अत्यंत नामी नगरों की गिनती में आया अब उसका नाम ऐसा मिट गया

है कि उसका कोई चिन्ह नहीं रहा और लोग उसके स्थान का संदेह भी करते हैं॥ परंतु ऐसा संभव होता है कि वह जहां पर सोन और गंगा मिलती है वहां से थोड़े ही नीचे की ओर बसता था उसी जगह के पास जहां पर अब नया नगर पटना बसता है॥ और कहते हैं कि महाबलीपुर करनाटक में और बलीपुर बिदर में इन दोनों नगरों को भी बलदेवजी ने बसाया, और जो इन दोनों नगरों को बलदेवजी ने जिसे देवता कहते हैं बसाया हो तो संभव होता है कि उस समय बसाये गये होंगे जब कि देश निकाले के समय पांडवों के संग हिन्दुस्थान में वे रमते फिरते थे॥

महाभारत से लेकर राजा महानन्द के समय लों जो सिकंदर का समकालीन था हिंदुस्थान के बृत्तांत बहुत संदिग्ध हैं और अनमिल बात मिलाकर एक शुद्ध इतिहास बनाना निपट दुर्लभ है॥ जब कि अर्जुन के पोते परीच्छित की संतान इन्द्रप्रस्थ में राज करती थी तब जरासंध की संतान मगध देश के सिंहासन पर थी॥ शास्त्र में कहा है कि जरासंध से लेकर रिपुंजय तक तेईस राजा हुए॥ रिपुंजय को उसके मंत्री सोनक ने मार राजगद्दी आप ली पर हिंदुस्थान की प्राचीन कथा को इस छोटी पुस्तक में जिसके बीच हिंदुस्थान का संक्षेप

वर्णन है लिखने की इच्छा नहीं है क्योंकि इस विषय पर बहुतसे इतिहासवेत्ताओंने भिन्न भिन्न लिखा है इसलिये हम पांच-सौ छः सौ बरस के ब्योरे को केवल अनुमान ही पर छोड़ देते हैं; और हिंदुस्थान के उन बृत्तांतों को लिखते हैं जिन के लिखने में हमको यूनान के बृत्तांतों से भी कुछ सहारा मिल सकता है॥

मुसलमानों के बृत्तांतों में ऐसा लिखा है कि प्राचीन समय में फारस के लोग केवल सिंधु के पूरब ओर वाले देशों में ही नहीं आयेथे बरन हिंदुस्थान में जीतते हुए दूर दूर लों बढ़ गये थे पर इस बात को बहुत काल हुआ है इसलिये सच्चे इतिहासों के काल से अलग जाना जाता है परंतु हम इस से केवल इतनाही जानते हैं कि प्राचीन समय से सारी हिंदुस्थान अपने स्वाधीन कभी नहीं रही है॥ हिंदुओं के शास्त्रों में सिंधु नदी को हिंदुस्थान की सीमा रक्खी है, और हिंदुओं को उसके पार उतरना हमने लिखा है; पर हिंदू शास्त्र अथवा हिंदू राजा सिंधु के पश्चिमवाली जातों को इस पार उतरने से कभी नहीं रोक सके॥ निश्चय है जब कि हम ऐसा बिचारते हैं कि हिंदू तातार देश से आये हैं तो हम ऐसा भी अनुमान करसकते हैं कि और जातें भी जो उस देश में उपजी हैं हिन्दुस्थान में आई होगीं, और हम को यह बात भी प्रत्यक्ष

दिखाई देती है कि बऊत काल नहीं ऊआ कि हिंदू सिंधु पार जाया करते थे, और अपने बैरियों से पलटा लेते थे सिंधु पार जाने या समुद्र में जाने की आन जो हिंदू मानते हैं यह नई ही रीत है ॥ इस समय से पूर्व जब तक कि ब्राह्मणों ने क्षत्रियों को न जीता और बुध के मत को हिंदुस्थान में से न निकाला था, तब तक हिंदू लोग बड़े बीर गिने जाते थे, और बऊधा युद्ध के लिये चढ़ाई करते थे ॥ संभव होता है कि वह यही काल था कि जिस में उन्होंने अटक पार होकर तातार देश पर चढ़ाई की थी और समुद्र उतर कर पूरबी द्वीपों में भी जाकर अपना मत फैलाया था, और यह बात थोड़े कालकी है कि हिंदू लोग औरोंका मत बुराजान निरुद्योगी और आलस्यी हो गये हैं और इस भय से निजदेश छोड़ परदेश नहीं जाते कि कदाचित् और मत वालों से मिलकर हमारी जाति न जाती रहे॥

यह जाना जाता है कि वे लोग जो हिंदुस्थान की दक्खन ओर को बसते थे और फारस के राजाओं ने उन्हें कभी नहीं जीता था, उन लोगों का रंग काला था॥ और जीवों को वे कभी नहीं मारते थे केवल उन्हीं अनाजों और फलों को जो जो धरती से उपजते थे खाते थे; और बहुतकर के वे चांवल खाकर जीते थे; और जो मनुष्य उन में बहुत मांदा होता था, और उस के जीने की आस नहीं रहती थी तो वे उसको मरने के समय गंगा तीर लेजाते थे; और देशी रुई से कपड़ा भी बनाते थे॥ ये हिंदुस्थानी लोग जिन का ऊपर बखान कियागया निस्संदेह गंगा के ढबों के रहनेवाले थे; और इस से हमको यह बात प्रत्यक्ष होती है कि प्रधान२ बातें जिनसे अब इन दिनों में हिंदुस्थानी लोग पहचाने जाते हैं तेईस सौ बरस हुये उस समय में भी ये बातें जैसी अब प्रसिद्ध हैं वैसी ही थीं॥

ऐसा जाना जाता है कि ईसाई संवत् के छः सौ बरस पहले या दारा के आने से थोड़े ही दिनों पूर्व एक नई जाति ने तातार देश से सिंधु नदी उतर कर हिंदुस्थान में बहुतसी जय पाई थीं, उसी समय में कदाचित् उसी से एक और झुंड तातार के लोगों का यूरप के उत्तर की ओर जाकर स्कैंडि-नेविया में बसा॥ जो हम ऐसा ठहरावें कि ये दोनों

एक ही काल में देश त्यागी एक ही देश से पूरब पच्छम को गये थे तो ऐसा संभव हो सकता है; क्योंकि उनके एकसे लच्छन और चलन जो स्कैंडिनेविया के लोगों और तातारी लोगों में जो हिंदुस्थान में बसते हैं पाये जाते हैं; जब कि वे लोग शिक्षा रहित थे उस काल में वहां सती होती थी इसरीत से भी अधिक आपस में मिलते हैं; और कहा जाता है कि पूर्बकाल स्त्री के सती होने की रीत यूरप के उत्तर की ओर मूरखता के समय में थी और हम बहुत करके ऐसा बिचार करते हैं कि इस रीत को हिन्दुस्थान में तातारी लोगों ने चलाया पर यह बिचार केवल अनुमान से कहते हैं॥

तातार के देश त्यागी तक्षक अर्थात् सांप के बंश में कहलाते थे, क्योंकि ऐसा बिचार किया गया है कि उन के बंश में सबों के एक सांप का सा चिन्ह होता था; और वही चिन्ह उन की पहचान थी॥ संभव होता है कि वे अपने राजा शेषनाग की सहायता और मार्ग बताने के द्वारा हिन्दुस्थान के उत्तरवाले-देशों में जीतते हुये बढ़ आये, और होले होले उन्हीं जातों में जो उन से पहले आनकर वहां बसी थीं मिल झुल गये; और उन्होंने मगधदेश के राज को जीतकर अपने आधीन किया और मगधदेश में दस पीढी लों नाग बंश ही का राजा राज करता रहा;

ऐसा जाना जाता है कि वे बुध ही के मत को मानते थे; शास्त्रों में ऐसा लिखा है कि हिंदुओं ने उन राजाओं से कई बेर बड़ा बड़ा युद्ध किया जो नागदेवता और असुर बोले जाते हैं॥ राजा महानंद मगधवाले नाग बंश में से था जिस का हम बिचार कर सकते हैं कि जब सिकंदर ने हिंदुस्थान पर चढ़ाई की थी उस समय में वह पाटलिपुत्र का राजा था और यूनान के इतिहासवेत्ताओं ने उसको पूरब देश का राजा करके बखाना है॥

यूरपीय इतिहासवेत्ता ऐसा लिखते हैं कि उसी समय के लग भग जब कि दारा ने हिंदुस्थान पर चढ़ाई की थी तब और कोई ऐसा कहते हैं कि उसके सौ बरस पीछे गौतम ने बौद्ध मत को हिन्दुस्थान में पक्का और दृढ़ किया॥ ऐसा संभव होता है कि यदुकुल की छप्पन जातें बरन सारे चंद्रबंशी अत्यंत प्राचीन समयों से बौद्ध मत को मानते चले आते थे, जो कदाचित् वेदों के अनुसार था और ब्राह्मणों और पुरानों के मत जो बौद्ध मत की अपेक्षा नवीन हैं उससे नहीं मिलते थे॥ गौतम जिस को सातवां बुद्ध कहते हैं जाना जाता है, कि उसने बुद्ध मत के बचनों को पक्का और दृढ़ किया॥ वह मगध देश में उपजा था जो बिहार की दक्खन दिशा को है॥ और वह बज़त करके गया में रहता था॥

वह पांच सौ चालीस बरस आगे ईसाई सम्वत् के जन्मा था, पर तिब्बत वालों के इतिहासों में जो बौद्ध मत को मानते हैं, ऐसा लिखता है कि वह संबत् ईसाई के चार सौ तीस बरस पहले जन्मा था॥ उस के जनम स्थान का विषय भी जुदी जुदी भांत से बरनन करते हैं॥ चीनवाले, स्यामवाले, और जापानवाले और और पूरबी जातें जो बुध के मत को मानते हैं ऐसा कहते हैं कि उसने मगध देश में जन्म लिया था॥ और ब्रह्मा के वकील जो श्री युत लार्ड विलियम बेंटिक साहिब को भेट देने के लिये हिंदुस्थान के उत्तरवाले देशोंमें आये थे वे बुद्ध गया में अपने गोत्र जनक की पूजा के लिये ठहरे थे॥ पर तिब्बतवालों के इतिहासों में ऐसा लिखा है कि वह कपीलावस्थ में उपजा था जो कौसल अर्थात् अयोध्या एक नगर है और उसके जनम स्थानके विषय जो लोग कई प्रकार से बरनन करते हैं यह भेद भी एक हो सकता है; जब कि हम ऐसा बिचार करते हैं कि गौतम के उत्पन्न होने के समय सारे उत्तरा खंड के देश मगध के राज में थे और अयोध्या का देश थोड़ासा जो सूरज बंशियों का था वह भी मगध देश ही के राज में मिला हुआ था इसलिये इतनाही कहना बहुत है कि गौतम मगध ही के देश में उत्पन्न भया था और बुध का नाम जिसने चन्द्र बंश को बनाया प्रतिष्टा के लिये दिया

गया था॥ जिस समय कि वह उपजा था उस समय बुद्ध का मत सारे उत्तर हिन्दुस्थान में अधिक करके फैला हुआ था, और ब्राह्मणों का मत जो अब सारी हिंदुस्थान में फैला हुआ है केवल छोटे से देश कन्नोज में था॥ बौद्ध मत के फैल जाने का कारण यह है कि इलोरा की गुफा केवल बुध ही की पूजाके लिये बनाई गई थीं उन गुफाओं को केवल महाबली औ द्रव्यमान बौद्ध मतावलंबी राजाओंने बनाया था, पर अब हम ऐसा जान सकते हैं कि इस मत के चिन्हों के बचे रहने के लिये बड़ा भारी पहाड़ खोखला किया गया था, और बड़े परिश्रम से मंदर बनाये गये थे॥ और उन राजाओंने जो बुध के मत पर चलते थे बुध की मूरत पहाड़ के बीचों बीच खुदवाई थी पिछले समयमें जब कि बिष्णु और शिव के मतने बुध के मत को हिंदुस्थान से मिटाया, और उस धर्म के माननेवाले प्रथ्वी पर बहुत बलवान् हो गये, तब वे मन्दिर बिशेष करके ब्राह्मणों की पूजा के लिये ठहरे॥ इसी कारण अबके देवताओं की मूरतें बुध की प्रतिमाओं के पास बनी हैं॥ पर वे लोग जिन्हों ने उन गुफाओं को अच्छी भांति देखा है वे ऐसा कहते हैं कि बुध की प्रतिमाओं से देवताओं की प्रतिमा अधिक सुन्दर और सुडौल खोदी गई हैं, और इस से ऐसा समझ पड़ता है कि वे बुध की

प्रतिमाओं के खुदने के पीछे बनी हैं, जिस समय में संगतराशी की विद्या बहुत ही सुधर गई थी, इसलिये जाना जाता है कि ये मन्दिर बुध के मतावलंबी लोगोंने बनाये होंगे॥

बौद्ध मतवालों की रीत ब्रह्मनों की रीत से ऐसी विरुद्ध थी कि बाल्मीक ने रामायण में लिखा है कि बौद्ध मतवाले राक्षसों के समान हैं तो उस के लिखने से ऐसा जाना जाता है कि बहुधा उन में आपस में बड़ा बैर था बौद्ध मतावलंबी ब्राह्मनों के देवताओं को नहीं मानते थे, और वेदों के मत पर बहुत चलते थे और उन में कुछ जातों का बिचार नहीं होता था, और उन में पुजारीपना बापोती अर्थात् पीढी नहीं होता था और वस्तुता ऐसा समझ में आता है कि आगे प्राचीन समयों में ब्राह्मणों में भी इसी रीत का चलन था, और यह भी संभव होता है कि बिस्वामित्र पहले शूद्र था और पीछे से ब्राह्मण बन गया; बौद्ध मत के पुजारियों ने एक अलग ही जात बनाई थी जिसमें ग्रहस्थी लोग मिल सकते थे और उस में जती रहने का बचन करते थे, परंतु विपरीत इस के ब्राह्मनों में यह रीत नहीं थी और दूसरी जात उन्हीं में नहीं मिल सकती थी और उन में जनेऊ लेने की भांति बिवाह करना भी जोग्य था, और प्रत्येक ब्राह्मण के एक पुत्र का होना उसकी

क्रिया कर्म के लिये बहुत ही आवश्यक था ऐसा बड़े बिचार और प्रभेद होने के कारण कुछ आश्चर्य की बात नहीं कि ब्राह्मण बौद्ध मतवालों से अधिक बैर बिरोध करते थे जितना बैर कि वे क्षत्रियों में रखते थे जो कि उन के प्राचीन बैरी थे और कदाचित् यह बैर इसलिये बढ़ गया था कि वे बल हीन हो गये थे और बौद्ध राजाओं का अधिकार बढ़ गया था जिन का राज सारी उत्तर हिंदुस्थान में फैल गया था॥ और ऐसा जाना जाता है कि जब से गौतम उत्पन्न हुआ तब से नये सिरे से इन दोनों जातों में फिर बिरुद्ध हो गया बौद्ध धर्मवालों की अपेक्षा ब्राह्मणोंका धर्म उनकी भड़कीली रीतों के कारण अज्ञान लोग बहुत मानते थे, बहुधा ब्राह्मणों के मत में लोग नित २ आते गये यहां तक कि ब्राह्मण जथा बांध कर इस बड़े झगड़े के लिये बहुत दृढ़ हो गये और बहुत सा कटक बन गया तब उन्होंने बौद्ध मत के लोगों को हिंदु-स्थान से निकाल दिया और आप उस के अधि-पति भये॥

हम ने ऊपर लिखा था कि सिकंदर के दो सौ बरस पहले फारस के दारा नाम राजा नें हिंदुस्थान के एक बड़े भाग को फारस के राज में मिलाया था और हिंदुस्थानी प्रजा पर बड़ा भारी कर लगाया पर

हम को यह बात निश्चय नहीं हो सकती है कि जब फारस का राज्य और पूरब के राज्यों की भांति राजाओं के सुख भोग में रहने से बिगड़ा तब भी यह दूर देश उस में मिला रहा या नहीं; पर यह बात कई प्रकार से निश्चय हो सकती है कि जब तक सिकंदर मेसीडन के राजा ने जो युद्ध करने के उपायों में बहुत ज्ञानी था फारस के राज को जीता था तब लग वह एक भाग फारस के राज का रहा था॥ सिकंदर यूनानियों की थोड़ीसी सेनासे जिसको उसके बाप फैलकूसने लड़ने की विद्या सिखाई थी, और अपने हाथों उन्हें पक्का किया था, फारस के राज्य को बिगाड़कर अपने कटक समेत सिंधु नदी के तट पर आया॥ और कोई २ इतिहासवेत्ता ऐसा कहते हैं कि वह केवल हिंदुस्थान के उन्हीं सूबो के जीतने के लिये आया था जो पहले फारस के राज में थे और दारा के मरने के पीछे स्वाधीन हो गये थे॥ परंतु सिकंदर इस छल से अटक पार नहीं उतरा था वरन उसकी सामर्थ प्राचीन राजाओं की अपेक्षा अधिक चढ़ाइयां करने की थी और अपनी सेना को लेजाकर सारे जगत को जीतने की अभिलाषा थी और यद्यपि फारस के राजाओं का हिंदुस्थान में एक चप्पा भर भी राज न होता तो भी वह हिंदुस्थान पर चढ़ाई करता॥ तीन

बरस तक उसकी सेना ने लड़ाई और कूंच में बड़े२ दुख उठाये थे और पहाड़ों में जो बरफ में ढके हुये रहते थे उन्हों ने जाड़ों की लड़ाइयों में बड़े बड़े कष्ट सहे थे; सिकंदर ने उनकी महनत के लिये हिंदुस्थान की लूट में से उन को इनाम देने का बचन किया था निदान काबुल को जो हिंदुस्थान का द्वार प्रसिद्ध है जीत लिया, और सिंधु के वार पार वाले राजाओं को आधीन होने के लिये आज्ञा दी और एक थोडेसे कटक को सिंधु के पुल बांधने के लिये भेजा और आप बीच के देशों को जीतनेमें लगा॥ सिंध के ऊपर की ओर के पहाड़ी लोग बीरता में कुछ कम न थे परंतु सिकंदर के प्राचीन जोधाओं के हुनर और तेह के आगे कोई रोक टोक न कर सका॥ और सिकंदर ने सबको सर किया निदान सिकंदर सिंधु के किनारे पहुंचा, और नावों का एक समूह बनाकर अटक तक पहुंच गया जहां कि पुल को बनाते हुए देखकर बिचार किया कि हिंदुस्थान में उसी स्थान से प्रवेश करें॥ जहां से कि आदि से राजाओं ने हिंदुस्थान पर चढ़ाईयां की हैं॥ पर अंगरेज़ जो जहाजों के द्वारा बड़ी सामर्थ रखते है, जहाजों में बैठकर हिंदुस्थान में आए और पश्चिम का मार्ग छोड़ कर पूरब ओर से हिंदुस्थान को जय करने लगे॥ और सिकंदर जब कि सिंधु पार उतरा

उन दिनों तीस बरस का था, उसने ऐसी कभी कोई लड़ाई न लड़ी जिस में वह न जीता हो, और कभी ऐसे किसी देश में प्रवेश न किया जिस को उसने अपने अधिकार में न किया हो, निदान उसने तरुणाई की उमंग में अटक का पुल उतरके एक लाख बीस सहस्र मनुष्यों की सेना से हिंदुस्थान पर चढ़ाई की, और उस समय सिंध की पूरब ओर के देशों में तीन राजाओं का राज था॥ पहले का नाम अबिसेरीज़ जिस का राज पहाड़ों में था, और संभव होता है कि वह कश्मीर होय; दूसरा टैकसीलिज़ सिंधु और जेलम नदी के मध्य देशों में राज करता था; और तीसरा पोरस संभव होता है कि वह पुरु था जो पांडवों के बंश में होगा जिसका राज जेलम नदी से लेकर पूरब को हस्तिनापुरलों चला गया था॥ सिकंदर के इतिहासवेत्ताओंने दो राजाओं को पोरस के नाम से बखाना है; जिन में से एक हस्तिनापुर में रहता था, और दूसरा पंजाब में राज करता था, ये दोनों चन्द्र बंशियोंके कुल में थे॥ अबिसेरीज़ने अपने भाई को अच्छी२ भेट देकर सिकंदर के प्रसन्न करने को भेजा; और टैकसीलिज़ने सिकंदर से बड़ी प्रीत से मिलाप किया, उसको उसके कटक सहित अपनी टैकसला राजधानी में लेगया, जहां सिकंदर ने अपने थके थकाये सिपाहियों को

छोड़ दिया, और थोड़ा सा कटक झगड़ा रखला रोकने के लिये रख गया और आप थोड़ीसी छटी ऊई सेना साथ लेकर जेलम नदी की ओर चला जो पंजाब में बहती है॥

उसी समय चोमासा भी लगा जेलम भी ऐसी चढ़ी कि आध कोस का फाट हो गया और पानी बड़े बेग से बहता था; राजा पोरस अपने कटक समेत उस नदी के दूसरे किनारे पड़ा था, और उसने निश्चय किया कि अपने बैरी का साम्हना करके उसे आगे न बढ़ने देना॥ उसका कटक एक बड़े प्रबंध से जमा ऊआ था और कहीं से सिकंदर को उतरने की जगह न रक्खी थी और सिकंदर ने भी जाना कि लड़ाई में नदी का पार होना और युद्धों की अपेक्षा बऊत कठिन है; राजा पोरस ने हाथियों की एक बड़ी लंबी बाड़ नदी के साम्हने लड़ाई के लिये खड़ी की थी और कोई नाका बेचोकसी न छोड़ा था ऐसा कि पोरस के सब प्रकार की चोकसी थी, और जब कि सिकंदर नदी पार ऊआ चाहता था तभी वे साम्हना करते थे निदान सिकंदर ने निश्चय जाना कि बल से पार उतरना बऊत कठिन है, क्योंकि उसके सवार हाथियों के साम्हने पंक्ति न बांध सकते थे इसलिये उसने अपने मन में यह बात ठानी कि इहां से नदी पार उतरें जब उसने जाना कि

कटक के पड़ाव से ऊपर की ओर दस कोस के लगभग एक दीप था, और भी एक अंधेरी रात ऊई जिसमें आंधी चलती और मेह बरसता था, और बिजली कड़कती थी इसलिये कुछ शब्द सुन न पड़ता था सिकंदर ने समा पाकर ग्यारह सहस्र प्राचीन जोधाओं को अपने संग ले उस दीप की ओर चला और रातों रात जेलम नदी पार होगया और दिन निकलते उस नदी के पूरबी किनारे पर पऊंचकर पोरस के हरावल के भाग को हटा दिया॥ इस बात के समाचार सुनतेही पोरस हिंदुओं के राजा ने अपने बेटे को थोड़ासा कटक देकर अपने बैरी को हटा देने के लिये भेजा और बिचार किया कि शत्रु की सेना में से केवल झुंड अलग होकर चला आता होगा॥ क्रेटरस नाम एक सेनापति ने उस स्थान पर सेना को बाड़ खड़ी की जहां कि सिकन्दर का डेरा पहले से खड़ा ऊआ था, जिस से पोरस को निश्चय हुआ कि केवल थोड़ेहीसे मनुष्य नदी पार हुवे होंगे॥ निदान थोड़ी देर पीछे पोरस का पुत्र शीघ्र मारा गया और कटक हार गया॥ राजा पोरस इस बात का ब्योरा और सिकंदर के आप नदी पार उतरने का समाचार सुनते ही उसका साम्हना करने को आप चला और चार सहस्र घोड़े और तीस सहस्र पैदल और बहुतेरे हाथी

और गाड़ियां संग लाया॥ संभव है कि वे सबके सब क्षत्रियों के बंश से थे जो कि बड़े बीर सिपाहीपने का काम करते थे उसने बड़े हुनर से अपनी लड़ाई की बाड़ खड़ी की थी॥ सिकंदर के संग जैसा हम ऊपर लिख चुके हैं केवल ग्यारह सहस्र सिपाही थे, परंतु वे सब प्राचीन जोधा थे और जिनके साथ सिकंदर सा सेनापति होय उनको जय करना बड़ा कठिन है॥ लड़ाई बहुत बेर तक रही, और आपस में दोनों ओर की सेना भली लड़ी पोरस की सेना ने बड़ी बीरता की पर सिकंदर के सवारों के आगे कुछ उनका बस न चल सका; निदान तीसरे पहर के समय हिंदू भाग निकले, पर राजा पोरस एक बड़े हाथी पर चढ़ाहुआ लड़ता रहा, सिकन्दरने उसका हरमांपन देख कर आश्चर्य किया और उसका जीव बचाने के लिये उसे कहला भेजा कि जो वह हमारे पास चला आवे तो उसके सनमान और प्रतिष्ठा में कुछ अंतर न आवेगा निदान राजा पोरस इस बात पर प्रसन्न हुआ और सिकंदर के पास निडर चला आया; जब सिकंदर ने उस से पूछा कि हम तुम्हारे साथ क्या करें तब उसने निर्भय होकर उत्तर दिया कि जैसा राजाओं को चाहिये सिकन्दर उसकी निडरता और कुलीनता देख कर बहुत प्रसन्न हुआ और उसको स्वाधीन कर दिया,

और उसके राज्य के साथ थोड़ा और भी देश अपनी ओर से उसको दिया॥ पोरसने सिकन्दर की उदारता का बड़ा भला माना और सदा उसका सच्चा मित्र बना रहा॥ उस समय कलजुग के आरंभ में हिंदुओं का वंश अब की अपेक्षा और भांति था पोरस की सी शूरताई और भलाई इस समय में कहां है॥

सिकन्दर ने आगे के लिये उस नदी के मार्ग को अपने ही अधिकार में रक्खा और उसके दोनों ओर एक एक नगर बनाने की आज्ञा की और जेलम और चुनाब नदी के बीच का देश जो बहुत ही बसता था, उस में तीस पैंतीस नगर से कमती होंगे पोरस के अधिकार में रक्खे तिस पीछे सिकन्दर चुनाब और रावी के पार उतरा; वहां उसने कथियों की खबर सुनी संभव होता है कि वे तातार के रहनेवाले होंगे और हिंदुस्थान में आबसे होंगे ये मनुष्य संगलानाम जगह पर सिकन्दर से युद्ध के लिये उपस्थित हुए पर सिकंदर ने बड़ी मारधाड़ कर पीछे उनको भी जीत लिया उनमें से सोलह सहस्र तो मारे गये और सत्तर सहस्र को पकड़ कैद किया और रहे सहे सब पहाड़ों में भाग गये॥

सिकंदर वहां से चलकर सतलज नदी के किनारे पर पहुंचा जो अब सिक्खों और अंग्रेजों के राज की सीमा है वहां जाकर उसने मगध देश के राजा

और एक बेड़ा जहाजों का बनाके नियारकस को सौंप उस जगह लों जहां कि फरात नदी समुद्र से मिलती है जाने की आज्ञा की ॥ यह जलयात्रा जो इस समय में प्रत्येक जहाजवाला सहज और बेग कर सकता है सो उस काल में एक बड़ा कठिन काम गिना जाता था ॥ नियारकस अपने काम में भरपूर कृतार्थ हुआ, और जो सिकन्दर जीता रहता तो निस्संदेह इस जलयात्रा के द्वारा बड़े बड़े दूर दूर देशों में ब्योपार फैलाता; पर हिंदुस्थान से लौट जाने से दो बरस पीछे बाबुल की दलदलों में उसको तप आई और बत्तीस बरस की अवस्था में मरगया॥ यह बात निस्संदेह है कि उसकी इच्छा यह थी कि और नया कटक लेके हिंदुस्थानपर फिर चढ़ाई करूं और संभव है कि जो वह ऐसा करता तो संपूरण हिंदुस्थान को अपने बस में कर लेता क्योंकि पच्छिम में नदी और पहाड़ों के देशों को जीत कर हिंदुस्थान के देशों को जो कि मैदान है जीतना कुछ कठिन नथा और सिवाय इसके जब कि सूरवीर कटक राजा पोरस का उसको अपने देश में प्रवेश करने स न रोक सका तो निस्संदेह पूरब की ओर के निर्बल राजा उसे क्या रोक सकते ॥ यद्यपि वह हिंदुस्थान में कुछ बहुत न ठहरा था पर अपने पीछे आनेवाले राजाओं के लिये हिंदुस्थान में ठहरने

का रसता खोल गया ॥ और यद्यपि बुखारा के यूनानी राजाओं का वृत्तांत बहुत अच्छी भांति नहीं जाना गया है तो भी यह बहुत निश्चय है कि वे उत्तर हिंदुस्थान में कैएक अच्छे अच्छे सूबों को अपने राज में लाये थे ॥ वे लोग जो सिकंदर के संग हिंदुस्थान में आये थे उन्होंने उस समय के हिंदुस्थानियों की रीत भांति लिखी हैं और नीचे लिखी हुई संक्षेप बातों से उन लोगों को जो हिंदु-स्थान के ब्योरे को जानते हैं यह बात जानी जायगी कि हिंदुस्थान के प्राचीन रहनेवालों की रीत भांति इस समय के रहनेवालों की रीत से कितनी मिलती है ॥ पहले हिंदुस्थानियों का शरीर कृष होता था, दूसरे केवल अन्न और तरकारी खाकर रहते थे; तीसरे उनकी नाना प्रकार की जात होती थीं, और सदा अपने घरानों में एक ही वृत्ति रखते थे; चौथे उनका बिवाह सात ही बरस की अवस्था में हो जाता था, और पर जात से बिवाह करने का निषेध था; पांचवे वहां के लोग बाले कानोमें पहनते थे और उनके जूते और घूंघट नाना रंग के होते थे और अपने सिर और कंधों को ढके रखते थे; छटे अपने मस्तक पर भांति भांति के टीके लगाते थे; सातवें यह रीत थी कि केवल बड़े ही आदमी छाता लगाते थे; आठवें दुहैरी तलवारें और कमठे

रखते थे; नवें हाथियों को उस रीत से पकड़ते थे जिस रीत से इन दिनों में पकड़ते हैं; दसवें वे निपट खेत रुई के कपड़े बुनते थे; ग्यारहवें चैंटी बड़ी २ होती थीं परंतु इतिहासवेत्ताओं ने इस बात में कुछ अधिक करके लिखा है कदाचित् वे दीमक को कहते हों; बारहवें बड़ी २ नदियों के तीर पर काठ के घर बनाके रहते थे, और जब नदी चढ़ती थीं तब ऊपर को हटा लेते थे; तेरहवें वहां ताड़ के पेड़ भी होते थे; चौधवें बड़ के पेड़ बहुधा होते थे जिन की छायामें बैरागी बैठे रहते थे॥

इन बातों से निश्चय होता है कि जो रीत अब हिंदुओं में हैं वे उन रीतों से जो सिकन्दर के समय में जिसको दो सहस्र एक सौ बरस बीते थे बहुत बिपरीत नहीं हैं और यह बात भी लिखने के योग्य है कि जो सिकन्दर का नाम हिंदुओं के किसी बृत्तांत में नहीं पाया जाता है इससे यह निकलता है कि हिंदुओं के ग्रंथ जो हमारे पास हैं वे पूरे नहीं हैं परंतु मुसलमानों ने सिकन्दर के नाम को जिसको वे एक बड़ा सूरवीर जानते हैं हिंदुस्थान में फैलाया था जब कि मुसलमानों ने समुद्र पार के देशों को जीता तब उसका नाम वहां भी फैलाया और जावा और सुमात्रा के रहनेवाले जो यहां से बहुत दूर हैं अबलों महाबली सिकंदर की चढ़ाइयों की जीत बनाकर साखा गाते हैं॥

चाथा अध्याय ॥

महानंद—चंद्रगुप्त—मोरी कुल—सैल्यूकस और मेगस्थनीज़—बैकद्रिया के राज्य—मगध के राजा—अग्निकुल—ब्राह्मणों की बड़ाई का काल—प्रमरा के राज्य का बिस्तार—सिंगल दीप में बुद्ध के मतावलंबी लोगों की गुफा—इलोरा ॥

जब कि सिकंदर ने हिंदुस्थान पर चढ़ाई की तब महानन्द जिसको प्रमरा की जात और तक्षक के वंश में से कहते हैं मगध देश के राज्य पर पाटलिपुत्र में राज करता था ॥ और बर्णन करते हैं कि वह बीस सहस्र सवार और दो लाख पैदल बहुतेरे हाथी आदि अपने संग लेकर सिकंदर का साम्हना करने को उपस्थित हुआ था; पर सिकंदर को जैसा कि ऊपर लिखा गया है अपनी सेना के फिरजाने के कारण सतलज पर से अबस होकर उलटा फिरना पड़ा ॥

महानन्द को उस के प्रधान राजमंत्री ने मरवा डाला और कहते हैं कि महानन्द के पीछे उसके आठ बेटों ने बारह बरस लों अर्थात् समबत् ईसाई

से तीन सै। पंद्रह बरस पहले तक मिल झुल के राज किया; उनमें से एक बेटे का नाम चन्द्रगुप्त था जो एक नायन के पेट से था; यद्यपि चन्द्रगुप्त बहुत ज्ञानी था परंतु उसके और भाई उसको तुच्छ जानते थे और कोई २ ऐसा कहते हैं कि चन्द्रगुप्त को उसके भाइयों ने पाटलिपुत्र में से निकाल दिया था, और वह हिंदुस्थान के देशों में दुःखी होकर फिरता रहा निदान वहां से फिरकर चन्द्रगुप्त अपने मित्र और मंत्री चाणक्य की सहायता से जिसने राजकुंवारों को मार डाला था राजसिंहासन पर बैठा इस बात को और इतिहासवेत्ता नाना प्रकार से बरनन करते हैं॥ यद्यपि सब ग्रंथों की बातों का तत्व एक ही है पर उस समय के सब इतिहासवेत्ता आपस में इकट्ठे होके इस बात को बरनन करते हैं कि चाणक्य को ऐसे भारी पाप करने से इतना पश्चात्ताप हुआ था कि उसके प्रायश्चित्त में उसने बहुत ही तपस्या की और उसका प्रायश्चित्त उस समय के वृत्तांतों में बहुत ही प्रसिद्ध होकर कथा कहानियों में लिखा गया और श्लोकों में एक नवीन विषय ठहरा और कवीश्वरों ने अपनी कविता की सुन्दरता के लिये इस बात में देवताओं का संबाद डाला, और लिखा कि चाणक्य के प्रायश्चित्त की चर्चा स्वर्ग में राजा इन्द्र की सभा में हुई जहां

कि देवताओं ने इस पाप का प्रायश्चित्त ठहराया और एक कौवे ने चाणक्य से इस बात को कहा ॥

कहते हैं कि चन्द्रगुप्त ने एक मोरी नाम नया कुल बनाया पर इस बात को उस बात से कि वह महानन्द का बेटा था मिलाना और एक करना बहुत कठिन है ॥ चन्द्रगुप्त ने मोरी के कुल को बनाया हो या न बनाया हो पर बहुतसे इतिहासवेत्ता इस बात पर एक हैं कि वह मोरी के कुल में था इसलिये इस में संदेह थोड़ा हो सकता है ॥ पुराणों में लिखा है कि चन्द्रगुप्त शेष नाग की संतान में से था जो कि संबत् ईसाई से छः सौ या सात सौ बरस पहले तक्षक बंश को सिंधु पार से हिंदुस्थान में लाया था जैसा हम ऊपर लिख आये हैं। जाना जाता है कि चन्द्रगुप्त बड़ा ज्ञानी था और उसने अपने राज को पच्छिम दिशा की उस चढ़ाई से बचा रक्खा जिस चढ़ाई का सिकंदर ने केवल आरंभ ही किया था ॥

सिकन्दर के मरने के पीछे उसके मित्रों ने उसके राज्य को आपस में बांटलिया, सैल्यूकस को बाबुल का सूबा मिला जिस में वे सारे देश थे जो सिंधु नदी के निकट बसते हैं; सिकन्दर के सेनापतियों में सैल्यूकस बड़ा उद्योगी था और उसने हिंदुस्थान पर फिर चढ़ाई करने का उद्योग किया जिस में कि सिकन्दर का भी कुछ बस न चला था पर ऐसा कहते हैं

कि हिंदुस्थान में आते समय चन्द्रगुप्त के कटक ने उसका साम्हना किया और चन्द्रगुप्त ने भी उस नये बैरी से अपने देश की सीमा पर लड़ने का उद्योग किया था ॥ इतिहासवेत्ता इस चढ़ाई को कई प्रकार से लिखते हैं यूनानियों ने ऐसा लिखा है कि सैल्यूकस की जीत ज़ई; पर इस बात में इसलिये कुछ संदेह पड़ता है कि उसने हिंदू राजाओं से मिलाप किया और उसको सारे वे देश दे दिये जिस को यूनानी सिंधु के पूरब ओर अपने राज में लाये थे ॥ और उसके पलटे में चन्द्रगुप्त से बरसोड़ी पचास हाथी अथवा कर अथवा भेंट की रीत से लेने ठहराये ॥ सैल्यूकस ने अपनी बेटी का बिवाह चन्द्र-गुप्त के संग करदिया और बाबुल औ पाटलिपुत्र के राजाओं में प्रीत और मिलाप रहने के लिये मेग-स्थनीज़ को भेजा कि वह उसकी ओर से दूत की भांति चन्द्रगुप्त की सभा में रहा करे । मेगस्थनीज़ से पुराने इतिहासवेत्ताओंने हिंदुस्थान का बज़त ब्योरा पाया है यद्यपि वह कभी कभी ऐसी बातें लिखता है कि जिन पर पतयारा न हो सके पर तो भी हिंदुस्थान के बिषय में उसका बखान बज़त ठीक ठीक है और उसकी बज़तेरी बातें पिछले लोगों के बचन से प्रमाण होती है, पर बड़े पछताव की बात है कि उसका प्राचीन दिनवारी समाचार पत्र खो

गया है और उस में से केवल वेही पत्र हमारे हाथ लगे हैं जो कि पिछले इतिहासवेत्ताओं ने उतार लिये थे॥

अत्यंत विश्वास करने योग्य जो लेख हमें मिल सकते हैं उन से जाना जाता है कि चन्द्रगुप्त ने चोबीस बरस राज्य किया॥ और वह ईसवी संवत् के दो सौ बानवे बरस पहले मरा, और उसके पीछे उसका बेटा मित्रगुप्त राजगद्दी पर बैठा, जिसके पास सैल्यू-कस ने एक और दूत अपना भेजा कि दोनों ओर संबंधना रहे॥ सैल्यूकस के कुटुंब में उसको छोड़कर कोई उसके समान ज्ञानी मनुष्य न उत्पन्न भया॥ उसके पीछे जो गद्दी पर बैठे झट बिगड़ गये जैसे पूरब के राजा बिगड़ जाते हैं, जो बिना परिश्रम बड़ा राज्य और धन पाते हैं॥ सैल्यूकस के गद्दी पर बैठने से एक सौ बरस पीछे ऐंटयकस ने सैल्यूकस के राज्य को उलटा दिया; परंतु कहते हैं कि ऐंटयकस ने चन्द्र गुप्त के पोते सोफैगेनीज़ से जिसका नाम हिंदुओं की पोथियों में किसी नाम से नहीं मिल सकता है वचन किया कि उसी वचन के अनुसार हिंदुस्थान के राजा ने बुखारा के भूपति को हाथियों के भिन्न कर में बरसवें दिन रुपये देने का भी बचन किया॥ यह यूनानियों का राज्य थोड़ेही काल पीछे नष्ट हो गया और बुखारा का एक नया राज्य बन गया जिसके

राजाओं ने हिंदुस्थान में सब यूनानियों की अपेक्षा दूर तक देश जीत लिये॥ हिंदुस्थान के पश्चिमी देशों में जो खूदते समय इन दिनों में सिक्के निकलते हैं उन से जाना जाता है कि वे राजा जो सिंधु नदी के पश्चिम के देशों में राज्य करते थे हिंदुस्थान के बीचों बीच तक अपनी सेना को लेगये थे उन कुलों ने कितना कितना राज्य किया और कौन किसके पीछे गद्दी पर बैठा यह जानना बहुत कठिन है; परंतु जो लेख हमारे पास हैं उन से इतना समझ पड़ता है कि बुखारा के तीन राज्य जो सिंधु के दोनों ओर थे, हो न हो वे एक ही काल में थे, परंतु उनके होने का प्रमाण और इतिहासों की संगति हम नहीं मिला सकते हैं॥ विष्णु पुराण और भागवत से ऐसा जान पड़ता है, कि हिंदुस्थान के एक भाग में यवन आठ राजा थे, संभव है कि यही बुखारा के राजाओं का भी वर्णन होय, जिन में बहुत नामी राज्य वह था जिस पर मेनांडर राज्य करता था जो प्राचीन कालके अत्यंत नामी राजाओं की गिनती में है उसका राज्य ईसवी संवत् के दो सौ एक बरस पहले था॥ यूकेटिडीज़ जो मेनांडर के पीछे गद्दी पर बैठा कहते हैं कि सिंधु को पूरब ओर पांच सहस्र नगर उसके आधीन थे इस बात पर बहुत बिश्वास हो नहीं सकता पर इस से यह निश्चय होता है कि चन्द्रगुप्त के

पीछे जो राजा हुए थे उन्होंने अपने को उन लोगों की चढ़ाईयों से जो कि पच्छम की ओर से आते थे बड़ी २ कठिनाई से बचाया॥ मिथिडेटिज़ पार्थिया के राजा ने यूक्रैडेटीज़ को हराया और हिंदुस्थान के जितने देश उसके पास थे उनको पार्थिया के राजा ने अपने आधीन करलिया कहते हैं कि उसने सिंधु से लेकर गंगा तक सब देशों को जीत लिया और पूर्वकाल का विषय संग्रह करनेवाले कहते हैं कि सिक्के जो आगरे उज्जैन और अजमेर में पाये गये हैं उनको मिथिडेटिज़ और उसकी गद्दी पर जो बैठे उन्होंने बनवाये थे यह बात बड़े अचंभे की है कि उन सिक्कों में से किसी पर नागरी अक्षर नहीं लिखे, इससे हम यह बात निकालते हैं कि वे वे राजा कि जिनका सिक्का और सूरत उनपर है सिंधु नदी के पच्छिम के देशों में राज्य करते होंगे॥

मगध के राजा जो कि हिंदुस्थान के उस भाग में राज करते थे जिसमें गंगा बहती है और जिनका राज्य कई पीढ़ियों में आठ सौ बरस तक रहा अर्थात् ईसवी संवत् के तीन सौ पचास बरस पहले से लेकर चार सौ पचास बरस पीछे तक होगा॥ वे हिंदुस्थान के राजाओं में बहुत बुद्धवान् थे और उनमें चन्द्रगुप्त की गद्दी पर बैठनेवाले शिरोमणि जान पड़ते हैं॥ यद्यपि बुखारा की ओर से लगातार चढ़ाइयां होती थीं

परंतु कहते हैं कि चन्द्रगुप्त की गद्दी पर बैठनेवालों के समय में देश ऐसा बसता था और प्रसन्न था कि पूर्वकाल में कभी ऐसा न हुआ था राजा और प्रजा सुखी थी॥ परस्पर ब्योपार अच्छी भांति करते थे, और बाहिर का ब्योपार भी बहुतायत से होता था॥ और बंगाले का सूबा जो कि समुद्र के तीर पर है उनके आधीन था इस कारण से निश्चय होता है कि वे समुद्र के मार्ग से उन सब देशों में जो कि हिंदु के समुद्र के आस पास थे ब्योपार करते होंगे॥ पाटलिपुत्र से सिंधु तक एक राजमार्ग बना था और हर मंजिल पर एक छोटासा मुनारा बनाहुआ था॥ पाटलिपुत्र से बरोच को जो बंबई के पास है एक और मार्ग जाता था, वे अपनी सामर्थ्य के अनुसार विद्या बढ़ाने के लिये परिश्रम करते और बहुत सूधी भाषा में पुस्तकें बनवा के सामान्य लोगों में विद्या फैलाने का उद्योग करते थे; और यह बात भी बर्णन करने योग्य है कि जिस समय में मगध के राजा साधारण भाषाओं के सुधारने में इतना परिश्रम करते थे तब निश्चय होता है कि उस काल में संस्कृत भाषा भी अत्यंत रूप से सुधरी हो॥

जिन दिनों में कि मगध के राजा अपने राज्य को बुखारा के नृपों की चढ़ाइयों से बचाते थे उस समय को पुस्तकों से जाना जाता है कि उन्हीं दिनों में मगध

के राजकुल में भी बिगाड़ था॥ उन चढ़ाइयों और घर के झगड़ों से उनकी सामर्थ घट गई, और उस समय में उनके देश और मतका प्रबंध बिगाड़ने के लिये अच्छा समय पाया॥ जान पड़ता है कि वे बुद्ध के मत पर चलते थे, जब तक कि उनको अधिकार रहा तब तक ब्राह्मण जो कनोज में अधिकार रखते थे हिंदुस्थान में अपना अधिकार न कर सके॥ और हम को यह भी जान पड़ता है कि उस काल में ईसवी संवत् के दो सौ एक बरस पूर्व ब्राह्मणों ने अग्निकुल की संतान को फिर बढ़ाया कि वे नास्तिकों अर्थात् बुद्ध-मतावलंबियों से लड़ें जो कि तक्षक कुलके थे और जिनका हम बर्णन कर चुके हैं॥ अग्निकुलवालों से हिंदुस्थान में एक ऐसा राज्य परिवर्तन हुआ जैसा कभी न भया था॥ ब्राह्मण संपूर्ण रूपसे हिंदुस्थान के राजा हो गये और दो सहस्र बरस से हिंदुओं के चित्त पर अधिकार रखते हैं॥ अग्निकुल की उत्पत्ति और उनकी जय का बर्णन ये दोनों अच्छी भांति नहीं जाने गये हैं॥ हिंदूशास्त्रों में लिखा है कि नास्तिकता और अज्ञानता धरती पर फैलगई थी; और धर्म पुस्तकें पांव तले खुंदगई थीं, और मनुष्य राक्षसों से महा दुःखी होगये थे ऐसे समय में बिश्वामित्र ने क्षत्रियों को फिर उत्पन्न करने का मन में बिचार किया॥ इस काम के लिये उसने आबू नाम पहाड़ की चोटी

को ठहराया जहां कि कई मुनि रहा करते थे, जो दूधी के समुद्र पर प्रार्थना करने गये, उन्होंने वहां विश्व करता को एक नाग पर, जो कि अनंत होने का चिन्ह है, सोते हुये देखा॥ वहां से उन्होंने अबू पहाड़ पर जाने और क्षत्रियों को फिर के उत्पन्न करने की आज्ञा पाई॥ वे इन्द्र, ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु और और देवताओं सहित उलटे फिर आये और अनल-कुंड को गंगा जल से पवित्र किया और अन्य संस्कार भी किये, उन चार देवताओं में से प्रत्येक ने एक एक मूरत बनाकर जलतेहुए कुंड में डाल दी और उनसे चार मनुष्य बनगये जो कि अग्निकुल के चार गोत्रों को अर्थात् प्रमरा, चोहान, सोलंकी और परिहार के जनक भये॥ दैत्य जो कि संभव बौद्ध होंगे उन रीतों को देख रहे थे और उन में से दो अग्निकुंड के पास पहुंच गये थे परंतु नवीन पुरुष उत्पन्न करने की रीतें पूरी हो चुकी थीं, और नवीन योद्धा नास्तिकों के साम्हने लड़ने को चले, और बड़ी लड़ाई होने लगी, दैत्यों के लोहू से और दैत्य उत्पन्न होते जाते थे, निदान उन चारों देवताओंने जो कि अग्निकुल के रक्षक थे उनके लोहू को पी लिया, और इस उपाय से उनकी बढ़वार रुक गई॥ जब कि दैत्य मारे गये तब प्रसन्नता के बाजों का शब्द आकाश तक पहुंचा और स्वर्ग से अमृत बरस ने लगा और

देवता बिमानों पर चढ़ चढ़ आकाश में फिरने लगे और जयसे अत्यंत प्रसन्न हुए॥

कवियोंने ब्राह्मणों और अग्निकुलवालों के जो कि ब्राह्मणों की ओर से बुद्ध मतवालों से लड़े थे, समाचार को इस रीति से कविता में लिखा है जैसा कि पहले वर्णन हो चुका है॥ ये अग्निकुलवाले प्रकृति वासी यहां के न थे, और न वे किसी और जाति से निकले थे जो कि पश्चिम की ओर से आ बसी थीं॥ यह संभव है कि ब्राह्मणों ने तक्षक कुल में से जो कि उस कालमें हिंदुस्थान के अधिपति थे बहुत लोगों को अपने मत में लाकर उनको इन लोगों से लड़ाने के लिये जो कि उनके मत में न थे उपस्थित किया होगा॥ और अनलकुंड में अग्निकुलवालों का दुबारा जन्म होना लिखा है इस से जाना जाता है कि हो न हो वहां कुछ मतकी पलटा पलटी हुई॥ अग्निकुलवालों की जो चार जाति हुईं, उन सब में प्रमरावाले अत्यंत पराक्रमी थे, उनका देश नर्बदा के पार तक था, और हिंदुस्थान का संपूर्ण मध्य और उत्तर का देश उन के अधिकार में था पच्छिम की ओर सिंधुनदी उनके देश की सीमा थी; वे दक्खन में अपनी सेना को लेगये थे, और जान पड़ता है कि निश्चय करके उन्होंने भी सब हिंदुओं से पहले नर्बदा के दक्खन को एक दृढ़ राज्य बनाया॥

हिंदुस्थान में सदा से यह बात प्रसिद्ध है कि बुद्धवालों से बहुतेरे धुंवाधार युद्धों के पीछे ब्राह्मणों का मत प्रबल हुआ॥ संभव है कि उन लड़ाइयों से अग्निकुलवालों की जीत से यह बात हो कि उन्होंने ब्राह्मणों की ओर होकर उन के तईं कनोज से बाहिर हिंदुस्थान की दक्षिण सीमा तक अपने अधिकार को फैलाने का बल दिया॥ उस दिन से आज तक मत विषय में ब्राह्मणों का अधिकार चला आता है; उन्होंने लोगों को अपनी इच्छा के अनुसार बना लिया और सब में अपनी जाति को बड़ा रक्खा है, और सब विद्याओं को अपने ही बसमें रखने से और लोगों को ऐसी दास पदवी में किया कि जिसमें साधारण लोग अज्ञानता के कारण आधीन रहते हैं॥

हम अभी उन मंदिरों का बर्णन करचुके हैं जिनको बुद्धमतवालोंने पहाड़ काटकर हिंदुस्थान में बनाये थे॥ जब कि ब्राह्मणों ने बौद्धों को हिंदुस्थान से निकाल दिया वे सिंगलद्वीप अर्थात् लंका में चले गये, तब बुद्धवाले जो ऐसी इमारतों से बहुत इच्छा रखते थे इसलिये उन्होंने सिंगलद्वीप में भी ऐसी एक इमारत बनाई जो कि सब पृथ्वी भर की इमारतों में बहुत बड़ी है॥ हमें ऐसा जान पड़ता है कि बुद्धवालों ने पहाड़ों को काटकर पास पास कई मंदिर बनाये

जिनमें सब से बड़ा मन्दिर ४६॥ गज लंबा और तीस गज चौड़ा और पंद्रह गज ऊंचा है; जिसमें बुद्ध की मूरत दस गज लंबी लिटाई हुई रक्खी है॥

जिन मन्दिरों को कि बौद्ध छोड़कर चले गये थे, तिन पर ब्राह्मणों ने शीघ्र अधिकार करलिया और बुद्ध की मूरत के स्थान में विष्णु और शिव की प्रतिमा रक्खीं॥ ब्राह्मणों ने उन मन्दिरों की और अधिक शोभा की और बुद्धवालों के मन्दिरों को छोड़ और स्थान छांटकरके हिंदुस्थान के बीचोबीच इलोरा में मन्दिर बनाये जो कि दक्खन में समुद्र से थोड़ी दूर है॥ उन्होंने पहाड़ों में ऐसे मन्दिर खुदवाये जो कि हिंदुस्थान की सब इमारत से अच्छे बने हैं और एक पहाड़ जो पांच मील तक नाल की सूरत है जिस में नये मन्दिर बनें हैं कोई दो और कोई तीन खने हैं॥ सब से प्रसिद्ध कैलाश नाम मन्दिर अर्थात् महादेवजी का स्थान है॥ जितना चमत्-कार कि घर बनाने और मूरत घड़ने में चाहिये उतना सब वहां प्रकाशित है॥ पहाड़ को खोद कर पुल, सीढ़ी, पूजाघर, थंभ, बरंडे, मुनारे और बड़ी बड़ी मूरतें बनाई हैं॥ कोठड़ियों की दीवालों पर हिंदुओं के देवताओं की मूरतें और महाभारत और रामायण की लड़ाई खुदी हुई हैं॥ सब हिंदुओं के देवताओं में से जो कि हिंदुस्थान में प्रसिद्ध

है उन में से कोई ऐसा देवता न होगा जिस की मूरत इलोरा में नहीं होगी, यह पर्वत उस काल में हिंदु मत का स्थापन होगा जब कि वह नर्बदा के दक्षिण को फैला था ॥ उन मन्दिरों के बनाने का ठीक काल निश्चय करना असंभव है; परंतु चाहिये कि दस या ग्यारह सौ बरस के बीच में बने हों, यह काल हिंदू मत के दक्खन में फैलने से लेकर मुसलमानों के इस देश में आने तक का है ॥ कि जिस समय में हिंदुओं के मत की बढ़वार थी और ब्राह्मणों का कोई शत्रु दृष्ट न आता था और राजाओं को ऐसी ऐसी इमारतों के बनाने की सामर्थ थी और अवकाश भी था ॥

पांचवां अध्याय ॥

विक्रमादित्य और शालिवाहन—सुमित्र की मृत्यु—ईसामसीह का जन्म—हिंदुस्थान में ईसाई मत का फैलाव—रूम को संदेसा—मगध के अंद्र नाम राजा—महाकर्ण—पुलोमा—रामदेव—अंद्रभृत्तास— विष्णु पुराण की रीत से हिंदुस्थान का वर्णन ॥

हिंदुस्थान में से बुद्धवालों का मत नष्ट होने के पीछे विक्रमाजीत का समय हुआ; इसी नाम के राजा आठसे न्यून नहीं हुए हैं इसलिये नामी विक्रमाजीत को जानना कठिन है परंतु कहानी और कहावतों से जाना जाता है कि वह विक्रमाजीत जिस का इस पुस्तक में वर्णन है पराक्रमी देव शालिवाहन के हाथ से मारा गया॥ इस नाम का राजा जो उज्जैन में राज करता था और उसी से संवत् का प्रारंभ होता है इसलिये यही ठीक है कि हम उसी को राजा विक्रमाजीत ठहरावें; और तवारीख फिरिश्ता नाम काथा में जो बर्णन लिखा है सो उसी बिक्रम का जाने॥ विक्रमाजीत प्रमरा के कुल में था जिस को अब संक्षेप रूप से पवार कहते हैं ॥ यद्यपि

इस कुल का वर्णन विस्तार पूर्वक नहीं लिखा है परंतु तो भी इतना जाना गया है कि इस कुल के राजा हिंदुस्थान में बहुत बहुत देशों पर राज्य करते थे और बिक्रमाजीत के समय से बहुत पहले अवंती अर्थात् उज्जैन राजधानी थी; परंतु कोई कोई कहते हैं कि बिक्रमाजीत उज्जैन में राज करता था, और कोई कोई ऐसा लिखते हैं कि वह मोरी कुल के राजाओं में से मगध का आठवां राजा था और उसका राजधानी नगर पाटलिपुत्र था ऐसा भांति भांति का वर्णन जो हुआ है इसका कारण हम नहीं जान सकते हैं॥ बिक्रम ईसवी संवत् के ५६ बरस पहले सिंहासन पर बैठा; वह उस समय के राजाओं के बीच युद्ध और मिलाप करने में सब से नामी था॥ और कवियों ने उसका प्रताप बहुत बढ़ा के लिखा है और उसकी सामर्थ के विषय में अत्यंत अधिक लिखा है॥ वे कहते हैं कि उसकी आज्ञा बिना चुंबक पत्थर लोहे को और कहरुबा घास को नहीं उठा सकता था॥ और वह ऐसा सुधा और तपस्वी था कि राजाधिराज होकर भी चटाई पर सोता था, और अपनी कोठड़ी में पानी का घड़ा छोड़कर और कुछ नहीं रखता था और अपने बड़ों की अपेक्षा विद्या बढ़ाने में अधिक परिश्रम करता था॥ हिंदुस्थान के प्रत्येक भाग में से

पंडित बुलाये जाते थे, और वे बड़ा धन पाते थे॥ उस समय के बड़े बड़े चोदह पंडित उसकी सभा में थे, जिन में कवि कालीदास शिरोमणि था॥ बिक्रम के समय में संस्कृत में पुस्तक रचने की विद्या अत्यंत रूप से सुधर गई थी॥ कहते हैं कि बिक्रमाजीत आप निर्गुण निराकार ब्रह्म को मानता था जिस से यह बात निकलती है कि वह तक्षक के प्रकृत मत को मानता था; वह उन देवताओं और देवियों की पूजा का सहायक था जिन को कि बुद्धवालों का मत नष्ट होने के पीछे मानते थे, उसने एक बहुत बड़ी मूरत महा काल की अपने राजधानी नगर उज्जैन में स्थापन की थी॥ यह शिव की मूरत उन बड़ी प्रतिमाओं में से थी जो कि हिंदुस्थान में कई स्थान पर उस समय में स्थापित हुई थीं जब कि शिव की पूजा फैली थी॥ बिक्रमाजीत के बुढ़ापे में शालिवाहन ने चढ़ाई की जो बड़ा योद्धा राजा था; उसके हाथ से बिक्रमाजीत मारा गया॥ शालिवाहन ने दक्खन के इतने देश जीत लिये कि उस दिसा में बिक्रम का संबत् भूलने लगे और शालिवाहन का फैलाने॥

राजा बिक्रमाजीत के समय से थोड़े काल पहले सोमित्र जो राम की संतान में था और सूरजबंस के राजाओं में सब से पिछला था मरगया और सूरज

पादरी वहां था इस से एक बरस पीछे प्रसिद्ध अथनेग्रस ने फ्रूमेंग्रस को हिंदुस्थान का प्रधान पादरी नियत किया, हिंदुओं की पुस्तकों की और अंजील की इतनी बातें मिलती हैं इस बात में संदेह नहीं रह सकता है कि ईसामसीह के चरित्र और मृत्यु का वर्णन बहुत फैला और यह कि हिंदुओंने उनको पलट कर के अपनी कहानियों की पोथियों में मिला दिया॥

उस समय में उज्जैन का एक राजा था जिस को यूनानी इतिहासवेत्ता पोरस कहते हैं जो कि निश्चय प्रमरा या पवार जान पड़ता है और कहते हैं कि छह सौ राजा उसके आधीन थे उसने रूम के राजाधिराज आगष्टस के पास एक दूत भेजा यह बात बड़ी अचंभे की है कि इस बिक्रमाजीत के कुल के राजाने जो संदेसा भेजा था सो यूनानी भाषा में लिखा था॥ इससे निश्चय होता है कि यूनानी लोग हिंदुस्थान में बहुत फैले थे क्या वे बुखारा के राज्य के कारण से थे क्या समुद्र के व्योपार के कारण हिंदुस्थान में फैले हों॥ इस दूत के संगियों में से एक मनुष्य एथेंस नगर में अपघात करके मरगया संभव है कि यह मनुष्य जैन मत का होगा॥

यद्यपि उज्जैन के राजा जो कि प्रमरा की संतान में से थे बिक्रमाजीत के समय से लेकर मुसलमानों

की पहली बड़ाई तक हिंदुस्थान में बड़े शिरोमणि थे। परंतु जान पड़ता है कि अंध्र की संतान के राजा जो कि हिंदुस्थान के उस भाग में राज्य करते थे जहां गंगा बहती है; उस समय में सब अधिकार पाने लगे थे उनकी राजधानी पाटलिपुत्र था उनके राज्य का सच और ठीक वर्णन हम नहीं जानते परंतु निश्चय है कि उनका बड़ा राज्य होगा, क्योंकि उस घराने की बड़ाई रूम तक पहुंची थी और वहां उनकी राजधानी अंध्र हिंदुस्थानकी राजधानी कहलाती थी। उस समय के रूम के इतिहासवेत्ता कहते हैं कि उस घराने के राजा हिंदुस्थान में सब से अधिक अधिकार रखते थे; जितना कि हम उस समय की असंगत कथाओं से निश्चय कर सकते हैं उसके अनुसार जाना जाता है कि उस घराने के लोग मगध के सिंहासन पर ईसवी संवत से बीस बरस पहले बैठे और तीस राजाओं के समय में साढ़े चार सौ बरस से अधिक तक हिंदुस्थान के राजाओं में शिरोमणि थे; परंतु उस काल की सब कथा ऐसी संदिग्ध हैं कि हम ढूंढ़ नहीं सकते हैं कि उस समय के राजा बरन उस समय के घराने किस प्रकार से होते गये॥ जाना जाता है कि उस काल के आदि में कनवा के घराने के चार राजा हुए जो कि उन देशों पर अधिकार रखते थे परंतु हम यह नहीं

कह सकते हैं कि ये राजा अंध्र के घराने में से थे या नहीं और कहते हैं कि कनवा घराने के पिछले राजा को उसके प्रधान सिपरिकने मरवा डाला और आप एक सौ इक्कावन बरस ईसवी में मगध के सिंहासन पर बैठा ॥ चालीस बरस पीछे छद्रक राजा हुआ जो पुस्तकें हमें मिल सकती हैं उनसे जाना जाता है कि हिंदुस्थान के राजाओं में यह राजा बहुत बुद्धवान् और शिरोमणि था उसने अंध्र-कुल को जो कि किसी किसी के अनुसार पिछला घराना था और हिंदुस्थान में सब पर बड़ाई रखता था स्थापित किया; हिंदुओं के समय में कोई ऐसा राजा न हुआ था, जो कि संपूर्ण हिंदुस्थान का अधिपति समझा जाता॥ हिंदुओं के इतिहासों में छद्रक को करणदेव या महाकरण करके लिखा है॥ थोड़ाही काल बितीत हुआ है कि काशी में धरती खोदने से एक पत्र निकला जिसमें उस राजा के पृथ्वी दान करने का ब्योरा लिखा था और उस में उस राजा को तीनों कलिंगों का स्वामी करके वर्णन किया था॥ जो यह केवल प्रशंसा ही न समझी जाय तो निश्चय होगा कि मगध के राजा करण का राज्य एक ओर तो तेलिंगा तक और बंगाले के आखात के उस पार आराकान तक, और बंगाले में समुद्र के तट तक था; क्योंकि इतिहासवेत्ताओं ने

तीनों तिलिंगों की येही सीमा बर्णन की हैं॥ करण ने अठारह बरस राज्य किया, तिसके पीछे उसका भाई राजगद्दी पर बैठा करण के पीछे छह राजा लगातार हुए जिन्हों का करण ही नाम होता रहा, इसको छोड़कर उनका और बिषय हम कुछ नहीं जानते परंतु इतना ही जाना जाता है कि करण का नाम हिंदुस्थान और पूरब के द्वीपों में बड़ी प्रतिष्ठा से लेते हैं इससे यह बिचार हो सकता है कि हो न हो उन करण नाम राजाओंने जहाज बनाये हों जो समुद्र के तीन भागों के अधिपति थे॥ और उन्होंही ने पूरब के द्वीपों में अपना अधिकार किया हो॥ हिंदुस्थानी जब किसी दानशील मनुष्य की प्रशंसा करते हैं तब उसको करण की उपमा देते हैं और हमारे बिचार में ऐसा आता है कि यह करण मगध देश का राजा करण होगा जो बहुत पीछे हुआ है; न प्राचीन करण जिसका महाभारत में बर्णन किया है॥

जाना जाता है कि अंध्र नाम के राजा अपने घराने के राज्य के अंत में चीनवालों से चिट्ठी पत्री का ब्योहार रखते थे और ऐसा समझ पड़ता है कि चीनवालोंने एक बिरियां जब कि हिंदुस्थान में झगड़ा हुआ था तब उनकी सहायता के लिये कुछ कटक भेजा था॥ पुराणों से जाना जाता है कि अंध्रका

कुल ईसवी चार सौ छत्तीसवें बरस में हो चुका इसलिये हम किसी किसी पुराण के बन्ने का काल उसी समय को ठहराते हैं॥ परंतु विलफर्ड साहिब जिसने हिंदुस्थान के प्राचीन वृत्तांत को बहुत बिचार करके लिखा है और कभी कभी अपने मनसे भी कुछ लिखता है वह अनुमान करता है कि अंध्र कुल के राजाओं का संपूर्ण वर्णन छूट गया है; और जो इस घराने को और घरानों से मिलावें तो उस कुल के राज का समय पुलोम के काल तक जान पड़ेगा; जो कि सब राजाओं में शिरोमणि था और संभव है कि हिंदुस्थान में उसके पीछे कोई ऐसा राजा नहीं हुआ होगा॥ कहते हैं कि पुलोम ने संपूर्ण हिंदुस्थान को जीत लिया था इस से हम इतना अर्थ लेते हैं कि वह अपने समय में बहुत बड़ा राजा होगा॥ पूरब की ओर उसने हिंदुस्थान की सीमा के बाहिर तक देश जीत लिये थे, और संभव है कि चीन तक उस का राज्य हुआ हो; परंतु चीनवालों में उसका नाम इतना प्रसिद्ध था कि उन्होंने हिंदुस्थान का नाम पुलोमैनकोफ अर्थात् पुलोम का देश रक्खा है॥ जब उसका राज्य अत्यंत बढ़ा था तब वह छह सौ अड़तालीस ईसवी संवत् में गंगा के बीच आपही डूब मरा॥

तवारीख़ फ़रिश्ता नाम कथा में एक बड़े राजा

रामदेव की चढ़ाइयों का वर्णन लिखा है जिस से जाना जाता है कि यह राजा भी उसी समय में था॥ रामदेव हिंदुस्थान के किसी राजा का सेनापति था और अपने स्वामी के मरण काल पीछे राजगद्दी पर बैठा॥ हो न हो यह राजा पुलोम की गद्दी पर बैठा॥ उसने बंगाले पर चढ़ाई की और बंगाले की राज धानी को लूटा जहां बज़्तसा धन उसके हाथ लगा, तिसके चार बरस पीछे वह मालवे को गया; संभव है कि प्रमरा के निर्बल कुल पर चढ़ा होगा जो कि अब तक उज्जैन में राज्य करता था; उस कुल को बसमें करके हिमालय पहाड़ की ओर अपनी सेना को लेगया फिर वह कश्मीर को गया और सब पहाड़ी राजाओं से कर ठहरा लिया, उसका राज्य छप्पन बरस रहा जिस में उसकी सदा मनोकामना पूरी होती रहीं॥ उसके मरने के पीछे उसके बेटों में झगड़ा पड़ा और उसका सेना-पति प्रतापचंद यह औसर पा आप सिंहासन पर बैठ गया और अपने स्वामी की भांति युद्धों में लगा निदान तवारीख फरिश्ता नाम कथा के अनुसार जब कि उसने ईरानियों के बंधे ज़ये कर के देने में निषेध किया, तब उन्होंकी सेना हिंदुस्थान पर चढ़ आई और उससे केवल सब पिछला ही कर न लिया परंतु कुछ और भी आगे को ठहरा लिया॥ कहते हैं

कि उसके मरन के पीछे उसके सब सेनापति अपने अपने सूबे को दबा बैठे और इसी रीत से उसका राज्य डूब गया॥ हम इस वृत्तांत को और वृत्तांतों से मिला नहीं सकते परंतु यह बात होसकती है कि पश्चिम ओर की चढ़ाई से नोशेरवां की चढ़ाई हो; कोई २ कहते हैं कि उसने कदाचित हिंदुस्थान में कनोज तक देश जीत लिये थे॥

कहते हैं कि अंध्र के कुल के पीछे अंधभृत्तास अर्थात् अंध्र के सेवक राजा हुए जिस से यह बात निकलती है कि अंध्रका राज्य बिगड़ने के पीछे प्रत्येक अधिपति ने अपने अपने सूबे को दाबलिया और आप स्वाधीन होगया॥ विष्णु पुराणसे जो कि मुसल-मानों की पहली चढ़ाई के समय का बना है जाना जाता है कि उसमें इस पिछले कुल की हार होने से जो आपत्ति हिंदुस्थान में पड़ी थी उसका बर्णन इस रीत से लिखा है कि क्षत्री जाति का बहुधा नाश होगया था और बहुतेरी जातों ने ब्राह्मणों से लेकर पुलिंदों तक अर्थात् पहाड़ी जंगली जातों तक मगध, प्रयाग, मथुरा, कांतीपुर, काशीपुर कनोज और अनुगंगा में अर्थात् उन देशों में जहां गंगा बहती है स्वाधीन होकर राज्य किये॥ गुप्त जो कि शूद्र हैं मगध के एक देश में राज्य करते हैं॥ दारक्षत कलिंगा के उन देशों में राज्य

करता है जो कि समुद्र के तीर पर हैं; और कलिंगा के दूसरे भाग में गोलोन का राज्य है और मूमधानोने नैमिश निशिद्ध और कुलुत्ति जो देश बनारस और बंगाले की पूरब ओर हैं उनमें अधिकार किया॥ सूरत और मारवाड़ और नर्बदा के तीर के देशों में सूद्र और अहीर राजा हुए और सिंधु नदी के तीर देशों पर म्लेच्छोंने अधिकार किया था॥

छठा अध्याय ॥

चित्तोड़ के राजा—उनकी ईसाई संतान—गोहा—बापा—मुसलमानों की बृद्धि—मुसलमानों की पहली चढ़ाईयों—चित्तोड़ की चढ़ाई और रक्षा—तवार का कुल—उज्जैन का बिगड़ना—चित्तोड़ की चढ़ाई ॥

अंध्र का कुल बिगड़ने के पीछे हिंदुस्थान के उत्तर भाग का हर एक देशाधिकारी राजा बन बैठा जैसा कि अभी हम पिछले अध्याय में वर्णन कर चुके हैं ॥ हिंदुस्थान में फिर आपत्ति फैली और सिंधु नदी के तटपर एक नवीन शत्रु आपहुंचा जो और शत्रुओं की अपेक्षा बड़ा भयंकर था जिन्होंने सिंधु नदी पार होके हिंदुस्थान को उजाड़ा था॥ ये शत्रु मुसलमान थे जिन्होंने पहले पच्छिम के देशों और गुजरात और राजपूताने के देशों पर चढ़ाई की, इसीलिये अब हम पूरब के देशों का विषय छोड़ देते हैं क्योंकि उनकी प्रतिष्ठा में अब अंतर आगया है॥ और अब उन कुलों का विषय लिखा चाहते हैं जो कि सिंधुनदी के पास रहते हैं॥

मुसलमानों की चढ़ाई से मेवार अर्थात् उदय पुर

के राजे जो कि उस समय चित्तोड़ में राज्य करते थे बहुत प्रसिद्ध होने लगे॥ यह राज कुल जो अब हिंदुस्थान में महा प्रतिष्ठित है लिखित पत्रों की साक्ष से और पश्चिम के हिंदुओं के वचन से राम के बड़े पुत्र लव की संतान अपने को मानता है ॥ वे पहले ही पहल सूरत में जाकर बसे थे और बलभी पुर को जो कंबे के आखात में है अपनी राजधानी किया ॥ ईसवी संवत् ५२४ में यह नगर नष्ट हुआ॥ और एक शत्रुने इस नगर के बासियों को तित्तर बित्तर कर दिया जो सिंधु के मार्ग से चढ़ आया था ॥ ऐसा अनुमान करते हैं कि यह शत्रु ईरान के राजा नोशेरवां आदिल का पुत्र होगा ॥ इस महा उपद्रव में केवल पुष्पवती नाम राणी बच कर मलिया पहाड़ की खोह में छिप रही॥ वहां उसके पुत्र जन्मा। जिसका नाम गूह रक्खा ॥ जब वह लड़का बड़ा हुआ तब उसने ईदर को अपने अधिकार में लाकर वहां अपना राज स्थापन किया ॥ अब के उदयपुर के राजा उसी के वंश में हैं॥ और उनको सूरज वंश के बड़े राजा के कुल में जान कर बारह सौ बरस पहले के हिंदू राजाओं में शिरोमणि कहते हैं ॥ उदयपुर के राजा को हिंदुओं के राज कुल का सूरज कहते हैं ॥ पर बड़ी दृढ़ साक्षियों से यह अचंभे की बात जानी जाती है कि उन शिरोमणि राजाओं का कुल मा की

ओर से एक ईसाई राजकन्या की संतान है॥ राजपूतों का इतिहासवेत्ता ऐसा कहता है कि यह बात निश्चय है कि उदयपुर के राजा सब हिंदुओं में शिरोमणि हैं॥ हिंदुओं के और राजा सिंहासन पर बैठने से पहले उदयपुर के राजा से आदरपूर्वक तिलक लगवाते हैं जो कि राज मिलने का चिन्ह है॥ यह तिलक माथेपर मनुष्यों के रुधिर से लगाया जाता है, और उनकी पदवी राणा है और अपने को नोशेरवां आदिल की संतान में कहते हैं इस नोशेरवां का बेटा अपने पिता से प्रतिकूल हुआ और लड़ाई में मारागया; पर उसकी संतान हिंदुस्थान में रही आई जिससे उदयपुर के राणा हुवे इस बात को और लोग भी मानते हैं कि नोशेरवां की एक बेटी उदयपुर के राजघर में व्याही गई थी नोशेरवां की मारिस नाम राणी कुसतुंतुनिया के राजा की लड़की थी जो ईसाई था इसलिये राजपूतों के कुल का अंगरेज़ इतिहासवेत्ता कहता है कि इससे एक बड़े अचंभे की बात निकलती है कि हिंदुओं का सूरज जिसकी सौ पीढ़ियों से राज्य होता चला आया है और जिसका राम की संतान में से होना निश्चय जानते हैं जो कि सूरजवंश में मुख्य था यह एक ईसाई राज कन्या की संतान है अपनी संतान से पश्चिम के ईसाई राजाओं से संबंध रखता है॥

गुह के पीछे ईदर के सिंहासन पर आठ राजा बैठे जिन में से सब से पिछले राजा को उसके बेटों ने आखेट करते समय मारडाला परंतु इसका छोटा बेटा जिसका नाम बापा था भांडोर के गढ़ में पहुंचा वह गडरियों में पला और उसके लड़कपन और तरुणाई की बहुतेरी अद्भुत कहानियां कहते हैं, जिस भांति से कि और राजाओं की कहानियां हैं जिन्होंने कि पहले ही पहल राज की नीम धरी॥ बापा से उसकी माने कहा कि वह चीत्तोड़ के राजाओं से संबंध रखता है जो प्रमरा को जात थे॥ इस बात के सुनने से उसके चित्त में एक बड़ा उद्योग हुआ और उसने ग्वाल पनके ओछे काम को छोड़ने का बिचार किया; अपने कई मित्रों को इकट्ठा करके वह बहुधा सात सौ ७०० संवत् ईसवी में चीत्तोड़ की ओर चला वहां उसका संबंध खुलने से बड़ा आदर किया परंतु बड़े मनुष्यों को एक अनजाने लड़के पर इतनी कृपा करनी बहुत बुरी जान पड़ी और बहुत अप्रसन्न हुए इसी काल में एक बड़ा बैरी आन पहुंचा और सब कुलीनोंको अपनी अपनी सेना लेकर आवने की आज्ञा भई; परंतु सबोंने मता करके इस बात का निषेध किया, और निंदा पूर्बक राजा से कहला भेजा कि अपने नवीन मित्र से सहाय मांगो॥ बापा ने तुरंत चढ़ाई

करना अंगीकार किया ॥ ये शत्रु मुसलमान थे जो कि अब की बार पहलेही पहल हिंदुस्थान में घुसे थे ॥ और कुछ काल पीछे यही देश उनकी बड़ी राजधानी होगया ॥

अब हम मुसलमानों का प्रकृत वर्णन करते हैं जो कि हिंदुस्थान के ऐसे बड़े बैरी थे कि उनके समान आजतक कोई नहीं हुआ ॥ महम्मद जो कि मुसलमानों के मतका स्थापक था मक्के नगर में जो कि अरब देश में है पांच सौ उन्हत्तर ५६९ संवत् ईसवी में जन्मा था॥ उसने चालीस बरस की अवस्था में अपने को पैगम्बर प्रसिद्ध किया और खड्ग की सहायता से मनुष्यों को मुसलमान करने में ईश्वर की आज्ञा बताई ॥ अपनी विशद बाणी और बुद्धिवानी से अरब के बहुत से लोगों को अपने मत में करके और जातों को भी अपने अधिकार और मत में लाने के लिये सेना इकट्ठी की और अपनी आयु में इतनी जीत करने का प्रारंभ किया जो कि उसके पीछे सिंहासन पर बैठनेवालोंने बड़ी धूम धाम से उनको पूरा किया ॥ उसकी मृत्यु के पीछे जो लोग कि उसके सिंहासन पर बैठते गये वे भी उतना ही उद्योग और मत का पक्ष करते थे ॥ उन्होंने दाहने और बायें इतनी शीघ्रता से देश जीत लिये कि किसी और ने कम किये होंगे

एक एक देश उनके आधीन होता गया और एक एक राज्य उनके उपाय से हारता गया, पचास बरस बरन थोड़े ही काल में उन्होंने पच्छम के सब देशों के प्रबंध को बिगाड़ दिया॥ मुसलमानों के मत का प्रारंभ होने के दिन से मुसलमानों का यह उद्योग हुआ कि सारी पृथ्वी में उनही का राज्य हो जाय और सब लोग एकही मत और एकही पैगम्बर और एकही देश संबंधी और मत संबंधी रीतों को माने॥ वह लिख गया है कि मत और देश संबंधी लड़ाई में जो जो मुसलमान मारे जायगे उन को स्वर्ग और अप्सरा मिलेगीं। जब कि मुसलमानों ने हबश और स्याम को जीत लिया हो और ईरानियों के राज्य को बिगाड़ डाला हो बरन यूरप को भी अपना ही समझा हो तो ऐसी दशा में यह बात कब बिचार में आसक्ती है कि हिंदुस्थान के धनवान देश मुसलमानों के हाथसे बच रहे होंगे; जिनको प्राचीन काल से पश्चिम के जिस शत्रुने चाहा उसीने सिंधुनदी से पार होकर तुरंत अपने अधिकार में करलिया॥ जाना जाता है कि महम्मद के सिंहासन पर बैठनेवालोंने अबतक अपनी सामर्थ दृढ़ न की थी कि उन्होंने इस धनवान देश पर चढ़ाई की॥ महम्मद के मरने के कई बरस पीछे दूसरे खलीफा उमर ने ईरान को जीतकर

दजला और फरातनदी के मुहाने पर बसरा नगर इस आशय से बसाया कि मुसलमान गुजरात और सिंधु देश से जो सिंधुनदी के पूरब को हैं ब्योपार कर सकें ॥ उसने अबुलास को एक बड़े कटक के साथ हिंदुस्थान पर चढ़ाई करने को भेजा; वह हिंदुस्थान के बीच आरोर की पहली ही लड़ाई में मारागया ॥ उसमान उमर के पीछे खलीफा हुआ उसने सिंधुनदी के तीर के देशों पर चढ़ाई करने के अर्थ वहां का समाचार जानने के लिये लोग भेजे ॥ परंतु कई एक ऐसे विघ्न हुए कि जिनके कारण उसकी मनोकामना पूरी न होसकी ॥ चौथे खलीफा अली ने सिंधु का कुछ देश लेलिया जिसको उसके मरने के पीछे मुसलमानों ने आपही छोड़ दिया इसी भांति अपने समय की आदिसे मुसलमान हिंदुस्थान पर चढ़ाई करने की इच्छा रखते थे; पर वलीद के समय तक चढ़ाई का अवसर न पा सके ॥ सात सौ पांच ७०५ और सात सौ पंद्रह ७१५ ईसवी संवत् के बीच उसने केवल सिंधु देश ही को नहीं जय किया बरन निज सेना को गंगा तट तक लेगया और सारे देश से कर लेने लगा ॥ इसी खलीफा के सेनापतियोंने जिब्रालटर मुहाने से पार होकर यूरप में अपना झंडा खड़ा किया था, और स्पेन देश को एक ही चढ़ाई में अपने आधीन करलिया ॥ जब कि

हम बिचार करें कि उन्हीं दिनों में मुसलमानों ने गंगा और ईब्रो नदी के तटों पर भी जय पाई थी और यही खलीफा हिंदुस्थान और यूरप के लेने की इच्छा करता था तब महम्मद के सिंहासन पर बैठनेवालों के उद्योग और परिश्रम का ब्योरा कुछ कुछ जान पड़ेगा॥ वलीद के समय की चढ़ाई से सारा उत्तर हिंदुस्थान कांप उठा हिंदुओं के इतिहास से जाना जाता है कि यदु भट्टी सिंधु के पार के जंगलों में भाग गया॥ मानकराय चोहान जो कि अजमेर का बीर राजा था लड़ाई में मारागया और उसका छोटा बेटा कोट पर तीर से मारा पड़ा और जो गहना कि वह उस समय पहरे हुवे था अब तक राजपूत अपने लड़कों को नहीं पहनाते हैं॥ सूरत के राजाओं से सब देश छिन गया॥ इस आपत्ति के करनेवाले को हिंदू इतिहासवेत्ता कभी देव और कभी जादूगर कहते हैं परंतु उसके तईं म्लेच्छ सदा कहा करते हैं यद्यपि हिंदुओं के इतिहासों से इस चढ़ाई करनेवाले का वर्णन अच्छी भांति नहीं जाना जा सकता है परंतु संभव है कि उत्तर हिंदुस्थान के राजाओं में यह आपत्ति मुसलमानों की चढ़ाई से उत्पन्न भई थी *

---

* ईब्रो स्पेन देश की एक नदी का नाम है

वलीद की सेना जो गंगा पार के देशों में घुसी थी उस से तीन बरस पीछे उसके सेनापति कासम के पुत्र महम्मद ने हिंदुस्थान पर दूसरी बेर चढ़ाई की॥ वह एक बड़ा बीर कटक लेकर सिंधु में आया और दाहर से जो कि उस समय में गुजरात का अधिपति था बहुत लड़ाइयां लड़ा निदान दाहर की हार भई और मारागया महम्मद कासम का बेटा जयवंत सेना को लेकर चित्तोड़ की ओर चला जो कि हिंदुओं के आश्रय का स्थान था॥ उस काल में बापा जिसका कि पहले वर्णन होचुका है सेनापति हुआ यद्यपि कुलीनों ने लड़ाई में इकट्ठे होने का निषेध किया फिर भी जितनी सेना वह इकट्ठी कर सका उसही से वह रण भूमि में आया और शत्रुओं के सनमुख हुआ जो कि अपनी जय के कारण फूल रहे थे उनको संपूर्ण रीत से हरा दिया॥ महम्मद कासम का बेटा सिंधु और सूरत की बाट होकर फिर उलटा फिर गया बापाने गजनी तक अर्थात् कंधे तक जो उसके घराने की प्रकृत राजधानी थी पीछा किया, वहां सलीम सिंहासन पर था. बापाने उसे अपने आधीन किया और फिर उसकी बेटी से बिवाह किया॥ चित्तोड़ को फिरते समय बापा ने कुलीनों से बिचार किया और उनकी सहायता से पहले राजा को सिंहासन से उतार

आप राजसिंहासन पर बैठा ॥ उस समय की कथाओं से ये बातें इस रीत से जानी जाती हैं; परंतु यह बात प्रसिद्ध करनी आवश्यक है, कि इतिहासों में निश्चय कुछ अंतर रहता है जिसको हम संगत नहीं मिला सकते हैं बापा के समय में थोड़े काल पीछे खालिफुल मनसूर ने सिंधु को फिर जीत लिया और उसकी राजधानी का नाम पलट कर मनसूरह रक्खा॥ चित्तोड़ के राजा बापाने जिसके वंश में उदयपुर के राना हैं अपने देश पर अच्छी भांति अधिकार करके अपने देश और मत को छोड़ दिया और अपने कटक सहित सिंधु पार होकर खुरासान में चला गया जहां कि उसने बहुतसी मुसलमानियों से बिवाह किया और बहुत संतान छोड़ मरा॥ इस बात से कि जो बहुत निश्चय है जाना जाता है कि बहुत काल नहीं बितीत हुआ होगा कि तब तक हिंदुस्थान में और सिंधु नदी के पश्चिम ओर के देशों में अवागमन रहता था॥

जो कि हिंदुस्थान पर मुसलमानों की पहली चढ़ाई का वर्णन कर चुके हैं इसलिये अब यही कहना शेष रहा है कि उस समय में अर्थात् सात सौ पचासेक बरस ईसवी में दिल्ली का राज्य एक नवीन घराने के अधिकार में था जो पांडव के कुल में शेष रहा था॥ यह राज्य उस समय से स्वामी रहित था; जब कि

विक्रमादित्यने सब से पिछले राजा को दूर किया कि जिस बात को सात सौ बरस से अधिक बितीत हो चुके थे कि समय के फेर फार से उस घराने ने कि जिसको बहुधा तवार कहते हैं दिल्ली को नवीन राजधानी बना लिया उस दिन से अनंगपाल के समय तक उसी घराने के इक्कीस राजा दिल्ली के सिंहासन पर बैठे ॥ अनंगपालने अपने दोहते पृथ्वीराज को गोद लिया जो कि दिल्ली के हिंदूराजाओं में सब से पिछला था ॥ उसके मरने के पीछे मुसलमानों का झंडा इस प्राचीन राजधानी पर पांच सौ बरस तक फहराता रहा ॥

जब कि वलीद की सेना हिंदुस्थान में घुसी उसी समय के आस पास प्रमरा का कुल जिसने कि उज्जैन में चिरकाल राज्य किया था घटने लगा ॥ इस राजकुल की बड़ाई हम जब जान सकें ॥ तब उन संबतों की संख्या और सामर्थ बिचार करें जो कि उसके बिगड़ने से जुदे जुदे देसों के राजा होगये तवार के कुल ने दिल्ली में अपना अधिकार करलिया और एक बड़ा राज्य बनाया ॥ गुजरात स्वाधीन होगई ॥ और वह प्रथम चवरों के आधीन रही पीछे सोलंकिओं के ॥ इन्होंने नरवाला अर्थात् अनरवाला को अपनी राजधानी बनाई ॥ गहलोटोंने चीत्तोड़ को अपने राज्य में मुख्य स्थान बनाया ॥ कुछ

पीछे कन्नोज कौरवों के अधिकार में आई कुछ एक पहलासा चमत्कार होने लगा॥ और हिंदुस्थान के उत्तर विभाग का रूप पलट गया उज्जैन और पाटलिपुत्र का तो राज्य नष्ट हुआ नये नये राज्य उत्पन्न हुए उनके स्वामियों के जुदे जुदे उद्योग थे॥ होते होते अंत में मुसलमानों की जय से हिंदुस्थान में एक और भांति की व्यवस्था हो गई॥

जान पड़ता है बापा के समय से कुछ काल पीछे तक मुसलमानों ने हिंदुस्थान पर कोई और चढ़ाई न की इस राजा के बेटे और पोते के राज्य में ऐसी कोई बात न हुई जिसे स्मरण करें परंतु उसके पड़पोते खमान को जो बड़ा बीर था सिंहासन-पर बैठते ही मुसलमानों के साथ अपने बल की परीक्षा करनी पड़ी॥ खमान ने संबत् आठ सौ बारे ८१२ ईसवी से आठ सौ छत्तीस ८३६ के संबत् तक राज्य किया हिंदुस्थान पर मुसलमानों की इस चढ़ाई का सेनापति खुरासानपति महमूद कहाता है॥ परंतु इसमें कुछ संदेह नहीं कि वह मामून बगदाद के खलीफा हारूनरशीद का पुत्र और शारलमनशाहनशाह का मित्र था उसके बापने उसको खुरासान देश दे दिया था॥ मामून बड़ा कटक लेकर चीतोड़ पर आया॥ और जो हम मामून की सेना की सामर्थ का उस कटक की

संख्या पर बिचार करें जो कि चीतोड़ के बचाने के लिये इकठी ऊई थी तो हमें जान पड़ेगा कि वह कैसी बलवान् थी॥ हिंदुस्थान के और राजाओंने जाना कि जो आपत्ति चीतोड़ पर है वह हमारे लिये भी है॥ इस बिचार से इकठे होकर चीतोड़ के बचाने को चले॥ हिंदुस्थान की उत्तर ओर के प्रत्येक बिभाग से चीतोड़ की सहायता को जितनी जाति के लोग थे उन सब जातों का बर्णन बड़े बिस्तार से एक रजपूत कबिने किया है॥ इसमें कुछ संदेह नहीं कि उत्तर की सब सेना उस शत्रु को एकही बार में हटा देने के लिये इकठी भई॥ जिसकी चढ़ाई का अंत नहीं जाना जाता था॥ इन सेनाओं की सहायता से खमानने मुसलमानों से जय पाई॥ कहते हैं कि उसने उनसे चौबीस लड़ाइयों से न्यून न की होंगीं इन चढ़ाइयों से उसका यश दूर २ तक शत्रु मित्र सबों में फैल गया॥ और बऊत काल तक उसके देश के लोगों के मनमें मुसलमानों के संग लड़ने के समय उसके नाम लेने से बीरता उत्पन्न होती थी॥ कहते हैं कि उसने ब्राह्मणों के कहने से अपने पुत्र को सिंहासनपर बैठाय राज सोंप दिया परंतु पीछे उसने फिर अपना राज लेलिया और जाना कि ब्राह्मणों के कहने में छल था इसलिये बहुतेरों को मरवाडाला और उन्हों के कुल को नष्ट

करने का उद्योग किया॥ निदान खमान को उसके पुत्र ने मार डाला पर इसका उसके बाप के सेनापतियों ने पलटा लिया॥

उस समय से डेढ़ सौ बर्ष १५० तक मुसलमानों ने हिंदुस्थान पर कोई और चढ़ाई न की॥ उस समय के हिंदू इतिहास शुद्ध और निस्संदेह नहीं हैं उसने इतिहास की सी एक ही बात लिखी है॥ जो उस समय में निकम्मी जान पड़ती थी पर पीछे उससे बहुत कार्य निकले॥ कन्नोज के राज्य ने जहां हिंदुओं के मत ने पुष्टता पाई एक नये घराने के राजाओं के राज्यों ने फिर चमत्कार पाया॥ और पहले के समान फिर बढ़ती होती चली महमूद ग़ज़नवी की चढ़ाई से कुछ काल पहिले अथवा अब से नौ सौ बरस के आस पास उदीश्वर ने जो कि बिदियों के कुल के राजाओंमें से था और बंगाले का राजा था॥ नदिया उसकी राजधानी थी अपने ब्राह्मणों की मूर्खता से अप्रसन्न हो बैरासिंहदेव कन्नोज के राजा से ऐसे ब्राह्मणों के लिये प्रार्थना की जो कि मत ब्यवहार के बिषय में बिशेष ज्ञान रखते होंय॥ कन्नोज के राजा ने पांच ब्राह्मण उसके पास भेजे अबके बंगाली ब्राह्मण जो उस देश के नहीं हैं अपने को उन्होंही की संतति में मानते हैं॥ और कायस्थ जो बंगाले में ब्राह्मणों के नीचे गिने जाते हैं अपने को

उन पांच सेवकों की संतति में बताते हैं जो कि उन पांचों ब्राह्मणों के साथ बंगाले में गये थे ॥

इति प्रथम विभाग ॥

दूसरा बिभाग ॥

मुसलमानों का समय ॥

सप्तम अध्याय ॥

समानियों का राज्य—गज़नी के राज्य की वृद्ध—सुबुक्तगीं की हिंदुस्थानपर चढ़ाई—गजनीन के राजा महमूद का बृत्तांत—हिंदुस्थान की व्यवस्था—महमूद की हिंदुस्थानपर अन्य अन्य चढ़ाइयां—थनेश्वर—कन्नोज—सोमनाथ—महमूद की मृत्यु ॥

अब हम उस समय का ब्योरा लिखते हैं जिससे कि हिंदुस्थान में मुसलमानों के राज्य का आरंभ जाना जाता है॥ वलीद और हारूनुलरशीद के राज्य में जैसी कि हम लिखि आये हैं हिंदुस्थान के जितने के लिये बहुत घोर चढ़ाई हुई थी परंतु हिंदू मुसलमानों से जय पाते रहे॥ पिछली चढ़ाई से डेढ़ सौ बर्ष पीछे तक यवनोंने कभी हिंदुस्थान के लिये उद्योग न किया परंतु परिणाम सिंधु से थोड़ी

दूर पर एक नवीन मुसलमानों का घराना स्थापित हुआ और हिंदुस्थान लेने का विचार निश्चित किया॥

संबत् हिजरी के पहले सैंकड़े में मुसलमानोंने मावरूलनहर और खुरासान के धनवान और बिस्तृत देशों को जीत लिया था॥ और एक सौ अस्सी बरस से अधिक खलीफा के देशाधिकारी उनपर आज्ञा करते रहे॥ परंतु अपने कुल में नामी हारूनुलरशीद के मरने से पीछे खलीफों का बल घट गया और केवल महम्मद के स्थानापन्न होने के नाम से दूर दूर के देशाधिकारी खलीफों के आधीन न रह सके एक एक देश इन्हों के राज्य से छूटता गया इहां तक कि खलीफों के बहुत बड़े राज्य में बगदाद और उसके पास के गांव इस से बिशेष कुछ न रहा॥ उन देशाधिकारियों में से जो कि उस समय में स्वाधीन राजा हो गए इसमाईल समानी मावरूलनहर और खुरासान का अधिकारी था जो कि संबत् दो सौ तरेसठ २६३ हिजरी में समतुल आठ सौ बासठ ८६२ इसवी के राजा हुआ और एक नवीन राज्य स्थापित किया जिस में कि उन दोनों देशोंके भिन्न काबुल अफगानिस्थान कंधार जाबुलिस्तान थे॥ बुखारा उस कुल की राजधानी निश्चित हुई॥ और यह कुल इतिहासों की पोथी में समानियों का कुल करके लिखा है। चार राजाओं ने ९० बर्ष तक

भलाई और प्रशंसा के साथ राज किया॥ चौथे राजा ने अपने मरने के समय एक लड़के मनस्हर बिख्यात को राज्याधिकारी किया परंतु और सभासद प्रधानों के बिचार में अंतर हुआ॥ क्योंकि कितनेक हारूनुलरशीद के चाचा को राजसिंहासनपर बिठलाया चाहते थे परिणाम इस बात में अबसतगी अथवा अलपतगी अधिकारी खुरासान का जिसकी राजधानी गजनी थी पंच ठहरा उसने भी चाचाही को राजा बनाने का बिचार किया परंतु बुखारा में इस बिबेचना के जानने से पहिले दोनों ओर में निमटेरा होगया था॥ और उन्होंने मनस्हर को राजसिंहासनपर बिठला दिया था॥ इस तरुण राजाने अबसतगी के ऐसा मता करने से क्रुद्ध हो उसको बुखारा में बुलवाया॥ परंतु वह ऐसा बिचारवान् था कि अपने शत्रुओं के हाथ न आया और तुरंत उसने अपने ताईं स्वतंत्र राजा माना॥ मनस्हर के सेनापति उसपर चढ़ गये परंतु वे दो बेर लगातार लड़ाई हारे और अबसतगी खुरासान और जाबुलस्तान का निर्भय राजा रहा जिन्होंपर उसने पंद्रह बर्ष तक अधिकार रक्खा॥ और मरने के पीछे अपने बेटे इसहाक को उनका अधिकारी छोड़ गया॥ बुखारा के राजा ने उन फिरे हुए देशों पर अपना स्वत्व भी नहीं छोड़ा

था इसलिये इसहाक ने सिंहासनपर बैठने से थोड़े काल पीछे अपने सेनापति सुबुकतगीं के साथ मनहूर के देश पर उस मनोरथ से चढ़ाई की कि मनहूर दीन होकर उसे स्वतंत्र राजा माने ॥ सुबुकतगीं बिजयी ज्ञआ ॥ और मनहूर से खुरासान का स्वतंत्र राजा होने का पत्र प्राप्त किया ॥ इसहाक अपनी मदांधतासे मृत्यु को प्राप्त हुआ और सेनाने तत्काल अपनी इच्छा से सेनापति सुबुकतगीं को गजनी के सिंहासनपर स्थापित किया यह राजा अपने को उन ईरानियोंकी संतति में जो कि सस्सानीदों के कुल में कहाते हैं कहताथा जिस कुल का अंत का राजा यजदीजुर्द उस समय में जब कि मुसलमानोंने आकर इसके देश को अपने राज्यमें मिलालिया तब निज देश से निकला गया ॥ यद्यपि सुबुकतगीं राज पुत्र था तो भी समय योग से उस पर बड़ी कंगाली आगई और लड़कपन में आबस्तगी के हाथ बिक गया जिसने कि उसको होन हार बिचार करके क्रम क्रम से बड़े बड़े अधिकार दिये॥ इहां तक कि परिणाम वह सब राज संसर्गियों से अधिकार में बिशेष होगया था ॥ अपने राज्य के पहिले वर्ष अर्थात् संवत् नौ सौ सत्तर ९७० ईसवी में वह हिंदुस्थान पर सेना चढ़ा लाया॥ उस समय में हिंदुस्थान के सब देशों में गजनी के नवीन राज्य के

निकट लाहोर में जैपाल नाम राजा था ॥ जब कि मुसलमान मनसूर के समय में सिंधुनदी को उत्तर आये उससे पीछे लाहोर के राजाओंने बीर और पहाड़ी सिंधु के पश्चिम तट के रहनेवाले अफगानों से दृढ़ बचन कर लिये थे उस कारण से मुसलमानों को हिंदुस्थान में आने से रोक टोक रही मुसलमान तवारीख फिरिस्तः पुस्तक के अनुकूल उस समय से सिंधु देश के मार्ग से भिन्न और कोई हिंदुस्थान में आने का मार्ग नहीं पा सकते थे॥ सुबुकतगींने अफगानों को हिंदुस्थानियों से छुड़वा कर अपनी सहायता करने के लिये दृढ़ किया॥ इस रीति सिंधुनदी के पार की रक्षा जाती रही लाहोर और मुलतान भी चढ़ाई करनेवालों के बश में शीघ्र आगए सुबुकतगींने पहलीही चढ़ाई में हिंदुस्थान के कई गढ़ ले लिये॥ और बहुत सी लूट लेकर अपनी राजधानी को उलटा फिरगया॥ जैपालने सुबुकतगीं की फिर चढ़ाई करने के संदेह से बहुतसी सेना इकठी की और सिंधु पार होकर मुसलमानों पर उन्ही के देश में चढ़ाई की परंतु उसका मनोरथ सुफल न हुआ और उसके आधीन होना पड़ा और उसने कर में प्रति बर्ष रुपैयों और हाथियों का देना अंगीकार किया। जो कि उस से सब कर एकही बार दिया न गया इसलिये उसने

बिश्वासित मनुष्यों को करके लेने के लिये लाहोर तक अपने साथ भेज देने की प्रार्थना की; जैपालने अपनी राजधानी में आनकर और वहां अपने देश को सुबुकतगीं के उलटा फिर जाने का समाचार सुन कर इस नए बचन के तोड़ने की इच्छा की; उसकी सभा में उसके सेनापति चत्री सिंहासन की बाईं ओर खड़े थे; और ब्राह्मण दाहिनी ओर थे॥ चत्रि-योंने उसे स्मरण करवाया कि दुष्ट शत्रु के साथ संग्राम करने में कितनी आपत्ति पड़ी थी और कहा कि महाराजने कर के देने का बचन किया था पर ब्राह्मणों ने कहा कि अब ग़ज़नीन से कुछ डर न रहा और कर के न देने का उपदेश किया; पछतावा है कि उसने ब्राह्मणों का कहना अंगीकार किया और रुपैये लेने के लिये जो मनुष्य आये थे उन्होंको कैद किया॥ सुबुकतगींने बिश्वासघात का समाचार सुन के अपनी सेना इकठी की॥ और जैपाल के देश पर बड़ी धूम धाम से आया॥ यद्यपि यह राजा अपने बचन के तोड़ने के कारण से शत्रु को अपने ऊपर आप चढ़ा लाया था परंतु फिर भी उत्तर के हिंदू राजा उस चढ़ाई को रोकने के लिये साथी हुये; दिल्ली अजमेर कालिंजर और कन्नौज के राजा लाख सेना से उसके सहायक हुए; और दोनों सेना लमगान के तट पर सनमुख

ऊई॥ हिंदुओंने हार पाई और नीलाब के तट तक उनका पीछा ऊआ॥ यह युद्ध सिंधुनदी के पश्चिम की ओर ऊआ क्योंकि उस समय में उस नदी के पार होने में कुछ दोष नहीं गिन्ते थे; जाना जाता है कि उस लड़ाई के पीछे सुबुक्तगीं के राज्य में और लड़ाई हिंदुओं से न ऊई; वह युद्ध बाईस बरस तक रहा॥ संवत् नौ सौ सत्तानवे ९९७ ईसवी में सुबुक्तगीं मरा; और उसके पीछे प्रथम उसका पुत्र इसमाईल राजा ऊआ परंतु दो महीने के पीछे उसका भाई बड़ा नामी महमूद गज़नवी सिंहासनपर बैठ गया॥

महमूद गज़नवी जिसने कि हिंदुओं के राज्यों-पर बऊतसी आपत्ति फैलाई; उसकी चढ़ाइयों का वर्णन करने से पूर्व हिंदुस्थान की उस समय की दशा संक्षेप रूप से लिखना योग्य है॥ नर्बदा के उत्तर के देशों में इस रीत से राज्यों का विभाग था॥ दिल्ली तवार के कुल के अधिकार में थी॥ राठोर अपने इतिहासवेत्ताओं के अनुसार कन्नोज पर अधिकार रखते थे; यद्यपि इस बात के बऊतसे प्रमाण हैं कि कन्नोज का सिंहासन कौरवों के पास था। घलोत मेवाड़ पर और सोलंकी गुज़रात पर अधिकार करते थे॥ इनमें से किसी पराक्रमी कुल के आधीन और कई छोटे राजा थे॥ दिल्ली

और कन्नोज की सीमा काली नदी थी ॥ दिल्ली का राजा पश्चिम की ओर सिंधु नदी तक के देशों में अधिकार रखता था और उसकी प्रजा में १०८ ठाकुर थे जिनमें कितनेहीं सब भांति राजा सरीखे थे परंतु राजा न कहाते थे ॥ कन्नोज के राज्य की उत्तर सीमा हिमालय श्रेणी थी; पूरब में बनारस; पश्चिम में बुंदेलखंड और दक्षिण सीमा मेवाड़ ॥ मेवाड़की उत्तर सीमा अर्वली नाम पहाड़ थे; दक्षिण सीमा प्रमरावालों का धारनगर जो कन्नोज के आधीन था; पश्चिम में उसकी सीमा गुजरात के राज्य से लगीहुई थी; गुजरात की पश्चिम सीमा सिंधुनदी, दक्षिण में समुद्र, और मरु भूम उत्तर में ॥ वैद्य कुल के राजा बनारस में राज्य करते थे॥ हिंदुस्थान की अत्यंत दक्षिण सीमा में मदूरा के राजा बहुत काल तक प्रधान रहे; परंतु अब बर्द्धनशीलटैं-जोर के कुल के आगे आधेक अस्त होगये हैं ॥ ऐसा जान पड़ता है कि यादव दक्षिण देश के नैरूत कोण में राज्य करते थे संभव है कि वे जात के अहीर थे॥ उनके उत्तर में खान देश के बीच सोलंकी कुलवालों का राज्य था ॥ महमूद की बड़ी और पूरी चढ़ाई के समय हिंदुस्थान बहुतसे राजाओं के पास था, और उन सबों का विचार

और उद्योग अलग अलग था इसलिये इस लड़ाई के लड़ने में वे योग्य न थे॥

महमूद ग़ज़नवी जिसने मुसलमानों में से पहलेही पहल आकर हिंदुस्थान में दृढ़ता पूर्वक जय प्राप्त की सो तीस बरस की अवस्था में अपने बाप के सिंहासन और देशों का स्वामी हुआ॥ सिंहासनपर बैठने से ४ चार बरस तक वह अपने ही देश के प्रबंध और बखेड़े मिटाने में लगा रहा॥ एक सहस्र एक ईसवी संवत् में उसने हिंदुस्थानपर चढ़ाई का प्रारंभ किया और लगातार बारह १२ बेर से कम हिंदुस्थान पर न आया॥ अगस्त महीने में वह दस सहस्र १०००० मनुष्य लेकर ग़ज़नी से चला और पेशावर में अपने बाप के पुराने बैरी जैपाल के साम्हने हुआ; और हिंदुओं की सेना हारी और जैपाल आप बंदुआ हुआ और इस दूसरी हार के पीछे उसने राज अपने बेटे आनंदपाल को दिया आप जीते जी आग में जलकर संसार के दुःख से छूटा॥ महमूदने सिंधुनदी के पश्चिम के देशों में अपने मुसलमान सूबेदार नियत किये और आनंदपाल से कर ठहरा लिया परंतु छोटे छोटे राजाओंने लाहोर के नवीन राजा को संभव कि आनंदपाल के सिखाने से अपने २ बट का कर देने का निषेध किया उन फिरेहुओं में भटनेर का राजा प्रधान था, उसको

दण्ड देने के लिये महमूदने दूसरी चढ़ाई की॥ भटनेर का गढ़ जो बीकानेर के अत्यंत उत्तर में है, तीन दिन के घेरने में जीत लिया और राजाने वैरी के हाथ से बचने के लिये अपने तईं आप तलवार से मार डाला॥ एक सहस्र पांच संवत् ईसवी में आनंदपाल के सिखाने भलाने से मुलतान का दाऊद नाम सूबेदार फिर गया महमूद ने फिर अपनी सेना को सजाया और इस झगड़े उठाने-वालेपर चढ़ चला उसको आधीन करने से उसी दाऊदने उसके आधीन होना अंगीकार किया और बड़ा कर देना ठहराया॥ और एक सहस्र आठ संवत् ईसवी में महमूदने आनंदपाल को दंड करने के लिये इच्छा की क्योंकि उसने दाऊद की बात में विश्वासघात किया था और हिंदुओंपर चौथी बेर सेना चढ़ाई॥ आनंदपालने महमूद को यह बात सुनकर सब हिंदू राजाओं के पास समाचार भेजे और मुसलमानों को हिंदुस्थान से निकाल देने के लिये मिलकर उद्योग करने की बात वर्णन की॥ उज्जैन, ग्वालियर, कालिंजर, कन्नोज, दिल्ली और अजमेर के राजा उसकी सहायता के लिये चले॥ ये सेना इतनी थी कि उनके समान कभी कोई कटक मुसलमानों से लड़ने के लिये इकठा नहीं भया था॥ कहते हैं कि उस समय में स्त्रियोंने युद्ध के

खरच के लिये अपने आभूषण उतार दिये थे॥ हिंदुओं का कटक सिंधु नदी की ओर चला और पेशावर में उतरा जहां कि मुसलमान भी आये और दोनों कटक चालीस दिन तक आम्ने साम्हने पड़े रहे॥ निदान महमूदने थोड़ासा झुंड धनुषधारियों का लेकर चढ़ाई की परंतु उनको बीर गकरोंने जो बेहत और सिंधुनदी के बीच बसते और अबके जाटों के बड़े थे ऐसे पराक्रम से हटा दिया कि पांच सहस्र मुसलमान मारे गये और उनकी जय होने में संदेह रहा; परंतु जिस हाथी पर आनंदपाल हिंदुओं का सेनापति चढ़ा हुआ था वह एका एकी चौंक कर भागा इससे हिंदुओं के कटक में हुल्लड़ मच गया और वे बहुत घबराकर भागे और उनके बीस सहस्र मनुष्य मारे गये॥

दूसरे बरस में महमूदने पांचवीं बेर हिंदुस्थान पर चढ़ाई की और नगरकोट जिसको भीम कहते हैं और वह ज्वालामुखी के पास है उसे लेने की इच्छा की, इस स्थान में बड़ा द्रव्य था और यह गढ़ दृढ़ता में प्रसिद्ध था॥ हिंदुस्थान के राजाओंने उसकी दृढ़ता का भरोसा करके अपना २ भंडार रक्खा था वह महमूद के हाथ सहजही आगया और सब धन को लूटकर ग़ज़नी में लेगया जहां कि उसने

एक बड़ा जश्न किया और अपनी प्रजा को हिंदुस्थान की लूट दिखलाई॥

एक सहस्र ग्यारह सौ ईसवी सबत् में महमूद ने सुना कि थनेसर हिंदुओं का प्राचीन तीर्थ और धनवान है और हिंदू उसे ऐसा मानते हैं जैसे मसलमान मक्के को समझते हैं इसलिये उसके लूटने का उद्योग किया॥ महमूदने अपने बचन करने के अनुसार आनंदपाल से निज कटक को रोक टोक बिना जाने देने के लिये प्रार्थना की॥ और कहते हैं कि आनंदपालने कटक समेत महमूद को जिमाया बरन यह बात भी लिखी है कि हिंदू राजाने अपने भाई के साथ महमूद को यह कहला भेजा कि हिंदू थनेसर को बड़ा पवित्रस्थान जानते हैं और जो आप के मत में हिंदुओं के मत पर चढ़ाई करना धर्म था तो नगरकोट के बिगाड़ने से आपने अभी अपना मत संबंधी धर्म कर लिया और जो आप थनेसर को छोड़दीजे तो आनंदपाल प्रसन्नता से आपको थनेसर का बरसवारी कर बरसवें दिन दिया करेगा॥ महमूद के उत्तर से उसके उद्योग का समाचार अच्छी भांति जाना जाता है क्योंकि उसने यह उत्तर दिया कि मुसलमानों के मत की यह आज्ञा है कि जितना मुसलमानी मत फले और मुसलमान देव पूजा को दूर करने में जितना

उद्योग करेंगे उसी के अनुसार उनको स्वर्ग में फल मिलेगा और मुझको योग्य है कि सब हिंदुस्थान में से देव पूजा को जड़को उखाड़ डालूं॥ तो ऐसी दशा में थनेसर क्योंकर बच सकता है॥ महमूद के इस उत्तर से हिंदुओं को महमूद से कुछ भरोसा न रहा इसलिये दिल्ली के राजाने सब हिंदुओं को थनेसर के बचाने के लिये बुलाया परंतु उनके इकठ होने से पहलेही मुसलमानोंने थनेसर लेकर लूट लिया बहुधा मूरतों को तोड़ डाला और उन में से बहुत बड़ी मूरतों को गज़नी में मुसलमानों के पांओं के नीचे दबवाने के लिये भेजा और उसके साथ दो लाख हिंदू भी पकड़ करके भेजे और गज़नी में इतने हिंदू दिखाई देने लगे कि वह एक हिंदुओं का सा नगर दृष्ट आने लगा॥

थनेसर के जय होने के पीछे कई बरस तक पहले की अपेक्षा हिंदुस्थान में आनंद रहा; परंतु ईसवी संवत् एक सहस्र सतरह में महमूद एक लाख पैदल और बीस सहस्र सवार और बीस सहस्र मुसल्मान लूट के लालच से मतकी लड़ाई में इकठे हुए इन सबको साथ लेकर फिर हिंदुस्थान पर चला॥ ऐसा कहते हैं कि प्रथम उसने मेरठ नगर को जय किया और यह नगर केवल बहुतसा रुपैया देने के कारण लूट से बचा॥ यहां से वह महाबन

को गया जो बृंदावन के राजा की राजधानी थी वहां का राजा हारा और अपनी राणी को लेकर भागा और शत्रुने तत्ता होकर उसका पीछे किया इसलिये उसने अपनी राणी की पति बचाने के लिये तलवार से मारडाला और अपने तईं भी काटगेरा॥ तिस पीछे मुसलमानों की सेना मथुरा को चली जो कृष्णचंद का जन्मस्थान है यह नगर मंदिरों से भरा हुआ था जिन में रत्न चमकते थे॥ महमूदने तलवार हाथ में लिये नगर में पैठ मूरतों को बिगाड़ा और जो सोने चांदी की थीं उनको गलवा गेरा॥ थोड़ेसे मंदिर बचे या तो इस कारण से कि वे बड़े दृढ़ थे या उनको बहुत सुंदर जानकर छोड़ दिया॥ महमूदने इस नगर से ग़ज़नी के अधिपति को एक पत्र में यह लिखकर भेजा कि यहां अनगिनत मंदिरों को छोड़कर और भी सहस्रों घर हैं जो कि मुसलमानों के मत के समान दृढ़ बने हैं॥ जिनमें बहुतसे संगमरमर के हैं॥ यह नगर हजारों दीनार खरच करने से बना होगा ऐसा नगर दो सौ बरस से कमती में नहीं बन सकता है॥ मथुरा के द्रव्य और सुंदरता का वर्णन जो महमूदने किया है वह उस समय की कथा की शुद्धता जानने के लिये बहुत आवश्यक है॥ इस नगर की लूट में पांच मूरतें सोने की आईं जिनकी

आंखों में लाल थे एक और मूरत में बड़े मोल का नीलम था इनको छोड़ कर और सौ मूरतें चांदी की थीं जो बज़तसे ऊंटों पर लादी गई थीं॥

महमूद छव्वीस दिन मथुरा में रहकर ऐसी हानि करता रहा जो फिर न सुधर सके और फिर वहां से कनौज गया वहां उसने ऐसा एक नगर देखा जो मुसलमान इतिहासवेत्ताओं के अनुसार वह ऊंचाई में आकाश से बातें करता था॥ यह नगर दो सहस्र बरस से भी अधिक २ हिंदू मत का मुख्य स्थान रहा और वह पंद्रह कोस में बसता था॥ उसके चमत्कार का जो वर्णन किया है सो कठिनता से मन में आसकता है वहां के राजाओं के पास इतनी सेना थी कि जब तक पीछे की सेना के डेरे भी न उखड़ते थे इस से पहले हरावल सेना मंजिल पर पज़ंच जाती थी॥ कहते हैं कनौज में जो सदा सेना रहती थी सो इतनी थी ८०००० सहस्र मनुष्य झिलम पहने रहते थे; और तीस सहस्र ३०००० सवार झिलम पहरे रहते थे; और तीस लाख पैदल और दो लाख धनुर्धर और परसे वाले थे और इनको छोड़ एक हाथियों का दल था जिन पर बीर चढ़ते थे॥ इस नगर का चमत्कार इस बात के कहने से कुछेक जाना जायगा कि इस में केवल तीस सहस्र पनवाड़ियों की दूकाने

थीं; गवइयों के साठ सहस्र घर थे॥ इस नगर का राजा कुंवरराय था जो कि बड़ी धूम धाम से रहा करता था; परंतु उन तीनों बड़े नगरों की दशा देख के जिनको महमूद ने अभी बिगाड़ा था कुंवरराय भी उसके आधीन हुआ और कहते हैं कि वह अपनी स्त्री और लड़कों समेत मुसलमानों के कटक में आया और महमूद से बिनती करके नगर बचाया॥ महमूद केवल तीन दिन उस नगर में रहा और फिर गज़नी को चला और बहुतसे हिंदू कैदी अपने साथ लिये गया इस कारण उनकी ऐसी बहुतात हुई कि दो रुपैये से भी कमती में बिके थे॥ इस बिरियां में महमूद लूट जो लेगया उसको पचास लाख रुपैये का धन बिचारते हैं; परंतु संभव है कि इस से बहुत अधिक होय क्योंकि उस समय के सिक्के चलते हुए का प्रमाण अच्छी भांति नहीं जानते हैं॥ यह बात भी वर्णन करनी चाहिये कि इतिहासवेत्ता फरिश्तह जिसका कहना बहुधा बिश्वास योग्य कहता है कि मेरठ और मथुरा से पहले कन्नोज पर महमूदने चढ़ाई की थी परंतु ये दोनों नगर महमूद के मार्ग में थे इसलिये बिचार में आता है कि पहले उन्हींपर चढ़ाई की हो और उनके जय होने से कन्नोज का राजा भी आधीन हुआ हो॥ यह इतिहासवेत्ता भूगोल विद्या थोड़ी

जानता था और हमारे बिचार में आता है कि वह इन नगरों की चढ़ाई से कन्नोज की चढ़ाई के पहले ठहराने में भूल गया है परंतु इससे उसके शुद्ध वर्णन करने में कुछ संदेह नहीं होता॥

महमूद ने हिंदुस्थान के नगरों का चमत्कार देखने से प्रसन्न होकर अपनी राजधानी में जाकर उसको भी आभूषित करने का उद्योग किया॥ उसने संगमरमर और दालचने के पत्थर की मस्जिद बनवाने की आज्ञा दी उसकी सुंदरता देखकर हरेक मनुष्य अचंभा करने लगा॥ उसके पास उसने एक चमत्कारी बस्तुओं का स्थान और पुस्तकालय बनवाया जिसमें नाना प्रकार की भाषाओं की पुस्तकें थीं॥ हिंदुओं के स्थान देखने से वह महमारी की बिद्या में बड़ा कुशल हुआ उसने चाहा अपनी राजधानी को उन नगरों के समान बनावें जिनको उसने जय किया था॥ उसकी देखा देखी से कुलीनोंने घर बनवाने का प्रारंभ किया और हर एक इस लालसा में रहा कि मेरा सबसे चमत्कारी बने इस समय के थोड़े बरस पहले उस नगर में थोड़ेसे घर थे वे भी बुरे परंतु तिस पीछे एशिया के अत्यंत चमत्कारी नगरों की गिनती में आया और जो जो घर बनाने की बिद्या के चमत्कार हैं उन करके सुशोभित हुआ॥

हम महमूद के राज्य के कितनेही पिछले बरसों का बर्णन छोड़ देते हैं क्योंकि उनमें भी वह लड़ाई लड़ता रहा जैसे पहले करता था, उसी समय में एक बरस के बीच वह कालिंजर के राजा पर चढ़ा जिसने कन्नोज के भूपति को मारडाला था इस बात पर कि वह महमूद के आधीन होगया था; और अब हम उसकी पिछली और अत्यंत प्रसिद्ध चढ़ाई का बर्णन करते हैं॥ संवत् १०२४ ईसवी में महमूद तीस सहस्र सवार और बहुतसी स्वेच्छा से लड़नेवाली सेना ग़ज़नी से लेकर सोमनाथ पर चढ़ा जो गुज़रात देश में देव के निकट है और एक महीने में मुलतान तक पहुंचा॥ तिस पीछे उसने बीस सहस्र ऊंटोंकी सहायता से एक मरु भूमि को पार किया और मार्ग में अजमेर को लूटा॥ निदान वह सोमनाथ के निकट पहुंचा, जहां उसने एक गढ़ पहाड़ पर बना हुआ देखा, उसके तीन ओर समुद्र था और गढ़ का कोट योद्धाओं से भरा हुआ था॥ जब महमूद निकट आपहुंचा तब उन्होंने यह ढंढोरा फिरवा दिया कि हमारे देवताने उन नास्तिकों का एकही बेर सत्यानास करने को और उन्होंने जो हिंदुओं को दुःख दिया है उसका दंड देने को इस स्थानपर आकर्षण कर लिया॥ अत्यंत बिश्वास करने योग्य

वर्णन है कि यहां एक प्रकृति शिवलिंग स्थापन हुआ, जैसे बहुतसे देशों में इस देवको मूरत स्थापन हुई जब से इस देव की पूजा का प्रारंभ हुआ॥ जैसा हम अभी वर्णन कर चुके हैं कि एक महादेवकी मूर्त्ति उज्जैन में स्थापित भई जिसको महा काल कहते हैं॥ सोमनाथ में स्वायंभू अर्थात् स्वयं उत्पन्न शिव को जानकर पूजते थे॥ मुसलमानोंने देखा कि सोमनाथ का जय करना सहज नहीं गढ़रक्षकोंने बल पूर्वक रोक टोक रक्खी और आस पासके राजा अपनी २ सेना इकठी करके सोमनाथ के नीचे अपने शत्रु से लड़े निदान महमूदने जय पाई॥ जब सहायक राजाओं की सेना हार गई और पांच सहस्र मनुष्य गढ़ में के मारेगये तब ब्राह्मणोंने और सहायता से निरास होकर नगर को रीता कर दिया और नावोंपर चढ़कर एक निकटवर्तीद्वीप में चले गये॥ महमूद सोमनाथ में पैठा और मंदिर के पास पहुंच कर एक बड़ा दृढ़ स्थान देखा उसमें एक दालान था जिसमें छप्पन खंभ ऊंचे२ थे उसमें एक मूरत सोलह फुट ऊंची थी जिसमें से छह फुट धरती में गड़ी हुई थी और उसके ऊपर तंबू छह खंभों पर खड़ा था जिनमें रत्न जड़े हुए थे॥ उसने मूरत को फोड़ डाला और उसके टुकड़ों को गज़नी में भेजने और वहां जामअ

मसजिद के आगे डाल देने की आज्ञा दी इससे यह जाना जाय कि मुसलमानों के मतने जय प्राप्त की और कुछ टुकड़े जो जय के चिन्ह थे मक्के और मदीने में भेजने की आज्ञा की॥ एक बात प्रसिद्ध है परंतु उस पर कुछ विश्वास नहीं आसकता कि जब महमूदने मूरत के तोड़ने की आज्ञा की तब ब्राह्मणोंने उसकी इस आज्ञा को रोकने के लिये उसे बहुतसा द्रव्य देना किया परंतु महमूदने उनकी एक बात न मानी और मूरत के फोड़ने की आज्ञा की और जाना गया कि जितना द्रव्य ब्राह्मणोंने देना किया था उससे भी अधिक उस मूरत में से निकला॥

उस समय में सोमनाथ और सब तीर्थों से अधिक धनवान् और प्रसिद्ध था॥ कहते हैं कि एक ग्रहण में वहां दो तीन लाख मनुष्य यात्री इकठे होजाते थे॥ और उस मंदिर के खरच के लिये दो सहस्र गांव थे, और नित्य मूरत को स्नान गंगाजल से करवाते थे जो पांच सौ कोस से आता था॥ और दो सहस्र ब्राह्मण उस मंदिर के पूजारी थे और पांच सौ नाचनेवाली बेस्या थीं, तीन सौ कलावंत मंदर के थे और तीन सौ नाई यात्रियों का मुंडन करने को थे॥ मंदिर में केवल एकही दीया जला करता था उसकी ज्योत सब रत्नों पर लगती थी जो वहां जड़े थे और उनकी प्रतिमा से सारे मंदिर

में अगा जान हो आती थी॥ महमूदने वहां से इतना धन लिया कि उस समय में इतना द्रव्य किसी राज भंडार में भी न था॥ कहते हैं कि उसे इस स्थान की सुंदरता और स्थिति के फल ऐसे अच्छे दिखाई दिये कि जिनके कारण उसने उसे अपनी राजधानी बनाना ठहराया परंतु उसके सेनापतियोंने उसे नाहीं की और कहा कि यह स्थान आपके पश्चिम देश की सीमा से अत्यंत दूर है जहां बड़ा भय रहता है॥ हिंदुस्थान से चलने के पहले महमूद ने दाविशलीम नाम पुरुष को सिंहासन पर बैठाया परंतु उस नाम की उत्पत्ति नहीं जानी गई कि वह कहां से निकला है॥ महमूद सिंधु के मार्ग से ग़ज़नी को चला और सिंधु के बेहड़ में उसके कटक ने बहुत खेद पाया तिसके पांच बरस पीछे ईसवी संवत् १०३० में यह महा बिजयी अपनी तरेसठ बरस की अवस्था में मरगया॥

किसी चढ़ाई करनेवालेने हिंदुस्थान पर इतना अन्याय नहीं किया था जितना महमूदने॥ उत्तर में हिंदुओं के संपूर्ण प्रबंध में अंतर आगया उसने अच्छे से अच्छे नगर लूटे और जला दिये और अच्छे से अच्छे देश ऊजड़ कर दिये वरन सहस्रों दरिद्री यहां के निवासियों को दूर और पराये देश में बंदुवे करके लेगया तोभी बग़दाद के अधिपतिने

हिंदुओं पर उसकी जय होने के समाचार सुनके एक पत्र लिखा जिसमें उसने महमूद को मत और देश का रक्षक ठहराया॥ उसने विद्या फैलाने में उद्योग किया तोभी अपने धन और पराक्रम के अनुसार विद्याका बिबेक नहीं करता था॥ वह न बहुत लंबा था न ठिंगना था, उसके मुख पर माता के बहुत चिन्ह थे; उसका उद्योग बीरता सहित और दृढ़ पूर्बक था वह प्रति हिंसक और निर्दई था॥ परंतु उसमें ऐसे गुण इकठे हुवे थे कि जिनसे बड़ा मनुष्य हो जाता है॥ वह निश्चय करके इस योग्य था कि समय पाकर एक राज्य स्थापन करे॥ महमूद को जो दोष लगाते हैं कि वह रुपैये का लालच इस कारण नहीं करता था कि उससे बहुत काम निकलते हैं बरन केवल सूम पने से रुपैये का लालची था तो यह बात ठीक ही है॥ मरने से दो दिन पहले उसने अपने सब चांदी सोने और रत्न को जो कि हिंदुस्थान में से लूट लेगया था अपने साम्हने फैलाने की आज्ञा दी कि मैं उनके देखनेसे अपनी आंखों को सुखदूं मह-मूद थोड़ीसी बिरियां तक उनको ताका किया और फिर आंसू भर लाया परंतु उसमें से दीन और किसी को कुछ न दिया यद्यपि वह भली भांति जानता था कि मैं इसका भोग बहुत ही थोड़े काल तक

करूंगा॥ दूसरे दिन उसने सब सेना पैदल और सवार और हाथियों को अपने साम्हने लाने के लिये आज्ञा की और उनको छोड़ जाने के बिचार से फिर आंखों में आंसू भरलाया उन सबों को छोड़ कर जो कि सिंधु नदी के पूर्वतटपर हैं महमूदने उन देशों में जिनका उसने बहुधा सत्यानाश किया था कहीं दृढ़ राज्य न किया; परंतु अपनी राजधानी से जो कि सिंधुनदी के पार पहाड़ों में है कभी कभी इस रीत से हिंदुस्थान पर चढ़ाई करता था जैसे कि उकाव घोंसले से अपनी अपनी अहेर पर झपटता है और वहां से बड़े बड़े मोल की बस्तु लूट ले जाता था॥ उसका बाप सुबुकतगीं ग़ज़्नीन काबुल बलख और थोड़ासा कंदहार का राज्य उसके लिये छोड़ मरा था॥ परंतु उसने ऐसी शीघ्रता से दूर दूर तक जय पाई थी कि केवल तीस बरस के बीच उसने फारस के खाल से लेकर आराल समुद्र तक और गुरदिसतान के पहाड़ों से लेकर सतलज तक सब देश अपने आधीन करलिये यद्यपि इतना बड़ा राज्य था परंतु उसका अभिमान इस बात पर बड़ा था कि प्रतिमाओं का तोड़नेवाला कहाता हूं॥

आठवां अध्याय ॥

मसऊदने राज्य पाया—सेलजूक की चढ़ाइयां—तुग़रलबेग—शिवजी की पूजा दक्खन में फैली—श्री चन्द्रदेवने कनोज में राठोरों का राज्य स्थापन किया—मादूद सिंहासन पर बैठा—हिंदुओंने अपनी सामर्थ फिर प्राप्त की—इबराहीम और मसऊद का राज्य—ग़ोरी के कुनबे की वृद्धि—महमूद ग़ज़नवी के कुनबे का लोप॥

महमूद जौड़िया दो पुत्र छोड़ मरा दोनोंने राज्य लेना योग्य समझा॥ महम्मद नाम बड़ा बेटा दयालु और प्रेमी था॥ यद्यपि वह कोमल चित्त था और उसमें दृढ़ता न थी तोभी बाप उसही को चाहता था इसलिये महमूद ग़ज़नवी का बड़ा राज्य उसेही मिला यद्यपि यह बात प्रत्येक के बिचार से विरुद्ध थी॥ उसका भाई मसऊद पिता के समान पराक्रम और उद्योग रखता था॥ जान पड़ता है कि महमूदने पहलेही जान लिया था कि मेरे मरे पीछे दोनों भाइयों में निश्चय करके

झगड़ा होगा और उसके दूर करने की आस पर उसने मावरुलनहर का अधिकार महम्मद को दिया होगा जिसकी राजधानी जुरजान थी जो उसी देश में है जिसको पूर्वकाल में हरकानिया कहते थे और जो कि कास्पियन सागर के दक्खन पूरब ओर को है और मसऊद को अपने राज्य के अत्यंत पश्चिम के बिभाग में अधिकारी किया॥ महम्मद के सिंहासन पर बैठतेही मसऊदने उसको लिख भेजा कि राज्य के लेने की मुझे कुछ इच्छा नहीं है परंतु केवल इतनीही वांछा है कि तीनों सूबे जो कि मैंने अपनी तरवार की सहायता से लिये थे मेरेही अधिकार में रहें और मेरा नाम भी खुतबे में पढ़ा जावे परंतु इस बात को महम्मदने अंगीकार न किया और उसका भाई जो कि सबों का प्रिय था, वह सेना लेकर गज़नी की ओर चला और उससे थोड़ीसी दूर तकियाबाद पर एक बड़ी भारी लड़ाई हुई जिसमें मसऊदकी जय हुई और अपने भाई की आंखें निकलवाईं॥

जिस बरस में महमूद मरा उसी बरस में मसऊद सिंहासन पर बैठा परंतु जवानी में जो उसे आस थी सो पूरी न भई॥ उसके समय में दिन दिन राज्य घटने लगा एक गड़रियों के तुर्कमान नाम कुल के लोग जो कि सेलजूक नाम से प्रसिद्ध थे पश्चिम

के खबों पर जम बैठे और सदा चढ़ाई करने का समय तकते रहते थे और उन उद्योगी शत्रुओं की चढ़ाई जो कि सदा होती रहीं जब तक कि ग़ज़नी का थोड़ासा राज्य उनको न दिया गया ॥ हिंदुस्थानियों के लिये यह ऐसा अच्छा हुआ कि मसऊद को पूरब ओर की चढ़ाइयों और लूट का कुछ ध्यान न रहा संवत् एक सहस्र तेतीस ईसवी में मसऊद हिंदुस्थान की ओर चला और कश्मीर को आधीन किया ॥ दूसरे बरस फिर वह सेलजूक नाम जाति को पश्चिम की ओर से हटाने में लगा और उन पर जयसेन को जो कि अपने हिंदुस्थानी कटक का सेनापति था भेजा ॥ इस बात से प्रगट है कि मुसलमान उस समय में भी हिंदुओं को सेना में भरती करते थे और हिंदू सिंधुनदी पार होकर लड़ने में कुछ बुराई नहीं जानते थे ॥ ईसवी संवत् १०३६ में मसऊद ने हिंदुस्थान पर फिर चढ़ाई करने का बिचार किया यद्यपि यह बात उसके अत्यंत बुद्धवान सभासदों के बिचार से बिपरीत थी ॥ उन्होंने कहा कि केवल सेलजूकियों के दूर करने के लिये संपूर्ण कटक चाहिये ॥ उसने हांसी के दृढ़ गढ़ का जो कि जमना से पश्चिम को तीस कोस पर है घेरा करके जीत लिया और वहां के मंदिरों को ढाकर संपूर्ण धन लेगया फिरते समय उसने अपने पुत्र को

मुलतान का सूबेदार किया; जान पड़ता है कि यह मुलतान देश दृढ़ता पूर्बक ग़ज़नी के राज्य में मिल गया॥ मसऊद के पीछे उसके बैरी सेलजूकों की सामर्थ बहुत बड़ी होगई थी और उसके सभासदों के कहने के अनुसार वे चैंटी से अजगर होगये थे॥ मसऊद को बड़े जाड़े पाले में उनसे युद्ध करने के लिये मावरूलनहर में जाना पड़ा जहां कि उसने कई युद्ध किये पर निदान हारगया॥ तुग़रलबेग नाम सेलजूकने ग़ज़नी तक उसका पीछा किया और उस नगर को लेलिया और राजा का इस्तबल लूट लिया और थोड़ासा नगर भी बिगाड़ डाला॥ उन चढ़ाइयों के रोकने के लिये मसऊदने सेलजूकों को अपने देश में रहनेके लिये एक स्थान देना अंगीकार किया इस पर वे प्रसन्न होगये परंतु समय पाकर वे फिर चढ़ाई करने लगे मसऊदने अपने तईं देखा कि इनका सामना नहीं कर सकता इसलिये नई सेना भरती करने के हेतु हिंदुस्थान को चलने का बिचार किया॥ उसने गढ़ों में से सब रूपैया इकठा करके ऊंटों पर लदवा कर लाहोर को गमन किया॥ और संकष्ट के समय में अपने भाई महम्मद को बुलाया जिसकी आंख नौ बरस पहले उसने फुड़वा गेरी थी॥ जब कि वह सिंधु नदी के तट पर पहुंचा तब उसी का कटक उसका भंडार लूटने लगा और उसके

क्रोध से डरकर उसके भाई को राजा बनाया॥ दोनों भाइयों का स्थान आप से आप पलट गया महम्मद बंदीगृह में से निकल सिंहासन पर बैठा और मसऊद को सिंहासन से उतार कर बंदीगृह में रक्खा और दस बरस राज्य करके ईसवी संवत् १०४० में वहीं मारा गया॥

उस समय से शिव की पूजा दक्षिण तक फैलने लगी सोमनाथ के बिगड़ने से थोड़ेसे काल पहले सोलंकी कुलने गुजरात और खान देश को संपूर्ण रूप से जीत लिया था और उसी कुल के दूसरे कुनबे ने दक्खन में बहुतसा देश लिया था और उस कुल के बहुतसे राजाओं में से किसी राजा के समय में एक पुरोहितने जो कि शिव को मानता था अपने बहुत चेले किये और दक्खन से जैन के मत को बहुत सा दूर करके इस देवता के मान्नेवालों या कि लिंगातियों की पूजा फैलाई॥ दक्षिण के राजाने इस नवीन पूजा के रोकने की इच्छा की और उसको शिव के पूजनेवालोंने क्रोधित होकर मारडाला॥

हम पहले कह आये हैं कि कनौज का राजा बुद्धवाली जानकर महम्मद गज़नवी के आधीन हो गया था इस कारण आस पास के राजा उसके बैरी होगये और उन्होंने उस पर चढ़ाई करके उसको मारडाला क्योंकि उसको उन्होंने हिंदू रहने के योग्य

न जाना था॥ वह कोरह के कुलका अंतका राजा था उसी राजा के मारने का पलटा लेने के लिये महमूद ने हिंदुस्थान पर नौवीं बेर चढ़ाई की थी अब कन्नोजका सिंहासन राजा बिन था इसलिये उसके चाहनेवालों के लिये समय आगया निदान श्रीचंद देवने दक्षिण में से जैन मत दूर करने के कुछ बरस पहले केवल अपनेही पराक्रम से कन्नोज के राज्य को जय किया था॥ वह कहता था कि मैं सूरजबंशमें हूं और इस बात के बहुतसे प्रमाण हैं कि उसी राजा के समय से कन्नोज के सिंहासन पर राठोर बैठते थे और इससे पहले उन्होंने कन्नोज का देश भी नहीं लिया था और उस समय में सोलंकी कुल के एक घरानेने वारंगोल का राज्य स्थापित किया जो दक्षिण में है और उस राज्यने मुसलमानों के इतिहास में बड़ा नाम पाया॥

अब हम फिर मुसलमानोंका इतिहास कहा चाहते हैं मसऊद का बेटा मादूद जो कि बल्ख का सूबेदार था अपने बाप के मारडालने के समाचार पाते ही गज़नी की ओर चला जहां कि लोगोंने उसको सिंहासन पर बैठादिया फिर सिंहासन पर बैठतेही वह महमूद अंधे के बेटों से एक लड़ाई लड़ा जिसमें वह जयवंत भया अब केवल उसका एक ही शत्रु अर्थात् उसका भाई रहा जो कि

अपनी तरवार की सहायता से सिंहासन पर बैठा चाहता था॥ उन दोनों भाइयों में एक युद्ध हुआ जिस में मादूद की जय हुई॥ उसका भाई थोड़े दिनों पीछे शयनस्थल में मरा हुआ पाया॥ इन घरके झगड़ों से और पश्चिम में तुर्कमानों के पराक्रमी होने से हिंदुओं को फिर साहस हुआ मुसलमान इतिहासवेत्ता कहता है कि लोमड़ी की भांति वे पहले अपने भिटों से पांव बाहर न निकाल सकते थे परंतु अब सिंह बन गये॥ दिल्ली के राजाने बहुतसी सेना इकठी की और थनेसर और हांसी नगर फिर लेलिये और नगर कोट भी चार महीने तक घिरा रहा तिस पीछे हाथ आया, मंदिर फिर बनाये और मूरतें जो मुसलमानों से फोड़ी गई थीं उनके स्थान में और नवीन मूरतें स्थापित भईं और ब्राह्मणों के उपायों से उनको फिर वैसे ही मानने लगे हरेक ओर से सहस्रों मनुष्य पूजा के लिये इकठे हुये राजाओंने भेंटें रक्खीं और मंदिरों में फिर उतना ही द्रव्य इकठा हो गया जितना मुसलमानों की लूट से पहले था॥ उस समय से उनका मन बढ़ गया उन्होंने लाहोर पर चढ़ाई करके घेर लिया जो हिंदुस्थान में मुसलमानों की राजधानी थी वह सात महीने तक घिरा रहा परंतु निदान घिरेहुओंने निकल कर बड़े पराक्रम से हिंदुओं को हटा दिया॥

जाना जाता है कि वे देश जो कि हिंदुओंने फिर लेलिये थे मादूद के समय तक उन्ही के आधीन रहे मादूद का राज्य नौ बरस तक रहा ईसवी संबत् १०४९ में पूरा ऊआ॥

मादूद के पीछे नौ बरस में लगातार चार राजा गज़नी के सिंहासन पर बैठे जिनके नाम लिखने कुछ आवश्यक नहीं॥ ईसवी संबत् १०५८ में इब्राहीम नाम बादशाह सिंहासनपर बैठा॥ कहते हैं कि वह बऊत नेमी और विद्यावान था और अपने धर्म पर बऊत चलता था उसने कुरान को अपने हाथ से कई बेर लिखा और सुंदरलिप की उन नमूनो का जो कि राजा की अपेक्षा लेखक को बड़ा नाम है मक्कह और मदीनेके पुस्तकालय में रखवाया॥ सेलजूक तुर्कमान जो कि उसके घराने के बड़े शत्रु थे फिर चढ़ाई करने लगे और उसने वे सब देश जो कि तुर्कमानोंने जय किये थे उन्हें इस बचन पर दे दिये कि आगे तुम और हाथ न बढ़ाना॥ उन्होंने इस बात को मान लिया और उस पर दृढ़ रहे॥ उन पश्चिम के बैरियों से छुटकारा पाकर उसने पूरब में हिंदुओं के उद्योग रोकने के लिये सेना सजाई॥ कहते हैं कि वह हिंदुस्थान में इतनी दूर तक चला आया जितना उसका कोई पूर्वजन आया था और एक लाख से अधिक हिंदुओं को बंदुवे

करके ग़ज़नी में लेगया उसका राज्य चालीस बरस तक रहा और ईसवी संवत् १०९८ में हो चुका॥

इबराहीम के पीछे उसका माऊद नाम बेटा बादशाह ज़ुआ जो दयावान और सुशील था उसके सोलह बरस के राज्य में न कोई घर का झगड़ा उठा न किसीने बाहर से चढ़ाई की वह अपने पुत्र को गद्दी पर छोड़ गया वह राज्य पातेही अपने भाइयों को बंदीगृह में भेजने लगा परंतु बहराम अपने मामा संजर सेलजूक तुर्कमान के पास भाग गया और उससे सहायता मांगी इस बात को उसके मामाने झट अंगीकार किया॥ तुर्कमानों के एक कटक ने ग़ज़नी में आकर आरसलेन को निकाल दिया॥ परंतु आरसलेन फिर आकर लड़ा और अपना सिंहासन लेलिया फिर निदान तीन बरस राज्य करके मारा गया॥ अब बहराम बिना झगड़े राज्य का स्वामी ज़ुआ उसने बड़ी बुद्धवानी सुशीलता से राज्य किया और विद्यावानों को बज़ुत मानता था उसका राज्य ३५ बरस तक रहा और अपने राज्य के अंत में पराक्रमी कुनबे ग़ैार के साथ लड़ने में लगा उसने थोड़ेसे काल पीछे ग़ज़नी के राज कुल को सत्यानाश करके सब राज्य लेलिया कुतुबुद्दीन मुहम्मदग़ैारीने बहराम की बेटी से विवाह कर लिया था परंतु वह किसी अपराध से सब लोगों के साम्हने मारा गया

था॥ उसका भाई सैफुद्दीन उसका पलटा लेनेके लिये चला और बहराम को निकाल आप गज़नी के सिंहासन पर हो बैठा परंतु वह नगरनिवासियों को प्रसन्न न रख सका क्योंकि वे अपने पूर्व राजा का होना चाहते थे बहरामने वह दशा देख झट पट गज़नी में आ अन्याई को पकड़ लिया और उसका मुंह काला करवा बैल पर चढ़वा नगर के चारों ओर फिरवा सिर कटवाया॥ उसका भाई अलाउद्दीन यह समाचार सुनकर पलटा लेने के लिये एक बड़ी सेना लेकर गज़नी पर आया और बड़ी घोर लड़ाई हुई जिसमें बहराम संपूर्ण रूप से हारा और हिंदुस्थान में भाग आया यहां उस पर बड़ी आपत्ति रही और ईसवी संवत् ११५२ में मरगया॥

इस रीति से गज़नी का कुल सिंधुनदी के पश्चिम के देशों में से दूर हुआ बहराम का बेटा खुसरो लाहोर में आया उसने अबस होकर लाहोर को अपनी राजधानी किया॥ महमूद के देशों में से उसकी संतान के पास केवल हिंदुस्थान के देश रहे॥ अलाउद्दीन गज़नी में घुसा और उसने उस बड़े नगर को सात दिन तक लूटा और बड़े बड़े सुशील और विद्यावानों को फ़ीरोज़ नाम पहाड़ में लेगया जहां गौरियों का घर था और वहां उन्हें मारडाला॥ इस भूपालने ऐसी कटा और लूट की कि जिसके कारण उस

को लोग संसार दाहक कहते थे॥ खुसरो सात बरस राज्य करके लाहोर में मरगया उसका बेटा खुसरो मलिक नाम सिंहासन पर बैठा और उसने हिंदुस्थान के सब उन देशों को जो एक बेर भी किसी समय में उसके घराने के आधीन रहे थे उन सब को जीत लिया परंतु ग़ज़नीवालों का समय अब बिगाड़ का था॥ अलाउद्दीन को उसके भाई महम्मद गौरीने सहायता दी, इसलिये कि वह ग़ज़नी ही के देश पर संतोष न करके हिंदुस्थान के देश भी अपने राज्य में मिलाया चाहता था॥ ईसवी संबत् ११८० में वह लाहोर को चला परंतु उसको जय न करसका और उसको खुसरो मलिक से मिलाप करना पड़ा॥ कहते हैं चार बरस पीछे मिलाप जाता रहा और महम्मद ने दूसरी बेर लाहोर को घेरा परंतु वह फिर निरास हुआ॥ थोड़े दिनों पीछे फिर उसने तीसरी बेर चढ़ाई की और केवल छल और अधर्म से जय पाई॥ उसने खुसरो के पास मिलाप करने का समाचार भेजा और उसने सच्चापन दिखाने के लिये खुसरो के बेटे को उसके पास भेज दिया जिसको पहली बेर मिलाप के समय ओल में लिया था॥ वह बृद्ध बादशाह अपने बेटे से मिलने को नगर के बाहिर चला महम्मद गौरी बीस सहस्र सवार लेकर शीघ्र घूम के आया एकाएकी खुसरो के डेरे को घेर लिया तब

खुसरोने बचने का कोई उपाय न देख अपने प्रभु से विनती की महम्मदने लाहोर को अपने आधीन करने के लिये कहा जिसको खुसरोने रीता करदिया और इस रीति से ईसवी संवत् ११८७ में ग़ज़नी-वालों से ग़ज़नी का राज्य ग़ोरी के कुल के हाथ लगा ॥

नवां अध्याय ॥

बनारस के राजा—कन्नौज के राठौर—दिल्ली के तवार—घर के झगड़े—जयचंद का अभिमान—पृथ्वीराज जो दिल्ली का सब से पिछला राजा था—भोजराज—महम्मद गैारी का कुल—उसकी चढ़ाई हिंदुस्थान पर—कैगर की लड़ाई—कन्नौज और गुजरात की जीत—महम्मद का मरण ॥

महम्मद गैारी जिसने हिंदुस्थान में मुसलमानों का दूसरा राज कुल स्थापन किया और जो कि महमूद गज़नवी से भी अधिक हिंदुओं का बड़ा शत्रु था उसके इतिहास और चढ़ाइयां वर्णन करने से पहले यह आवश्यक है कि हम हिंदुओं के गज़नवी राज्य के पिछले समय का संक्षेप लिखते हैं ॥

उन बातों से जाना जाता है जो कि देखन में सत्य हैं कि महम्मद गैारी के समय से कुछेक काल पहले कन्नौज के राजा उन देशों के राजाओं में जहां कि गंगा बहती है सबसे अधिक पराक्रमी न थे ॥ लिखा है कि बनारस के राजा जिनके कुल की पदवी पाल थी तिनका बड़ा अधिकार था और अचंभा है कि वे

बुध के मत को मानते थे ईसवी संवत् १०७० में भूपाल के पीछे जो कि उस कुल का पहला राजा था राजा पाल गद्दी पर बैठा जिसके बेटे सूरजपालने उड़ीसे तक का देश लेलिया यह कुल महम्मद गौरी की चढ़ाई के थोड़ेसे काल पहले समाप्त होचुका था और आस पास के राजाओं ने उसके देश पर अधिकार कर लिया था लछमन सिंह बंगाले के पिछले राजा ने बहार और गोड़ को लेलिया और दूसरे भाग को कन्नोज के राजा ने अपने आधीन कर लिया और उसने अपना कोई बैरी न देख गौरी से ऐसा एक व्यवहार रक्खा कि जिसके कारण उसका राज्य और कुल डूब गया॥ पूर्व लिख आये हैं कि कोरा के कुल में कन्नोज का सब से पिछला राजा मुसलमानों के आधीन होजाने के कारण मारा गया और चन्द्रदेवने कन्नोज के राज्य को लेकर वहां राठोरोंके कुल को स्थापन किया॥ उनके समय से लेकर जयचंद के समय तक जो कि उस कुल का सबसे पिछला राजा था उस कुल के पांच राजा सिंहासन पर बैठे॥

और हमने यह भी वर्णन किया है कि तवार के कुलने ईसवी ९ वें शतक में दिल्ली के राज्य को लेलिया जो कि चिरकाल से बिना स्वामी पड़ा था और उन्हों की इतनी सामर्थ बढ़ गई थी कि उत्तर के सब राजाओं में उनको बड़ा समझते थे अनंगपाल

उस कुल के अंत के राजा का नाना था उसके दो लड़कियां थीं जिनमें से एक तो सोमेश्वर चोहान को ब्याही गई जो कि आधीन अजमेर का राजा था और दूसरी कन्नोज के राठोर राजा को दीगई थी जब कि कन्नोजवाले दिल्ली के राजाओं को दुखी करते थे तब चोहान सदा उनकी सहायता करते थे और जो कि सोमेश्वरने दिल्ली के राजा की अति प्यारी बेटीसे बिवाह किया था इसलिये उसके बेटे पृथ्वीराज को उसके नाना ने अपने पीछे दिल्ली के सिंहासनपर बैठाने के लिये गोदलिया॥ आठ बरस की अवस्था में उसे गद्दीपर बैठाया॥ कन्नोज के राजाने जो कि बनारस के राजकुल के नष्ट होने से बनगया था दिल्ली के सिंहासन पर छोटे से लड़के के बैठने का निषेध किया और उस बात में गुजरात के राजाने उसकी सहायता की जो कि दिल्ली और कन्नोज के झगड़ों में बहुधा कन्नोज का साथी रहता था इस कारण यह जान पड़ता है कि चोहान दिल्लीवालों की ओर रहते थे और यह कन्नोजवालों की॥ इस भांति जिस समय महम्मद गोरी उत्तर हिंदुस्थान में से हिंदुओं का नाम मिटाया चाहता था तब हिंदू राजाओंने अपने स्वाधीन होने और मतकी रक्षा करने के लिये मेल मिलाप रखना चाहिये था पर वे आपस में छुपा छुपा बैर रखते थे या कि प्रत्यक्ष में बैर

भाव करते थे॥ उत्तर हिंदुस्थान में दो भाग थे एक में गुजरात और कन्नोज और दूसरे में दिल्ली और अजमेर के चोहान और चीतोड़ के राजा थे॥ उन झगड़ों के कारण से वे अपने शत्रु के आधीन ड़ुवे और इस भांति हिंदुस्थान में सदा से यह चाल चली आती है कि हिंदू एक दूसरे पर भरोसा नहीं रखते हैं इस लिये अपने सबके भले में एक नहीं होजाते हैं॥ वही अविश्वासपना अब तक हिंदुस्थान में चला आता है जिसके कारण मुसलमानोंने सहज ही उनको जय करलिया॥ और हम बड़ुत थोड़ा संदेह करते हैं कि केवल इसी कारण से अन्य देश के राजा का साम्हना करना या पराये राज्य के उलटा देने की सामर्थ नहीं हिंदुस्थान में है॥ परस्पर का मिलाप स्वाधीन होने का कारण है॥ और जब तक कि यह बात हिंदुस्थानियों में नहीं हो तब तक हिंदुस्थानी निश्चय करके स्वाधीन न होंगे॥

कोई कोई इतिहासवेत्ता कहते हैं कि कन्नोज के सब से पिछले राजा जयचंद्रने दिल्ली के राजा से शत्रुभाव करके हिंदुस्थान पर चढ़ाई करवाने के लिये महम्मद ग़ोरी को बुलाया था परंतु यह ऐसे छल का कर्म है कि बिना कोई प्रमाण हम उसका विश्वास नहीं कर सकते॥ परंतु इस में कुछ संदेह नहीं है कि जयचंद हिंदुस्थान के सब राजाओं में मुख्य था

और अपनी इस बड़ाई के लिये उसने अश्वमेध यज्ञ करने की इच्छा की॥ यह पुरानी कहनावत है कि जिस राजाने इस यज्ञ करने का विचार किया चाहे वह पूरा हुआ या न हुआ पर उसपर निश्चय कोई न कोई आपत्ति आई॥

अवध के दशरथ राजाने अश्वमेध यज्ञ किया था तिसके थोड़ेही दिनों पीछे उसे अपने पुत्र रामचन्द्र का वियोग हुआ जिन को बन बास हुआ था और वहां उनकी स्त्री हरी गई॥ युधिष्ठिरने भी यही यज्ञ किया था, उसे अपना राज्य छोड़ना पड़ा और देश निकाला पाकर बरसों तक हिंदुस्थान के देशों देशों में भ्रमता फिरा॥ और जयचंद जो इस यज्ञ करनेवालों में सबसे पिछला राजा था उसने शीघ्र अपना जीव और राज्य खोया॥

जब कि कन्नोज के राजाने अश्वमेध यज्ञ के समाचार सर्वत्र भेजे तब उत्तर हिंदुस्थान के सब राजा उसकी सेवा में उपस्थित हुवे परंतु पृथ्वीराजने जो कि दिल्ली में चोहान के कुल का केवल एक ही राजा हुआ था अपने बैरी की बड़ाई न मानी और चीतोड़ के राजाने उसकी बड़ी सहायता की॥ इस महा यज्ञ में आवश्यक है कि कैसाही छोटे से छोटा काम होय राजाओं के हाथ से किया जाता है॥ और जो कि दिल्ली के राजाने अपने आने का निषेध किया इस

लिये उसके स्थान में एक उसकी सुवर्ण की मूरत बनाके पौरिये की भांति द्वार पर खड़ी की॥ इस महा यज्ञ में कन्नोज के राजाने अपन देश के प्राचीन व्यवहार के अनुसार स्वयंबर किया कि उसकी बेटी उन राजाओं में किसी को वरे ॥ कहते हैं कि पृथ्वीराज जो कि बड़ा बीर था और चढ़ाइयों के करने में बड़ा प्रसन्न होता था कन्नोज के राजद्वार में पहुंचा और कन्नोज के राजा की बेटी को मोहित करके जीत लेगया परंतु यह बात निश्चय नहीं होती है कि पृथ्वीराज उस ही समय में या उसके पीछे कन्नोज में गया था॥ ऐसी ऐसी अज्ञान और आलसपन की बातों में हिंदुस्थान के राजा अपना समय लगाया करते थे ऐसे समय में महम्मद गौरी आन पहुंचा जो हिंदुस्थानियों से पलटा लेने की इच्छा करता था॥

इस मुसलमानों की चढ़ाई के वर्णन करने से पहले भोजराज के कुछेक गुण कहा चाहते हैं जो कि निश्चय करके इस पिछले काल में बड़ा हिंदू राजा था वह परमरा के कुल का था जो कि अब तक उज्जैन और धार नगर में राज करते हैं परंतु पहली सी धूम धाम उनके राज्य की अब नहीं रही है॥ उस छोटे देश के सिंधु नाम राजा के कोई पुत्र न था उसने मुंजा नाम पेड़ों के झुंड में एक छोटासा लड़का पड़ा हुआ पाया जिस को उसने गोद लिया और मुंजा नाम

रक्खा॥ सिंधुने एक अलग स्थान में मंझा से कहा कि मैंने तुम्हें परमरा के कुल में गोद लिया था परंतु मंझा की राणीने यह बात सुनी जो वहां छिपी ऊई बैठी थी और मंझाने इस बात के प्रगट न होने देने के लिये उसका सिर काट डाला और कहा कि जो बात छह कान तक पऊंची सो छिपी नहीं रहती तिस पीछे सिंधु के एक पुत्र जन्मा उसका नाम सिंधुला रक्खा॥ थोड़े दिनों पीछे मंझा को सिंहासन पर बैठाया और सिंधु अपने पुत्र सिंधला को उसे सोंप आप दक्खन को चला गया परंतु उस पशुने गुण पर कुछ ध्यान न करके उसकी आंखें निकलवा डालीं॥ भोज सिंधुला का बेटा था और ज्योतिषियों ने कहा था कि भोज राजा होगा॥ इस बात से मंझा का चित्त बऊत जला॥ इस लिये उसने भोज के मारने की आज्ञा दी परंतु छिपा छिपी उसकी आज्ञा नहीं की गई॥ थोड़े दिनों पीछे इस अपराध से उसको अत्यंत उदासी ऊई; परंतु इस बात के सुनने से कि लड़का नहीं मारा गया अति आनंद ऊआ॥ तब वह धारानगर का राज्य भोज को देकर बऊतसी सेना लेकर दक्खन में इस आस पर चला गया कि वहां अपने लिये एक नवीन राज्य स्थापन करूं; परंतु वहां वह हार गया और महा कष्ट में पड़ा॥ भोज ने अपने बड़ों के सिंहासन पर बैठ के गुण गाहकता बड़ी की इससे उसका राज्य बड़ा

प्रसिद्ध हुआ॥ उसकी राज सभा में विद्यावान लोग इकट्ठे होने लगे जो विक्रमादित्य की सभामें आ भरे थे॥ कोई कोई ऐसा अनुमान करते हैं और संभव भी है कि वह विक्रम के कुल में था॥ प्रत्येक दिशा से विद्यावान लोग उसके यहां आये और उसने राजाओं की भांति उनका बड़ा आदर मान किया॥ कवियों ने उसके राज्य को प्रसिद्ध किया है और उसका स्मरण अब तक चला आता है भोज का नाम सब पंडितों में ऐसा फैल रहा है जैसा रामचंद्र और यधिष्ठिर का है यद्यपि वे यह बात नहीं जानते हैं कि सात सौ बरस हुये वह था और गुण ग्राहक पने में सब से पिछला नामी राजा था॥

अब हम महम्मद गौरी के कुल का विषय लिखते हैं जिसने हिंदुस्थान में मुसलमानों का दूसरा कुल स्थापन किया॥ उसने उत्तर हिंदुस्थान के सब राजाओं का राज्य धूल में मिला दिया॥ मुसलमान कवि और इतिहासवेत्ताओं ने इसको प्रशंसा की रीत से प्राचीन और प्रतिष्ठित ठहराया है परंतु अधिक सच्ची पोथियों से जाना जाता है कि निस्संदेह एजु-दीनहुसेन ने उस कुल की प्रतिष्ठा बढ़ाई॥ वह गज़नी के माहूद नाम राजा का नौकर हुआ और उसका ऐसा प्यारा होगया कि माहूदने उसको गौर का अधिपति बनाया और अपनी बेटी से उसका विवाह

कर दिया उसके सात पुत्र हुए बहुधा सात तारे कहलाते थे उनमें से दो लड़के ऐसे हुवे जिन्होंने नवीन राज्य बनाये॥ उनमें से कुतबुद्दीन नाम लड़का ग़ज़नी के बहराम नाम राजा की लड़की से बिवाह करके राजा कहलाया और फ़ीरोज़ खोहस्थान को अपना राजधानी किया॥ बहरामने उसको मरवा डाला इसी कारण से गौर और ग़ज़नी के कुल में झगड़ा उठा और ग़ज़नीवालों के नष्ट होने तक वह झगड़ा बना रहा॥ ऐज़ुद्दीन कुतबुद्दीन का बाप था जिसने कि ग़ज़नी और गौर के सिंहासन पर बैठ कर अपने छोटे भाई महमूद को अपना सेनापति बनाया और यह बात निस्संदेह है कि उस छल के समय में महमूद यद्यपि प्रत्येक चढ़ाईयों में जयवंत होता रहा तो भी अपने निर्बल भाई के मरण काल तक अर्थात् उनतीस बरस उसके आधीन रहा॥

महम्मद गौरीने खुसरो मलिक नाम ग़ज़नी के अंत के राजा को बंदुवा करके ईसवी संवत् ११८१ में हिंदुस्थान पर चढ़ने का उद्योग किया॥ और हिंदुस्थानियों के लिये यह ऐसी एक आपत्ति की आंधी चली जो हिंदुस्थानी राजाओं को उनके सिंहासन से उड़ा लेगई और एक मुसलमानों की जात जब दिल्ली के सिंहासन पर बैठी तब उसका अंत भया॥ पढ़नेवालों को स्मरण होगा कि महम्मद ग़ज़नवी के सिंहासन पर बैठनेवा-

लों ने जो कि बहुधा निर्बल और निरुद्योगी थे केवल मुलतान और लाहोर के सूबों पर संतोष किया था जिनको कि उस कुल के आदि पुरुषने हिंदुओं से छीन लिये थे, यद्यपि वे गंगा के तीरवर्ती देशों पर कभी कभी चढ़ाई करते थे परंतु उन्होंने कोई और हिंदुस्थानी सूबे अपने देश में नहीं मिला लिये थे। हिंदू राजा अपना राज्य करते थे और जब कभी मुसलमानी कटक आता तब माल बंदी देते और जों जों गज़नी के राजाओं की सामर्थ घटती जाती थी तों तों उनका पराक्रम बढ़ता जाता था॥ जिस समय कि गज़नी का कुल गौरियों की चढ़ाई से नष्ट हुआ तब हिंदुस्थान में मुसलमानों की चढ़ाई करने का कुछ चिन्ह न रहा था परंतु सिंधु नदी पर के सूबे जिनको कि हिंदू कभी फेर नहीं लेसके हिंदुओं के आधीन थे, मुसलमानों ने जो जो हान की थीं, वे फिर सुधर गईं थीं, देश फिर बस गये थे द्रव्य और मूरतें पहले की सी फिर हिंदुस्थान में भर गईं थीं॥ और हिंदू राजा अपनी पूर्व चाल के अनुसार आपस के बैर में लगे परंतु महमूद से भी अधिक एक और नवीन शत्रु होनेको उपस्थित था और जो उत्तर में सब हिंदू राज कुलों को नष्ट करा चाहता था॥

दिल्ली के अज्ञान और वीर पृथ्वीराज राजा ने कनोज के कुल से निरर्थक लड़ाई कर करके अपनी

सामर्थ घटा गेरी थी, उसके एक सौ आठ सेनापति थे उन में से चोंसठ इन व्यर्थ झगड़ों में मारेगये थे; परंतु तो भी जब कि ईसवी संबत् ११९१ में महमूद पहली चढ़ाई में बितंडा नगर को लेकर अपने पुरखाओं के देश को फिर चला, तब पृथ्वीराजने सब अपने और अपने सहायकों का कटक इकठा किया जो गिनती में दो एक लाख घोड़ों का होगा और उस नगर को फिर लेने के लिये चला॥ महम्मद उसके आने के समाचार पाकर अपनी सेना लेकर नगर के बचाने को चला और एक स्थान पर जिसे तिरोरी कहते हैं जो थनेसर से सात कोस था दोनों ओर के कटक की मुट भेड़ होकर लड़ाई होने लगी, महम्मद ने बहुत बीरता दिखाई परंतु उसकी सेना भागने लगी निदान वह अपनी रणभूमि छोड़ भाग गया॥ जब वह अपने ग़ोर देश में पहुंचा उसने सब सेनापतियों को जिनके कदराहट से उसने लड़ाई हारी थी दंड किया हिंदू बितंडा को गये और यह नगर एक बरस के घेरे के पीछे हाथ आया॥

कहते हैं कि इस जय के पीछे पृथ्वीराज ने अपने राज्य का ध्यान छोड़ दिया और आप आलसी बन गया और रणवास में रहने लगा। परंतु उसके शत्रु महम्मद की चाल इससे बहुत बिपरीत थी वह इस हार से बहुत सोच में रहता था और अपने मित्रों से

कहता था कि न कभी मैं आराम से सोता हूं और जागते में कभी बिना चिंता में न रहता हूं और मेरा बिचार यह है इन देवपूजकोंने जो मेरी प्रतिष्ठा बिगाड़ी है उसे फिर प्राप्त करूं और नहीं तो इसी बिचार में अपना त्याग करूं॥ निदान महम्मदने अपनी सेना को इकठा करके और किसो अपने शिक्षक का कहना मानके उन कलंकी सेनापतियों को फिर अपने अपने काम पर स्थापित किया और तातार देश की जंगली जातियों के बीस सहस्र सवार चुनेहुवे लेकर चला और सिंधुनदी के पार हुआ॥ पहले उसने पृथ्वीराज को दूत के हाथ कहला भेजा कि तुम मुसलमानों का मत अंगीकार करो नहीं तो तुमको इसके बड़े फल मिलेंगे॥ पृथ्वीराज ने इसका उत्तर बड़े अभिमान से दिया परंतु वह अनेक प्रकार के आनंद में ऐसा मगन रहता था कि जो उसका साला चीतोड़ का राजा परिश्रम न करता तो संभव कि वह मुसलमानी सेना से जो कि हिंदुस्थान पर टीड़ीदल सा चला आता था घिर जाता॥ समारसी चितोड़वाला जो कि उस समय के बीरों में सब से अधिक गिना जाता था दिल्ली की सहायता के लिये तीन सहस्र चुनी हुई सेना लेकर आया जिसमें से बहुत थोड़े फिरके गये होंगे॥ गुजरात और कनौज के राजा जो उत्तर में बहुत पराक्रमी थे वे उस लड़ाई

का तमासा देखने में रहे और उन्होंने दिल्ली के राजा को जिससे कि वे अत्यंत बैर रखते थे इस झगड़े का दुख सहने के लिये छोड़ दिया और उस बात पर कुछ ध्यान न दिया कि दिल्ली के जय होजाने के पीछे शत्रु के और हमारे बीच में कोई रोक टोक बाकी न रहेगी यद्यपि कन्नौज और गुजरात के राजा उन सबों के कष्ट को दूर करने में संगी न हुवे तो भी दिल्ली के झंडे के नीचे डेढ़ सौ सेनापतियों से कमती इकठे न भये थे और कहते हैं कि पैदल सेना छोड़ कर कम से कम तीन लाख घोड़े और तीन सहस्र हाथी थे॥ उन सब राजाओंने छेड़ छाड़ की रीत से महम्मद को कहला भेजा कि तुझ को आज्ञा है कि तू उलटा फिरजा तेरी कोई रोक टोक न करेगा महम्मद ने इसके उत्तर में कहला भेजा कि मैं केवल अपने भाई का नायब हूं और तुम्हारे कहने के अनुसार अपने भाई को आज्ञा मानूंगा हिंदुओं ने उस उत्तर से निस्संदेह होकर संपूर्ण रात आनंद में खोई॥ कागर नदी दोनों सेनाओं के बीच में थी महम्मद उनके असावधान होने के कारण अवसर पाकर रात को सेना सहित पार उतर आया और प्रात कालही जब तक कि शत्रुओं की खुमारी भी नहीं मिटी थी कि लड़ाई करने लगा, वह हिंदुओं के सामने एक एक टोली लाकर लड़ाता गया और दिन

ढले जब वे थक गये थे आप अपनी शेष सेना लेकर जो कि अब तक नहीं लड़ी थी उनके सनमुख ज़ुआ और सबको हराता गया; हिंदू हारते ही भागे, चीतोड़ का राजा अपने राजपूतों को लेकर बड़ा लड़ा और मारा गया और दिल्ली का राजा शत्रु के हाथ पकड़ा गया और मुसलमानों ने हिंदुओं के कटक में से बड़ा द्रव्य लिया उस हार के समाचार सुनने से बड़े बड़े नगर मुसलमानों के आधीन हुवे महम्मद आपही चीतोड़ में गया और उसे जय किया और वहां के सहस्रों निवासियों को कटा को और फिर वह दिल्ली को घेरने के लिये चला परंतु वहां का राजा जो कि पहले राजा का बेटा था और उसके मरने के पीछे सिंहासन पर बैठा था उसके आधीन ज़ुआ, इस कारण से उसने उस नगर को लूट से बचादिया और महम्मद अपने प्यारे संगी कुतुबुद्दीन को जो कि पहले उसका दास था बज़ुतसी सेना देकर और दिल्ली के निकट छोड़कर आप गज़नी को चला और मारग में प्रत्येक प्रसिद्ध स्थान को लूटता गया॥ कुतुबुद्दीन अपने स्वामी की भांति बहुत उद्योगी और बुद्धवान था उसने झट मेरठ को अपने आधीन करके तिस पीछे राजधानी को लेकर उसको निज राजधानी बनाई इस कारण से यह कहनावत चली आती है कि दिल्ली का राज्य एक दासने स्थापन

किया था निदान इस भांति हिंदुओं का राज्य नष्ट होगया ॥

कनोज और गुजरात के राजा जलन के मारे अपने शत्रु दिल्ली के राजा का राज्य महम्मद के हाथ से बिगड़ता हुआ देख कर प्रसन्न होते रहे उनको भी शीघ्र महम्मद के कटकने कष्ट दिया ॥ महम्मद बहुत काल तक गज़नी में न ठहरा बरन अपनी सेना में नवीन सिपाही भरती करके फिर सिंधुनदी से पार हुआ और कनोज के सबसे पिछले राजा जयचंद पर चला चंदवाड़ और इटाये के बीच एक स्थानपर लड़ाई हुई जिस में कनोज का राजा हारा और कुतुबुद्दीन के तीर से मारा गया॥ बहुतसे हिंदुओंकी कटा हुई, राजा सात सौ हाथी जो मुसलमानों पर चढ़ा लाया था उनमें से नव्वे हाथी शत्रुओंके हाथ लगे जिनमें एक श्वेत हाथी था इससे जाना जाता है कि उस समय में कनोज के राजा भी बुध के मत में चलते थे ॥ महम्मदने जीतते जीतते उसनी के गढ़ को लेलिया जहां कि राजा का भंडार था ॥ और बनारस में जाकर नगर को लूटा और एक सहस्र मंदरों को फुड़वाया ॥ एक इतिहासवेत्ता लिखता है कि इस समय में मुसलमानों की सेना चीन की सीमा तक पहुंची थी परंतु इस बात का कुछ प्रमाण चाहिये॥ महम्मद गंगाजी के तीरपर के देशों में से हिंदुओं की

संपूर्ण सामर्थ खो कर और बड़ी भारी लूट लेकर अपनी राजधानी को गया जो सिंधुनदी के पार थी॥ उत्तर के सब पराक्रमी राज्यों में से केवल गुजरात-वाले की राजधानी नरहवाला अकेली बचरही थी॥ दूसरे बरस कुतुबुद्दीन चढ़ा और उस देश को सब ओर से लूट खसोट कर अपने आधीन किया॥ इस रीत से केवल तीन बरस के थोड़ेसे काल के बीच उत्तर से हिंदुओं की सामर्थ संपूर्ण नष्ट हो गई और उस दिन से आज तक उन्होंने फिर कभी अपना राज्य न पाया॥ राजधानी दिल्ली के आधीन होनेके पीछे दो चार गढ़ जो शेष रहे थे वे एक एक करके उद्योगी कुतबुद्दीन के हाथ लगते गये॥

चंद कबिने एक पुस्तक छंद में लिखी है जो बिस्तार में महाभारत के समान है और उसके पढ़ने से महाभारत की भांति चित्त में उतसाह उपजता है और वह महाभारत के समान प्रसिद्ध है॥ चंदने हिंदू राजाओं के मरने का बिषय बहुत अच्छी भांत लिखा है॥ यह कबि राजपूतों की बीरता और कुल का बर्णन करता है॥ और राजपूतों की ३६ छत्तीस जात अब तक अपने बड़ों की बीरता मन लगाकर उस कबिता में पढ़ते हैं॥ हिमाचल की ओर से जब बड़े बड़े कटक आते थे तब उनके बड़े इनके साथ युद्ध में अति बीरता दिखाते थे॥

महम्मद अपने भाई का मरना सुनते ही गज़नी को गया, और वहां रीत के अनुसार मुकट पहरा परंतु बहुत काल तक राज न किया ॥ वह अपना राज्य पश्चिम की ओर फैलाया चाहता था, परंतु वहां वह हारा और उसे भागना पड़ा ॥ कगर नाम बीर और जंगली जाति के लोग जो नीलाब नदी के तट पर बसते थे बहुत काल से मुसलमानों पर ऐसा अन्याय करते थे कि हिंदुस्थान और पेशावर के आवा गमन में अंतर आगया था ॥ महम्मदने अपनी पहली बीरता के अनुसार उनपर चढ़ाई की और उसने केवल उनको अपने आधीन ही नहीं किया परंतु उन्हें मुसलमान भी कर डाला ॥ और जब महम्मद गज़नी को फिरा आता था तब उसके तंबू में सोते हुवे उसी जाति के दो मनुष्योंने उसे मार डाला महम्मदने बत्तीस बरस राज्य किया जिसमें उनतीस बरस अपने भाई को युवराज पदवी में रहा और तीन बरस तक आप राजा रहा ॥ उसने अपने मरे पीछे जो भंडार छोड़ा सो अन गिनत था; और इस बात के बिचारने से उसके भंडार का मोल जान पड़ेगा कि पांच मन केवल हीरे उसके यहां थे उस भंडार को उसने हिंदुस्थान पर चढ़ाई करके इकठा किया था और हरएक बेर हिंदुस्थान से जितना द्रव्य उसके हाथ लग सका लूट लेगया ॥

दशवां अध्याय ॥

चंगेज़खां की जय—कुतुबुद्दीन—दिल्ली का महाराज—बख्तियारखिलजीने बंगाले को जीता—आसाम में उसकी चढ़ाई—उसकी हार और मृत्यु—अलतमश—सुलतानारेजिया—नाजिरुद्दीन—बालिन—कैकुबाद—ग़ोरी के कुल का अंत ॥

महम्मद ग़ोरी के राज्य के अंत में चंगेज़खांने मुग़लों के राज्य को स्थापन किया ॥ कास्पिअन सागर, चीन, और साइबेरिया के बीच जो विस्तृत पहाड़ हैं वहां प्राचीन काल में हन और तुरक बसा करते थे, इस समय में पशुपालकों की कई एक बीर जाति वहां रहती थीं ॥ जिनका स्थान स्थिर न था जब कि ये लोग वहां इतने बढ़ गये कि उन्हें वहां भक्षण भी न मिल सका तब वे तलवार हाथ में ले लेकर दक्खन की ओर गये और वहां के लोगों को निकाल उनका स्थान आप लेलिया ॥ उस देश पर इस भांति की कई चढ़ाईयां हुई थीं जिस पीछे चंगेज़खांने उस देश पर चढ़ाई की और उसने यूरप के बीचों बीच से लेकर एशिया की पूरब सीमा तक

देशों का सत्यानाश कर दिया॥ चंगेज़खां का बाप उन पशुपालकों की तेरह जात पर जिनमें के चालीस एक सहस्र शूर बीर मनुष्य थे अधिकार रखता था, चालीस बरस की अवस्था में चंगेज़खां ने आस पास की जातों पर अपना अधिकार स्थापन करके और दूर तक अपना राज्य फैलाने का बिचार किया॥ एक बड़ी सभा हुई जिसमें मुग़ल इकठे हुये थे चंगेज़खां एक नमदे पर बैठा था जिसे बहुत काल से एक प्रसाद समझते थे. उस समय सबों ने उसे बड़ा खां या मुग़लों और तातारियों का राजाधिराज कहा॥ उसने किसी भांति की शिक्षा न पाई थी और लिखने पढ़ने में तो अज्ञान ही था, और उसकी जाति के बहुत से लोग ऐसे ही अज्ञान थे॥ और उसने केवल अपने ज्ञान और बड़ी बुद्धिवानी से और अपने बीर संगियों की सहायता से संसार में बड़ी उलट पुलट कर दी थी॥

अपने देश की जंगली जातों को आधीन करके वह उत्तर के सब पशुपालकों की जातों का अधिपति हुआ, इस जाति में लाखों पशुपालक और सिपाही थे जो कि अपने स्वामी की भांति उद्योगी थे और दक्षिण के नम्र और धनाढ्य लोगों पर चढ़ाई करने को असंतोषी हो रहे थे उन्होंने चीन पर बड़ी धूम धाम से चढ़ाई की थी और चीन की दीवाल से

अगाड़ी बढ़ कर नव्वे नगर लेलिये और वहां के बादशाह को पीलीनदी के दक्षिण में जाना और उत्तर का देश चंगेज़ख़ां के लिये छोड़ देना पड़ा॥ पश्चिम की ओर चंगेज़ख़ां का देश सुलतान ख़्वारअज़्म की सीमा तक था, जो कि फारस से सिंधुनदी तक का देश अपने आधीन रखता था इस बादशाह से जो कि उस समय के सब मुसलमानों में बलवान् भी था मुग़ल मिलाप रक्खा चाहता था परंतु महम्मद ने उसके तीन दूतों को मरवा गेरा था और इस अन्याय का वह सहन नहीं कर सकता था॥ सात लाख सेना लेकर चंगेज़ख़ां बड़ी आंधी की भांति ख़्वारअ-ज़्म के राज्य पर चला और चार लाख सेना ने उसका सामना किया पहली लड़ाई में एक लाख साठ सहस्र ख़्वारअज़्मी मारे गये और महम्मद ने मैदान में मुग़ल का सामना करना असंभव जान कर निज सिपाहियों को उन नगरों में बांट दिया जो कि उसकी जान में चंगेज़ख़ां से अच्छी भांति सामना कर सकते थे परंतु दस बड़े बड़े नगर विजयी के हाथ लगे और ख़्वारअज़्मका बादशाह मैदान और गढ़ों में हार गया तब इकेला कास्पिअन समुद्र के एक निर्मनुष्य द्वीप में जाकर मर रहा॥ इस समुद्र से लेकर सिंधुनदी तक जो कि एक सहस्र मील से अधिक दूर होगा सब देशों का मुग़लों ने सत्यानाश किया

और जो हानि हुई सो पांच सौ बरस तक भी पूरी न होसको॥ महम्मद ख़ार्अज़मी का बेटा बीर जलालुद्दीन प्रत्येक स्थान में लड़ा और कई बेर उनकी वृद्धि उसने रोकी, पर उन्हें संपूर्ण रूप से रोक देना उसकी सामर्थ से बाहिर था, और उनके सनमुख से हटते हटते वह सिंधुनदी के तट तक पहुंचा और उस नदी में उसने कई अपने संगियों सहित नदी पार करने को घोड़े डाले इस आस पर कि कदाचित् हिंदुस्थान में कहीं मुझे शरण मिले परंतु इस बात से वह निरास हुआ॥ चंगेज़खां की सेना लूट लेकर अपने जन्म देश में आनंद करने की इच्छा करती थी, और उनके अधिपति ने उलटे फिरने का और उन नगरों को जिनका सत्यानाश किया था फिर बसाने का बचन किया और अपनी सेना को जेहून और सेहून नदियों के पार लेगया वहां वह अपने दो सेनापतियों से मिला जिनको उसने ईरान के पश्चिम के भाग को जय करने के लिये भेजा था और उन्होंने केवल पूरी जय ही न पाई थी बरन कास्पिअन समुद्र के तीर ही तीर जय करते चले गये और ऐसी चढ़ाई जब तक कभी न हुई थी और न जबसे कभी किसी ने उस चढ़ाई के करने का उद्योग किया है चंगेज़खां अपने जनम देश को गया और अपने बेटों को चीन की जय करने के लिये अंत समय कह कर ईसवी

संवत् १२२७ में मर गया॥ हमने इस पराक्रमी बाद-शाह के युद्ध का वर्णन इसलिये किया है कि यद्यपि उसने हिंदुस्थान पर न चढ़ाई की थी तो भी उसने सिंधुनदी के पश्चिम के देशों की दशा बिगाड़ देरी थी जहां कि मुग़लों ने उस समय से ऐसा अधिकार पाया जिससे हिंदुस्थान के प्रबंध में बहुत अंतर आगया उसकी संतान की अद्भुत जीतों का विषय हिंदुस्थान की कथा से कुछ प्रसंग नहीं रखता है बरन सब कथाओं से मिलता है इसलिये केवल इतना ही कहना बहुत है कि वे हिंदुस्थान के आस पास सदा लगे रहते थे और अवसर पाकर चढ़ाई करते थे परंतु उसके ठीक २९९ बरस पीछे मुग़लों नें सुलतान बाबर की आधीनी में हिंदुस्थान के राज्य पर अधि-कार किया॥

महम्मद ग़ोरी के कोई लड़का न था उसने अपने दासों में से बड़े बुद्धवानों को सुशिक्षित किया और उनकी बुद्धिवानी के अनुसार उनको अच्छे२ अधि-कार दिये सब में एक नामी कुतुबुद्दीन ईबक था जिसने पहलेही पहल हिंदुस्थान में मुसलमानी राज्य स्थापन किया वह महम्मद के संग हिंदुस्थान में उस समय आया था जब कि उसने सिंधुनदी के पार उतर कर चढ़ाई की थी जैसा कि हमने वर्णन किया है और महम्मद अपनी राजधानी को फिरा तब उसने

उसकी बीरता और बुद्धिवानी के पारितोषिक में उसको दिल्ली के निकट की सेना का अधिपति किया॥ थोड़े ही दिनों पीछे दिल्ली उसके हाथ लगी और उसकी राजधानी हुई ॥ उसने अपने स्वामी की इच्छा पर हिंदुओं की स्वाधीनता दूर करने के लिये इस भांति परिश्रम किया कि हिंदुओं की सामर्थ महम्मद की बीरता पूर्वक चढ़ाइयों की अपेक्षा इसकी दृढ़ और लगातार चढ़ाइयों से अधिक घट गई॥ यद्यपि वह बड़ा पराक्रमी था और एक जयवंत सेना उसके आधीन थी और अपने बादशाह की दृष्टि से बहुत दूर था फिर भी उसकी आधीनताई में पक्का रहा परंतु यह बात निस्संदेह है कि वह स्वाधीन होने का अच्छा अवसर ताकता था ॥

हिंदुस्थान में जो मुसलमानों का राज्य प्राचीन राजधानी में स्थापन हुआ, इस कारण से मुसलमानों को और भी जय करने का उत्साह हुआ॥ कुतुबुद्दीन ने जो कि इन बातों के पूरे करने को चाहता था उत्तर में हिंदुस्थान के राजाओं को जय करते ही सेना सहित बखतियारखिलजी को बहार के जय करने के लिये भेजा॥ कुतुबुद्दीनने बखतियार को मोल लिया था, यद्यपि वह सुरूपवान् न था तो भी अपने स्वामी की सेवा में बुद्धवानी दिखाने के कारण उसका काम बढ़ता गया॥ ईसवी संबत् ११९९ में वह सेना

लेकर बहार को गया और उसकी राजधानी को लूट कर सब देश को अपने आधीन किया और दो बरस पीछे लूट लेकर अपने स्वामी के पास दिल्ली में आया॥ इस जय की प्रतिष्ठा के प्राप्त करने से लोग उसके शत्रु हो गये और कुतुवुद्दीन का चित्त उससे हटा देने को उपाय में लगे॥ एक समय सभा में बहार के जय होने की बात चली तब जलनेवाले सभा के लोगोंने कहा कि जयवंत की बीरता की परीक्षा एक हाथी के संग लड़ने से अच्छी भांति हो जायगी॥ कुतुवुद्दीनने इस बात को मान लिया क्योंकि वह पहलेही से अपने सेनापति पर जलता था॥ एक मस्त हाथी को मंगवा कर इस बीर पर हूला उसने हाथी की झपट को फुर्ती से बचा कर उसकी सूंड पर अत्यंत पराक्रम से एक ऐसा वार किया कि वह चिंघार कर भागा इस युद्ध को देख के बख़्तियार के शत्रु घबराये और इस कारण से कुतुवुद्दीनने उसकी अधिक प्रतिष्ठा की और बहार देश का अधिकार फिर उसको सोंपा और बंगाले के जय करने की आज्ञा दी॥

बहुत काल से बंगाला बैद्यों के कुल के अधिकार में था, इस कुलवालों ने एक नवीन संवत् स्थापन किया जो उनके बिगड़ने से पीछे भी कई सौ बरस तक चलता रहा निदान अकबर ने इस संवत् को मिटा दिया उस समय में बंगाले का लछमनसेन

राजा था जो अवस्था में ८० अस्सी बरस का था ॥ उसके जन्मलेने से पहले उसका बाप मरगया और हिंदुस्थानी इतिहासवेत्ता कहते हैं कि ज्योतिषियों के कहने से उसके जन्म होने में ढील लगाने के लिये ऐसे उपाय किये कि जिनसे उसकी मा मर गई ॥ वह जन्म लेतेही सिंहासन पर बैठा और यद्यपि उसका राज्य बिस्तार के कारण प्रसिद्ध है परंतु उसकी कृपा, उदारता, और न्याय के कारण और भी प्रसिद्ध हुआ ॥ वह बहुधा नदिया में रहा करता था परंतु जाना जाता है कि बनारस के राजकुल का नाश होने से उसने उत्तर में अपना राज्य फैलाया और प्राचीन नगर गोड़ या लखनोटी में भी अपना बास किया ॥

बखतियार के मन का बिचार नदिया के राजद्वार से छुपा न रह सका ॥ कहते हैं कि ब्राह्मणोंने राजा के निकट जाकर उससे यह बात कही कि आप की पुरानी पुस्तकों में कहा है कि एक समय ऐसा होगा कि बंगाले को तुरक अपने आधीन करलेंगे और उनको निश्चय हुआ कि वह समय अब आन पहुंचा है इसी लिये उन्होंने सेना के लिये न कहा बरन किसी दूर और गुप्त स्थान में चलाजाने के लिये शिक्षा दी निर्बल और वृद्धि बादशाहने इस बात को न माना परंतु सब प्रधान२ लोगोंने अपने अपने कुनबे और चीज वस्तु को उड़ीसे में भेज दिया ॥

कदाचित् हिंदुस्थान के इतिहास में बंगाले के जय करने के भिन्न कोई ऐसी बात न लिखी होगी जो कि बंगालियों को ऐसी लज्जा का कर्म्म होय ॥ हम अभी कह चुके हैं कि दिल्ली के राजाने अपनी बड़ी शूरबीर सेना लेकर शत्रु का सामना किया और जब उसके सिपाहियों के मरने से रणभूमि भर गई तब अपनी स्वाधीनता और राज्य को अपने हाथ से छोड़ा ॥ कन्नोज का राजा अपने स्वाधीन रहने के लिये बीरता दिखाकर मारा गया ॥ चीतोड़ और गुजरात के राजाओंने बड़े परिश्रम से बीरता पूर्वक बिन युद्ध किये अपनी स्वाधीनता न छोड़ी परंतु बंगाला आप ही आप आधीन हो गया यद्यपि बखतियार दो बरस तक बंगाले की सीमा पर मंडलाता रहा परंतु उस से युद्ध करने के लिये उसने कुछ तैयारी न की वह नदिया तक निस्संदेह निज सेना लेकर चला आया और अपनी सेना को थोड़ीसी दूर छोड़कर आप नगर में केवल सतरह सिपाही लेकर घुसा और बादशाह के संगियों को कटा करने लगा बादशाह उस समय भोजन कर रहा था प्रजा की हाय हाय सुनकर चौंका और यह सुनकर कि शत्रु आन पहुंचा एक गुप्त-द्वार के मार्ग से निकला और एक छोटीसी नौका पर चढ़कर जब तक कि वह उड़ीसे में जगन्नाथ तक न पहुंचा तब तक कहीं न ठहरा।

और इस भांति बंगाले में से हिंदुओं का स्वाधीन राज्य नष्ट हुआ ॥

बखतियारने नदिया में प्रवेश करके अपने सिपाहियों को लूट करने की आज्ञा दी और फिर तुरंत गौड़ देश को चला जहां कि उसका राज्य सहज ही स्थापन हुआ और वैसी ही वहां उसने हानि की ॥ हिंदुओंके मंदिर फुड़वा गेरे और उनके मसाले से मुसलमानों की मसजिद मद्रसे और सरायें बनाईं ॥ एक बरस के बीच सब देश जीत लिये और उस दिन से पलासी की लड़ाई तक मुसलमानों की सामर्थ बनी रही, बंगाले के हिंदुओंने साढ़े पांच सौ बरस से अपनी स्वाधीनता प्राप्त करने के लिये कुछ भी उद्योग नहीं किया ॥ बखतियारने बंगाले को जय कर तिब्बत और बूतान में अपनी सेना लेजाने का उद्योग किया परंतु उसने जान लिया कि उन बीर पहाड़ियों के जय करने में जो कि हिमालय की घाटियों में रहते थे और मैदान के नम्र निवासियों के जय करने में बड़ा अंतर है, जो जो उस चढ़ाई के लिये उसने किया वह उस युद्ध के योग्य न था ॥ वह दस सहस्र सवार लेकर उन पहाड़ियोंपर चढ़ चला जो कि हिंदुस्थान तातार और चीन के बीच हैं ॥ ऐसा जाना जाता है कि जिस मनुष्य को उसने मुसलमान कर लिया था वह उसे मगध के पहाड़ों पर से

उतार के ब्रह्मपुत्र नद तक लिवा लेगया जो आसाम में बहता है यद्यपि यह नदी बेगमती कहलाती है परंतु उसका फाट गंगाजी से तिगुना है और समुद्र में मिलजाती है इसलिये यह नदी ब्रह्मपुत्र के भिन्न कोई और नहीं निश्चय हो सकती॥ दस दिन तोड़ी उसी नदी के तीर ही तीर सेना चली गई निदान एक पत्थर के पुल पर पहुंचे जो जिसमें बाईस दर थे और उसके पार उतरे और पंद्रह दिन तक बड़ी कठिन घाटियों में चलते गये निदान वह तिब्बत के एक बड़े मंडल में पहुंचे और थोड़े से काल पीछे एक ऐसे नगर में गये जहां बड़ा दृढ़ दुर्ग था, वहां के लोगों ने बीरता पूर्वक इन से बड़ी लड़ाई की उनके शस्त्र बांस के थे जो कि कच्चे रेशम से बंधे हुवे थे॥ मुसलमान दिन भर अच्छी भांति लड़के केवल दो चार बंदुवे लेकर अपने डेरों को फिरे बंदुओं के कहने से उनको जान पड़ा कि यहां से साढ़े सात कोस पर एक बड़ा दृढ़ नगर है जिसको कर्म्म पत्तन कहते हैं उस में ब्राह्मण और बूतानी बसते हैं उनका राजा एक ईसाई मत का है और बीर तातारियों की सेना उसके यहां नौकर है और एक सहस्र या पंद्रह सौ टांगन नित बजार में बिक जाते हैं इस समाचार के सुन्ने से बखतियार को चिंता हुई और उसने वहां से तुरंत उलटे फिरने की इच्छा की और वहां के

निवासियों ने सब दाने और चारे में आग लगादी और अनेक भांति से उस मार्ग में बाधा की निदान बड़ी कठनाई से वह फिर उसी पुल तक पहुंचा परंतु उसे निश्चय हुआ कि जो सेना हम मार्ग खुला रखने के लिये पीछे छोड़ गये थे उसको आसाम के बादशाहने अपने आधीन कर लिया और पुल के दो दरों को तोड़ गेरा आसामवालोंने मुसलमानों को घेर लिया उन्होंने अपने बचाव के लिये पांवों पांवों नदी उतर जाने को मार्ग ढूढा॥ नदी में झुंड के झुंड डूब गये और थोडसे बच के दूसरे तीर पर पहुंचे और उनमें उनका सेनापति भी था जो कि शेष सेना लेकर बंगाले को फिरा जहां कि वह तीन बरस चिंता में रह कर मर गया॥ १२० बरस तक बंगाला दिल्ली के राज्य में मिला रहा॥ यद्यपि बहुत दूर होने के कारण से सूबेदार स्वाधीन होजाने की बहुधा इच्छा करते थे और कभी कभी उनकी यह इच्छा भी पूरी हो जाती थी॥

ईसवी संबत् १२०६ में महम्मद गोरी मरा और उसके कोई लड़का न था इसलिये सिंहासन पर बैठने का झगड़ा हुआ॥ कुतुबुद्दीन दिल्ली का अधिपति संपूर्ण राज्य भर में पराक्रमी था परंतु महम्मद के भतीजे महमूदने गोर को अपने आधीन रक्खा दूसरे सूबेदार अलदोज़ ने कांबुल और कंदहार को

आधीन कर लिया और कुतुबुद्दीन ने हिंदुस्थान के राज्यका अधिकार चाहा अलदोज़ ने कुतुबुद्दीन पर चढ़ाई की परंतु हार गया ॥ कुतुबुद्दीन जय करता हुआ गज़नी को चला जहां कि वह सिंहासन पर बैठा परंतु वह शीघ्र आलसी होगया अलदोज़ को यह समाचार पहुंचे और उसने तुरंत उस पर चढ़ाई की और उसे फिर हिंदुस्थान में हटा दिया तब से कुतुबुद्दीन ने उसी देश पर संतोष किया इसी लिये उसको जो हिंदुस्थान का पहला मुसलमान बादशाह बिचारते है सो ठीकही है ॥ उसने बड़ी सावधानी और बुद्धवानी से हिंदुस्थान में राज्य किया यद्यपि वह बहुत काल तक सिंहासन पर न बैठा क्योंकि वह अपने स्वामी से पांच बरस पीछे अर्थात् ईसवी संवत् १२१० में मर गया ॥ उसी काल में तकाश ख्वारअज़मी ने सिंधुनदी के पश्चिम में एक नवीन और दृढ़ राज्य स्थापन किया उसने संपूर्ण फारस को जय कर लिया और थोड़े काल पीछे उसने अलदोज़ पर चढ़ाई करके गज़नी ग़ोर और सिंधुनदी के पश्चिम के सब देशों को अपने राज्य में मिला लिया ॥

कुतुबुद्दीन के मरने पीछे उसका आराम नाम पुत्र दिल्ली के सिंहासन पर बैठा परंतु वह अपने बड़े राज्य पै आज्ञा करने के लिये अत्यंत अयोग्य था,

क्योंकि तब तक राज्य का प्रबंध अच्छी भांति न बंधा था ॥ एक बरस के बीच शमसुद्दीन अलतमशने उससे राज्य छीन लिया॥ यह अलतमश एक बड़े कुल का था परंतु बालकपन में गुलामी में बिका था और कुतुबुद्दीनने उसको मोल लिया था और उसको होनहार जान कर अपनी बेटी उससे व्याह दी थी और उसको बहुत बड़ा अधिकार दिया था॥ ईसवी संबत् १२११ में अलतमश सिंहासन पर बैठा और पच्चीस बरस राज्य किया॥ उसके राज्य के दसवें बरस में जलालुद्दीन हिंदुस्थान में आया यह ख़्वार-अज़म के बड़े राज्य का बादशाह था और मुग़लोंने वहां से इसको निकाल दिया था, और अलतमश की सेनाने उसका सामना किया॥ बहुधा अलतमश मुसलमान सूबेदारों को आधीन करने में लगा रहता था जो स्वाधीन होने का उद्योग रक्खा करते थे॥ सब सूबेदारों में बंगालेका सूबेदार बड़ा था उसने बहुत काल से कर नहीं दिया था अलतमशने उस पर चढ़ाई की और गौड़ नाम राजधानी लेकर अपने नाम का सिक्का चलाया और अपने पुत्र को गौड़ का सूबेदार किया॥ अलतमशने उन हिंदुओं पर भी चढ़ाई की जो कि उस काल तक संपूर्ण रूप से आधीन नहीं हुवे थे॥ एक बरस के घेरे के पीछे उसने गवालियर को जय किया तिस पीछे मालवे की ओर

जाकर उज्जैन का लेलिया और महा काल के बड़े मंदिर को फोड़ गेरा जिस को बिक्रमाजीतने बारह सौ बरस पहले बनवाया था॥ और देवी सहित बिक्रमाजीत की मूरत को वह दिल्ली में लेआया और जामअमस्जिद के द्वार पर उनको फुड़वा गेरा॥

अलतमश के पीछे उसका पुत्र बादशाह हुआ और वह तरुणावस्था के आनंद में लगगया छह महीने के पीछे वहां के प्रधान लोगोंने उसे सिंहासन से उतार अलतमश की रज़िया नाम राजकन्या को सिंहासन पर बैठाया यह स्त्री बहुत गुणवान् थी और अपने बाप के जीतेजी राज काज किया करती थी पहले ही पहल उसने बड़े प्रबंध और सावधानी से राज्य किया परंतु एक हबशी से बहुत मेल रखती थी इसलिये उस पर ऐसी ऐसी कृपा करने लगी जो करने योग्य न थी इस कारण से वहां के प्रधान लोग उससे अप्रसन्न भये और उन्होंने उससे सिंहासन छीनने के लिये कटक इकठा किया॥ वह पकड़ी गई और बिंतड़ा के गढ़ में बंदवा रही वहां के अधिपति को उसने मोहित करके उसके संग बिवाह करलिया और उसकी आज्ञा में सेना इकठी करके राज्य लेने के निमित्त दो बार घोर युद्ध किये परंतु दोनों बेर हार गई और पिछली लड़ाई में अपने पति सहित शत्रुओं के हाथ में आई और साढ़े तीन बरस राज्य

करके मारी गई॥ बहराम और मसऊदने जो कि उसके पीछे बादशाह हुये छह बरस से अधिक राज्य न किया इस काल में कोई ऐसा काम न हुआ कि जिस का लिखना आवश्यक होय॥ परंतु केवल यह है कि ईसवी संबत् १२४४ में मुग़लोंने तिब्बत के मार्ग से बंगाले के पूर्व भाग के देशों पर चढ़ाई की॥ हम आगे लिख चुके हैं कि चंगेज़खां की संतानने संपूर्ण चीन को जय किया और बिचारते हैं कि चीन की सीमा पर के देशों से उन्होंने बंगालेपर चढ़ाई करने के लिय सेना भेजी थी इस चढ़ाई को कहते हैं कि चीनवालों की चढ़ाई है परंतु यह मुगलों की अंत की चढ़ाई का खेद था॥

संबत् १२४६ ईसवी में अलतमश का नज़ीरुद्दीन नाम बेटा दिल्ली के सिंहासन पर बैठा जो बंगाले का सूबेदार था॥ उसके बाप की राणीने उसको बहुत खेद दिया था और बंदीगृह में रक्खा था जहां उसने लिखाई करके अपने दिन काटे थे इस कारण मध्यता नम्रता और बुद्धवानी उसमें भर गई थी॥ उसने राजगद्दीपर बैठते ही विद्यावानों की बड़ी प्रतिष्ठा की और कवियोंने उसकी प्रशंसा लिखने में बहुत परिश्रम किया उसने अपने बहनोई बुलबुन अर्थात् बालीन को अपना बड़ा प्रधान किया इस मनुष्य से और कोई अच्छा नहीं मिल सकता था

क्योंकि बालीन अपने समय में सबसे बड़ा विचार करता और बीर था॥ और उसके प्रबंध से संपूर्ण देश बसगया और उन हिंदू राजाओं के आधीन करन में अपना राज्य दृढ़ किया जो थोड़े बड़त भी स्वाधीन थे॥ परंतु बड़ा भय पश्चिम की ओर से था जहां कि मुग़ल ग़ज़नी काबुल कंदहार बलख़ और हिरात में अपना दृढ़ निवास किया था और इसी लिये सिंधुनदी की रक्षा करने का कार्य बड़त बड़ा गिना जाता था॥ और उस अधिकार पर प्रधान का भतीजा शेरखां नियत ऊआ था वह सब प्रधान लोगों में मुख्य था उसने पंजाब और मुलतान को मुग़लों की चढ़ाइयों से बचाया और इसके भिन्न सवारों के कटक को युद्ध विद्या सिखा के उनकी सहायता से मुग़लों को ग़ज़नी से निकाल बाहर किया और थोड़े काल तक उसको दिल्लीके राज्य में मिला दिया॥

नज़रुद्दीन के राज्य के सातवें बरस में छल करके प्रधान पने के काम से बुलबुन को दूर करके अमादुद्दीन आप प्रधान हो गया और शेरखां से पश्चिम की सीमा का अधिकार लेलिया और बादशाह के मन को अपने बस में करके पहले प्रधान के मित्रों को उनके अधिकार से निकाल दिया निदान उसका प्रबंध लोगों को ऐसा बुरा लगा कि दस सूबेदारोंने बुलबुन

को राज्य का प्रबंध बिगड़ने का समाचार कहला भेजा और फिर राज्य का अधिकार लेने के लिये प्रार्थना की और इस काम के लिये उन्होंने कटक इकठा किया और बादशाह से लड़ाई की बादशाहने देखा कि मैं युद्ध के बीच इनका साम्हना नहीं कर सकता इस लिये उनका कहना मानना पड़ा॥ वे यह कहते थे कि अन्याई प्रधान दूर हो जाय और बुलबुन फिर प्रधान होय क्योंकि उसके समय में राज्य के बीच बड़ा चमत्कार हुआ था बादशाहने ये सब बातें मान लीं अमादुद्दीन को दूर किया और बुलबुन को प्रधान बनाया॥

१२५८ ईसवी संबत् में हलाकू नाम चंगेज़ख़ां के पोते का दूत दिल्ली के बादशाह के यहां आया॥ इस दूत को दिल्ली के राज्य का महा प्रताप जताने के लिये बड़ी धूम धाम से उसकी अगोनी की॥ प्रधान आप पचास सहस्र सवार और दो सहस्र हाथी लेकर उसके लेनेको गया॥ दूत के आने के पीछे एक दिन बड़ी धूम धाम से राजसभा की तब दूत का बादशाह से मिलाप हुआ॥ इस बादशाह के चारों ओर वे पच्चीस बादशाह खड़े हुवे थे जिनको कि मुग़लोंने अपने अपने स्थान से निकाल दिया था इस दूत के जाने से कुछ काम सिद्ध न हुआ॥ उस समय में मुग़लोंने हिंदुस्थान पर चढ़ाई करने का कुछ उद्योग न किया

इसका कारण तो यह था कि वे बादशाह के प्रताप में दब गये या पश्चिम की ओर का उनको भय था॥

ईसवी संवत् १२६६ में नजीरुद्दीन मरगया और उसके पीछे उसका मंत्री बुलबुन बादशाह हुआ उसका न्याय और बुद्धवानी ऐसी प्रसिद्ध हुई कि ईरान और तातार के बादशाहोंने उस से मित्रता रक्खी परंतु तो भी इतिहासवेत्ता उसको अपने भतीजे शेरखां को किसी रीत से मरवा डालने का दोष लगाते हैं कि जिसका ऊपर वर्णन हो चुका है॥ वह अपने सेनापतियों का सुभाव अच्छी भांति जानता था॥ और उसने बड़े बड़े काम बुद्धवान ही मनुष्यों को दिये परंतु उसने यह एक रीत ठहरा ली थी कि कोई हिंदू किसी बड़े काम पर न होने पावे॥ इस बात से वह अपने राज्य का बड़ा नाम समझता था कि उन नरपतियोंने जिनको कि मुग़लोंने सिंधु-नदी के पश्चिम के राज्यों से निकाल दिया था उसके राज्य में शरण ली थी उसके समय में मुसलमान दिल्ली के राज्य को अत्यंत प्रतापवान् और शिष्ट समझते थे उस समय वहां बड़े बड़े प्रसिद्ध विद्यावान इकठे हुवे थे जो कि राज्य में से बहुतसा द्रव्य पाते थे अगले बादशाहों में किसी की सवारी ऐसी धूम धाम की न थी ऐसे बड़े बड़े स्थान किसी के राज्य में न बने थे वह व्यवस्था के अनुसार चलता था और आप बड़े

नियम से रहता था ॥ उसके ऐसे गुण थे कि जिनके कारण वह युवा अवस्था में प्रसन्न रहा ॥

गुजरात मुसलमानों की आज्ञा से निकल गया था इसलिये वहां के प्रधान लोगोंने उसको गुजरात के जय करने के लिये उपदेश किया परंतु उसने बड़ी बुद्धवानी से उत्तर दिया कि जब तक पश्चिम और उत्तर में मुग़लों का भय है तब तक यही बुद्धवानी है कि मैं केवल उन्हीं देशों को थांभे रहूं जो कि मेरे अधिकार में हैं और न चाहिये कि और देशों के लेने के उद्योग में अपने देशों को भयभीत करूं ॥ ईसवी संबत् १२७९ में तुग़रलखां जो कि बंगाले का अधिपति था फिरगया ॥ यह बीर अधिपति उड़ीसे में जगनगर के राजा पर सेना चढ़ा लेगया और वहां से कई सौ हाथी और और बहुतसा धन लाया था और इस बात का कुछ भी समाचार बादशाह को न भेजा था ॥ कुछेक काल पीछे बादशाह के मरने का उड़ता हुआ समाचार सुनके बंगाले का स्वाधीन बादशाह अपने को प्रसिद्ध किया ॥ तब दिल्ली के बादशाहने लगातार उस पर दो बेर सेना भेजी पर दोनों बेर हार गई बादशाहने अपनी प्रजा की ओर से छेड़ छाड़ कुछ देख आप युद्ध भूमि में जाने का उद्योग किया और भराभर चौमासे में बड़ी भारी सेना लेकर बंगाले पर चढ़ गया ॥ तुग़रलखां अपने

हाथी वस्तु और सेना लेकर बंगाले को रीता करके आप उड़ीसे को चला गया और बादशाही कटकने उसका अच्छी भांति पीछा किया यद्यपि सेना उड़ीसे के भीतर तक गई परंतु शत्रु का कहीं कुछ खोज न मिल सका परंतु मलिक मुकद्दर नाम बादशाह का सेनापति था एक दिन चालीस सवार साथ लिये चला जाता था दैवसंयोग से तुग़रल की छावनी देखी तब उसन उस पर चढ़ाई करने का बिचार किया इस बात को पहले इतिहासवेत्ता असंभव और भयंकर जानते हैं इन थोड़ेसे लोगों सहित उसने शत्रु की सेना में घुस कर सेनापति के तंबू की ओर जाने का बिचार किया और निज मित्रों सहित साधारण सभा के डेरे में जाकर पुकारा कि बुलबुन बादशाह की जय हो और जिसने उसका साम्हना किया उसको कटा की तब तुग़रलखांने बिचारा कि संपूर्ण बादशाही कटक मुझपर चढ़ आया घोड़े पर चढ़ पकड़े जाने से पहले महा नदी उतरूं ऐसा बिचार के भागा मलिक मुकद्दरने उसका बहुत पीछा किया और जब वह नदी में पैरता था उसके एक तीर मारा तो तुग़रलखां पानी में गिर पड़ा और उसका पीछा करनेवाला तुरंत उसके मृतक शरीर को तीर पर लेआया और उसका सिर काट बादशाही कटक की ओर चला तुग़रलखां के न दिखाई देने से

उसको सेना को संदेह हुआ और यद्यपि उसका किसीने पीछा नहीं किया था तो भी वे लोग बचने के लिये भागने लगे॥ यद्यपि बुलबुनने बीर मलिक मुकद्दर को असावधानी का दोष लगाया परंतु उसकी बीरता का उस फल दिया बादशाहने इस जय की कुछ बड़ाई न जानी क्योंकि झगड़ालुओं के कुल में एक एक को कटा की यहां तक कि स्त्रियों और बालकोंको भी मार डाला बरन उसने और भी अन्याय किया कि एक सौ भिखारियों को भी मरवाडाला जिन को तुग़रलखां पालता था उसने बंगाले का अधिकार अपने बेटे क़राखां को दिया और तीन बरस के पीछे फिर दिल्ली को फिरा॥

उसी काल में मुग़लोंने फिर सिंधुनदी के तीर आकर मुलतान को अपने बस करलिया बादशाह के बेटे महम्मदने शीघ्र उन पर चढ़ाई की और उनको वहां से निकाल दिया दूसरे बरस तीमूरखां जो कि फारस के दक्षिण भाग का बादशाह था मुग़लों की हार का पलटा लेने के लिये बड़ी भारी सेना लेकर चला एक बड़ा युद्ध हुआ जिस में महम्मद की जय हुई परंतु उसने अत्यंत दूर तक शत्रु का पीछा किया इसलिये वह शत्रु के दो सहस्र घोड़ों के झुंड में घिर गया जो बन में छिपे हुवे थे राजकुमार अत्यंत बीरता सहित लड़ा परंतु शत्रु की अधिक सेना होने के कारण

निदान घायल हो गिर पड़ा बुलबुन उस समय में अस्सी बरस का होगा पुत्र का मरना सुनके जो कि कुलदीपक था बड़ा शोकाकुल होकर कुमला गया और ईसवी संबत् १२८६ में और अपने राज्य के २१ वें बरस में मर गया॥

बुलबुनने मरने से थोड़ेसे काल पहले क़राखां नाम अपने पुत्र से युवराज पदवी लेकर अपने पोते कैखुसरो को दी जो कि प्रिय और स्वर्ग वासी महम्मद का बेटा था॥ परंतु दिल्ली के प्रधान अधिपतिने बड़े बड़े अधिकारियों को इकठा करके बुलबुन के किये ऊवे से बिपरीत करने के लिये सब से कहा और क़राखां के बेटे कैक़ुबाद को सिंहासन पर बैठाना ठहराया इसका कुछेक तो यह कारण था कि कैखुसरो हटीला था और दूसरा यह था कि क़राखां बंगाले में बड़ा कटक रखता था संभव कि अपनी संतान में से राज्य नष्ट होने के कारण शत्रु बन जाता॥ कैक़ुबाद बादशाह होते ही क्रीड़ा में पड़ गया और अपने मंत्री निजामुद्दीन को राज काज का भार दिया॥ उस दुष्ट का केवल यह आशय था कि अपने अज्ञान और किशोर वय स्वामी से सबों का झगड़ा करवा के आप बादशाह होजाऊं॥ क़राखांने राजकाजियों से यह समाचार पाकर अपने बेटे को इस भय के समाचार भेजे निदान चिट्ठी पत्री लिखने पढ़ने से कुछ फल न

देख वह आप कटक लेकर दिल्ली को गया और उसके बेटेने मंत्री के कहन से सेना इकठी की और युद्ध की इच्छा करके पिता से मिलने को चला गोगरा-नदी के तीर दोनों कटक की मुटभेड़ ऊई वृद्ध पिताने निश्चय किया कि निस्संदेह युद्ध होगा तब एक स्नेह सूचक पत्र निज पुत्र को लिखा और चाहा कि युद्ध के पहले एक बेर मिलाप हो जाय यह बात बेटे के मन में आई और उसने बाप से मिलने का वचन किया परंतु दुष्ट मंत्री के कहने से यह नियम किया कि पहली बेर के मिलने में हम को स्वामी जानकर तुम आवो बाप पुत्र से मिलने का यह अवसर पा न चूका और वह बात मान ली डेरे खड़े किये और कैकुबाद सिंहासन पर बैठ कर अपने बाप के आने की बाट देखता रहा जब वह राजद्वार में आया तब उसे तीन बेर बादशाह का शिष्टाचार करने की आज्ञा मिली और नक़ीब पुकारा कि क़राखां-राजद्वार में आया है इस निंदा से प्रतिष्ठित क़राखां आंख भर लाया और उसका बेटा यह दशा देख न सका सिंहासन से उतरके अपने बाप को गले लगाके मिला और ऐसी स्नेह की बातों के पीछे बाप को सिंहासन पर बैठाया और उसके साम्हने आप खड़ा रहा इस मिलाप के अंत में बाप बेटे में मित्रता हो गई ॥ और बीस दिन के बीच कई बेर बड़ी प्रसन्नता पूर्वक मिलाप

ऊआ॥ क़राखाने बिछड़ते समय पुत्र को अनेक शिक्षा कीं और विचारा कि अब फिर पुत्र से मिलने की आस नहीं॥ और विशेष करके पुत्र से कहा कि इस दुष्ट मंत्री को अलग करदेना॥ परंतु नया बादशाह दिल्ली में आते ही शीघ्र शिक्षाओं को भूल गया और फिर आप संसारी सुख में लगा इस कारण से वह थोड़े दिन जिया और राजद्वार में कई धड़े हो गये जिन को कि आलसी और सुख भोगी बादशाह न मिला सका मुग़ल बादशाह की ओर ऊवे और खिलजिओं ने अपनी जात में से एक मनुष्य को बादशाह बनाने का उद्योग किया बादशाह को पक्षाघात होगया था इसलिये अपने राजमंदिर में पड़ा था निदान दोनों धड़ों की सेना लड़ने का विचार करके आमने साम्हने ऊईं खिलजिओं ने मुग़लों को हटा दिया और जिस तंबू में बादशाह का छोटासा बेटा था वहां लड़ करके पऊंचे और लड़के को निकाल लेगये॥ खिलजिओं के अधिपति जलालुद्दीन ने बादशाह के मारने के लिये कई मनुष्य राजमंदर में भेजे उन्होंने सोटे मार मार बादशाह का सिर फोड़ गेरा और उसके मृतक शरीर को खिड़की में से जमना में फेंक दिया इस कुकर्म के होनेसे गौरियों का कुल नष्ट ऊआ जलालुद्दीन सिंहासन पर बैठा उसने मुसलमानी तीसरे कुल अर्थात् खिलजिओं के कुल को स्थापन किया॥

X

ग्यारवां अध्याय ॥

जलालुद्दीनने खिलजिओं के कुल को स्थापन किया—अलाउद्दीनने दक्खन में चढ़ाई की—उसने अपने पिता को छिपके मारडाला—उसका सिंहासन पर बैठना॥ उसका राज संबंधी प्रबंध—गुजरात पर चढ़ाई—और चीतोड़ पर भी—काफूरने दक्षिण को जय किया—अलाउद्दीन की मृत्यु—उसकी चाल और कर्म्म—खिलजिओं के कुल का अंत—गाज़ीबेग तुग़रल सिंहासन पर बैठा॥

मुसलमान गज़नी और गौर के मुसलमानों की हिंदुस्थान में स्थिति होने से जितनी हिंदुओं की स्वाधीनता नष्ट हुई उसी भांति तीसरे खिलजिओं के कुल की स्थित होने से पहले दोनों कुलों की स्वाधीनता नष्ट हुई॥ महमूद गज़नवीने उत्तर के राजाओं को आधीन करके सिंधुनदी के तीर के देशों को आधीन करके निज राज्य में मिलाया था॥ दो सौ बरस पीछे महम्मदगौरीने नर्बदा के उत्तर के राज्यों को जड़ से उखाड़ के हिमालय पहाड़ से ले इसी नदी तक के देशों में अपना अधिकार स्थापन किया॥

एक सौ बरस पीछे खिलजिओंने नर्बदा की सीमा से बढ़कर मुसलमानों का राज्य दक्षिण तक फैलाया॥ जलालुद्दीन जिसने जब खिलजिओं के कुल को स्थापन किया सिंहासन पर बैठा तब सत्तर बरस का था उसने दृढ़ होते ही अपने कटा किये गये स्वामी के छोटेसे बेटे को मरवा डाला परंतु इसके भिन्न उँसने और किसी की कभी कटा न की॥ निश्चय करके उसकी यह बड़ी भारी भूल थी कि वह अनुचित् दया किया करता था इस कारण से बहुत अपराध होने लगे और बड़े बड़े मनुष्योंन आज्ञा माननी छोड़ दी॥ उसके बादशाह होते ही एक झगड़ा उठा जिसके मिटाने को उसका बेटा गया॥ झगड़ालुओं की हार हुई और पकड़े आये और उसने उनके अपराध क्षमा करके उन्हें छोड़ दिया॥ उसकी ऐसी नम्रता देख कर उसके सरदार उस से अप्रसन्न हुवे और उन्होंने शिक्षा की कि थोड़े से थोड़ा इतना दंड तो उनको चाहिये कि उनकी आखें निकाल ली जांय परंतु बादशाहने उत्तर दिया कि मैं अब वृद्ध हुआ हूं मेरी इच्छा यह है थोड़ीसी मेरी शेष आयु में और अधिक मनुष्य मारा न करूं॥

जिस बात से कि खिलजिओं के कुल का नाम दक्खन के जय करने से हुआ ईसवी संवत् १२९३ में

और थानेश्वर की लड़ाई से पूरे सौ बरस पीछे बादशाह के भतीजे अलाउद्दीनने चंदेरी के दक्खन के हिंदू राजाओं पर चढ़ाई करने के लिये अपने चचा की आज्ञा ली॥ और शीघ्र अपने क़रा नाम सूबे में जाकर उसने आठ सहस्र मनुष्य इकठे करके बीरता सहित नर्बदा के पार हो देव गढ़ के हिंदू राजाओं पर चढ़ाई की जहां कि रामदेवने नगर से दो मील दूर जाकर उस से युद्ध किया परंतु वह आप ही हार गया नगर अलाउद्दीन के हाथ लगा उसने नगर को लुटवाया॥ अलाउद्दीन को प्रसिद्ध किया कि मुसलमानों की सेना उस बड़े कटक का हरावल है जो पीछे पीछे दक्खन को आता है इस समाचार से दक्खन के और राजाओं की बीरता नष्ट हो गई और वे रामदेव की सहायता न करसके उसने अपने भले के लिये बहुतसा रुपैया देना ठहराया अलाउद्दीनने यह बात अंगीकार की और जब चला जाने को उपस्थित था कि रामदेव के बेटेने जो कि सेना इकठी करने में लगा हुआ था और उसकी सेना मुसलमानों से तिहाई थी मुसलमानों को आज्ञा दी कि तुम लूट का द्रव्य लाये हो सब छोड़ जाओ इस धमकी का फल लड़ाई का होना था अलाउद्दीन को बहुत घबरा गेरा जो उसका सेनापति मलिक नुसरत जो कि किले को घेर लेने के लिये नियत

हुआ था बिना आज्ञा आप स्थान छोड़ उसकी सहायता को न आजाता तो संभव था कि अलाउद्दीन की हार हो जाती॥ शत्रुने भूल से मलिक नुसरत के कटक को वह सेना जानी जो दिल्ली से आनेवाली थी घबरा गया और भागा॥ इस लड़ाई को रामदेव के बेटेने अपने पिता के बिना कहे की थी मुसलमानोंने अधिक दण्ड लेने का हठ किया हिंदू राजा को निज द्रव्य देना पड़ा जिसकी संख्या कुछ मन में न आ सकती थी॥ अलाउद्दीनने उससे छह सौ मन मोती दो मन हीरे लाल पन्ने चुन्नी और इस भांति सोना चांदी लेगया परंतु उस समय का मन अबके मन से न्यून होगा यह लूट लेकर अलाउद्दीन अपने पहुंचने से पच्चीसवें दिन पीछे वहां से फिरा मालवे गंधवाने और खान देश जो फिरे हुये थे उनमें होकर निर्विघ्न अपने घर पहुंचा॥ उन चढ़ाइयों में जो मुसलमानों के इतिहास में लिखी हैं यह सबसे बड़ी वीरता की थी दक्षिण के राजाओं को अत्यंत खेद हुआ इस चढ़ाई से दक्षिण देशों के द्रव्य और निर्बलता के समाचार प्रगट हो गये और मुसलमानोंने जान लिया कि उनका जय करना बहुत सहज था॥

बादशाह को शीघ्र समाचार पहुंचे कि तुम्हारे भतीजेने देवगढ़ को जय कर लिया और वहां से

इतना धन लाया कि दिल्ली के किसी बादशाह के निकट इतना धन न था॥ वृद्ध जलालुद्दीनने उस भंडार को अपना धन जाना परंतु उसके सावधान सभासदोंने शीघ्र जान लिया कि जयवंत वीरने अपना मरना ठान कर यह धन औरों के हेतु नहीं इकठा किया था॥ कईने तो शीघ्र उस पर चढ़ाई करने के लिये कहा परंतु जो बुद्धवान परिणामदर्शी थे उन्होंने यह उपदेश किया कि जब तक अलाउद्दीन प्रत्यक्ष में आज्ञा माननी न छोड़दे तब तक चुप रहना उचित है अलाउद्दीनने जाना कि राजसभा में मेरे कई शत्रु थे इसलिये उसने अपनी इच्छा को प्रगट न किया और सब उपाय बादशाह के पकड़ने के लिये किये॥ उसने अपने भाई को राजसभा में भेजा कि वह जाकर अपने चचा से छल करे और उसको यह बात समझा दे कि उस भंडार के पाने की केवल यही एक रीत है कि बादशाह आप जाकर क़ड़ानगर में अपने भतीजे से मिलें॥ रुपैये के लालच से जिस को निर्बल मनुष्य अस्सी ८० बरस का कुछ काम में नहीं ला सकता वह क़ड़ा की ओर सेना लेकर चला अलाउद्दीन उसकी अगोनी करने के लिये अपने नगर से बाहर निकला और अपने भाई अलमासबेग को जो कि छल करने में अति प्रसिद्ध था बादशाह को समझाने के लिये भेजा कि आप बहुत भीड़ मिलाप के

समय अपने पास मत रक्खो॥ अस्तान निर्बल मनुष्य केवल एक दो मनुष्यों सहित अपने भतीजे से मिलने को गया॥ पीछे उसके कटकने बादशाह को घेर कर मार डाला और उसके सिर को काट और एक बरछी में लटका कर सारे कटक में फिराया॥

अलाउद्दीन इस कलंक से कलंकित होकर शीघ्र दिल्ली की ओर चला और इस मृतक बादशाह के बेटे को देश निकाला देकर ईसवी संवत् १२८६ में आप सिंहासन पर बैठा॥ अपना कलंक सबों के चित्त से भुलाने के लिये उसने प्रजा को आनंद मंगल के काम कर करके बहलाया और बड़े बड़े राजगामी निंदा न करें इसलिये उनके अधिकार बढ़ाये॥ वह अपने सब राज्य में पश्चिम की ओर मुगलों पर और दक्खन में हिंदुओं पर जय प्राप्त करता रहा॥ सिंहासन पर बैठने से एक बरस पीछे उसने गुजरात पर कटक भेजा यद्यपि पहले समय में लोगोंने इसको बिगाड़ा परंतु संपूर्ण रूप से कभी किसी के आधीन नहीं हुआ था॥ सोलंकियों का प्राचीन कुल नष्ट हो कर भगलियों का नवीन कुल स्थापन हुआ और इस कुलने एक सौ छब्बीस बरस तक वहां राज्य किया अर्थात् जब तक गुजरात मुसलमानी राज्य में आगया जब अलाउद्दीन गुजरात की ओर चला तब जितना कि वह पहली चढ़ाइयों से बिगड़ गया था उसी

भांति फिर वह सुधर गया था और देश में पहलासा चमत्कार हो गया था॥ सोमनाथ फिर बन गया था और उसमें मूरतें और पूजारी फिर आगये थे परंतु चढ़ाइयों के कारण जो कि गुजरात और सूरत के उर्वरा देश में एका एकी बिगाड़ आगया मनुष्य के परिश्रम का प्रत्येक चिन्ह मिट गया और देश नष्ट हो गया॥ नरहवाला का प्राचीन राज्य धूल में मिल गया॥ बड़ा चमत्कारी पत्तन नगर उजड़ गया जिस में अनेक स्थान अजमेर की खान के मर मर पत्थर से बने हुवे थे सोमनाथ के पास एक मस्जिद बनाई गई बुध की मूरत फेंकी गई और वहां के प्रकृत निवासियों की मत संबंधी पुस्तकें बुध के मत की या पुरान सब जलाये गये और लूट में ये दो वस्तु लाये एक काफूर नाम सेवक जो बड़ा सुंदर था और वहां के राजा की एक कौला देवी नाम राणी जो सुरूप में हिंदुस्थान के बीच एक ही थी॥ राणी को अपने मंदर में भिजवा दी और काफूर को एक अधिकार मिला जिस में उसका बड़ा नाम हुआ और थोड़े काल पीछे दक्षिण के लिये और एक आपत्ति रूप उपजा॥

गुजरात की चढ़ाई पूरी होने हो मुग़लों के दो लाख घोड़े सिंधु नदी के तीर पर आये और सिंधु और दिल्ली के बीच के देशों को सत्यानाश करके

दिल्ली को घेरा जहां कि देश देश के लोग बचने के लिये भाग कर आबसे थे और बड़ी भीड़ हो गई इसलिये अकाल पड़ा निदान बादशाहने मुग़लों से युद्ध करने का बिचार किया इस कारण कि भूख के मारे मरने से युद्ध करके मरना उत्तम है॥ कहते हैं कि बादशाह तीन लाख घोड़े लेकर बाहर नगर के निकला और कटक को रणभूम में लाकर ज़फरखां को दाहनी ओर के कटक का अधिपति बनाया यह मनुष्य उस काल में बड़ा बीर था॥ दोनों कटक में युद्ध होने लगा और ज़फरखांने पराक्रम सहित चढ़ाई करके साम्हने की कतार को तोड़ डाला बादशाहने ज़फरखां के भाई को उसकी सहायता के लिये आज्ञा दी परंतु उसने जलन से बादशाह की बात को टाल दिया॥ ज़फरखां शत्रुओं को भगाता हुआ पंद्रह कोस तक चला गया जहां कि एक नवीन कटकने उसपर चढ़ाई की और वहां बड़ी बीरता दिखा कर मारा गया॥ ज़फरखां का डर मुग़लों के मन में ऐसा व्याप गया था कि जब कभी मुग़लों के घोड़े चौंक पड़ते थे तो वे कहते थे कि क्या ज़फरखां दिखाई दिया परंतु तो भी उसके अगुणग्राहक खामीने कहा कि मैं उसके बड़े बड़े गुणों से डरता था इसलिये उस सेनापति के मारे जाने से मुझे ऐसी प्रसन्नता हुई जैसी मुग़लों से जय पाने में॥

अलाउद्दीन बड़ा गुणवान राजकुंवर था परंतु उसके उद्योग व्यर्थ थे और वह उनके पूरे करने में उपाय नहीं करता था उसने महम्मद की भांति एक नवीन मत स्थापन करना बिचारा परंतु बड़ी कठनाई से उसके मंत्रियोंने उसे उस काम से रोका॥ उसने बिद्या प्राप्त करने में बड़ी असावधानी की थी इस- लिये वह पढ़ना लिखना नहीं जानता था परंतु उसने बड़ी अवस्था में फारसी पढ़ने का अभ्यास किया और उस भाषा के पार हुआ॥ उसके राज्य के तीसरे बरस में एक सरदार जिस की उसने अप्रतिष्ठा की थी वह हमीर चोहान रणथंबोर के राजा के यहां शरण लेने गया यह गढ़ हिंदुस्थान के सब गढ़ों में दृढ़ है॥ अलाउद्दीनने अपराधी को हिंदू राजा से मांगा तब उसने यह अच्छा उत्तर दिया कि सूरज चाहे पश्चिम में उदय हो और सुमर चाहे धरती में मिलजाय परंतु हम अपने शरणागत को बिश्वास घात करके नहीं पकड़ा देंगे॥ इस बातसे उसने झट रणथंबोर को घेर लिया और निदान उसे जीत लिया परंतु सूरबीर हमीर उसके बचाने में मारा गया और उसके रणवासने उसके पीछे जीना अच्छा न जान सब राणियां आग में जल मरीं॥ जब तक अलाउद्दीन उस चढ़ाई पर था तब तक उसके देश में कई स्थान पर झगड़े उठे॥ जब वहां से फिरा

उसने अपने सभासदों को इकठा किया और देश भर में बिगाड़ होने का कारण पूछा तब उन्होंने कहा कि आप देशके कामों में ध्यान नहीं लगाते और मदिरा बहुत पीते हो और बड़े २ लोग आपस में संबंध करते हैं और द्रव्य का बांट समान नहीं होता है इसलिये देश का सब प्रबंध बिगड़ गया है ॥ इस बात को मिटानेके लिये बादशाहने राज काज में अपना बहुत मन लगाया और तहखानों में से शराब गलियों में बहा दी और निज प्रजा को भी मदिरा पीने का निषेध किया और बड़े लोगों से कह दिया कि तुम मेरी आज्ञा बिना आपस में संबंध न किया करो और द्रव्य का समान बांट करने की रीत दूर करने के लिये उसने सब प्रजा को दीन करदेने का उद्योग किया और राज काज में ध्यान लगाया और नाज का भाव अपने मनके अनुसार ठहरा दिया और इसी भांति सब वस्तु उलट पुलट करके अपने कटक को नई रीत से सजाया और गिनतीके समय जान गया कि उसका कटक चार लाख पिछत्तर सहस्र घोड़ों का था ॥

उसके राज्य में ईसवी संवत् १३०३ का बरस बड़ा प्रसिद्ध है ॥ उसने बंगाले के मार्ग से तिलंगाना में सेना भेजी और आप चीतोड़ पर जो कि राजकुल मेवाड़ की राजधानी है चढ़ाई करने को गया हिंदु-

ख्यानी इतिहासों के अनुसार यह उसकी दूसरी चढ़ाई थी ॥ प्रथम उसने पद्मनी राणी के लिये चीतोड़ का घेरा था यह भीम की अति सुंदर राणी थी और उसने कहा कि जो तुम उसे मुझे दो तो चीतोड़ का घेरा छोड़दूं जब यह बात अंगीकार न ऊई तब उसने केवल यह मांगा कि मुझे एकही बेर उसे दिखादो चाहे शीशे ही में उसका प्रतिबिंब दिखा दो इस बात को राजाने मान लिया अलाउद्दीनने निडर हो थोड़े मनुष्य ले नगर में प्रवेश करके अपनी प्रिय को देखा ॥ भीम भी इसी भांति अलाउद्दीन के कटक तक उसके साथ गया परंतु हिंदू राजाने अपने शत्रु से छल पाया अलाउद्दीनने विश्वास घात करके उसको पकड़ रक्खा और कहा जो अपनी राणी को दो तो तुम छूटो जब यह बात पद्मनी राणी तक पऊंची तब उसने अपने तईं अपने को इस बात पर सोंप देना अंगीकार किया कि मैं शत्रु के कटक में अपनी प्रतिष्ठा के योग्य अपनी सहेलियों को साथ लेकर आऊंगी सात सौ डोली मुसलमानी कटक में उसके साथ आईं यद्यपि प्रत्यक्ष में यह जान पड़ता था कि उसकी सहेलियां उनमें हैं परंतु वस्तुतः अच्छे शस्त्र पहरे ऊवे सिपाही उनमें थे उनमें से एक फिरती ऊई डोली में उसने अपने पति को बैठा कर भगा दिया शत्रु को सेना के किनारे पर पऊंचकर

वह एक बड़े शीघ्र गामी घोड़े पर चढ़ चीतोड़ को चला परंतु अलाउद्दीनने शीघ्र उसे घेर लिया मेवाड़ की सेना उसके बचाव में बहुत मारी गई परंतु बादशाह को उलटा फिर आना पड़ा और यह बात जान पड़ती है कि पद्मनी राणीने भी निज भागने का उपाय किया ईसवी संवत् १३०३ में अलाउद्दीनने फिर चीतोड़ को घेरा और उसके बचाव में राजा के सब बेटों में से केवल एक बेटा बचा उस लड़के को उसके बापने भागने के लिये कहा इस कारण से कि राजकुल नष्ट न होने पावे और वह बाप का कहना मान कर भाग गया जब कि बचने की कुछ आस न रही तब नगर में लकड़ियां जलाकर अच्छे२ कुलों की स्त्रियां जल मरीं राजाने नगर द्वार को खोल दिया और कई प्रसिद्ध बीरों को साथ लेकर निकला और शत्रु पर चढ़ाई करके जैसे वह चाहता था वैसे ही लड़के मारा गया बादशाहने नगर में घुस कर देखा कि गली गली में रक्षक मरे पड़े हैं और पद्मनी राणी सहेलियों समेत चिता बना कर जल मरी थी उसका धुवां मार्गों में भर रहा है॥ वह थोड़ काल तक नगर की रचना देखकर प्रशंसा करता रहा परंतु तो भी नाना प्रकार का अन्याय करता रहा मंदरों को ढवा डाला और राजमंदरों को ढवाकर धूल में मिला दिया इस दुर्दशा में भीम और पद्मनी राणी के

मंदर बचे और दुर्ग का अधिकार झालार के राज-
कुमार को मिला ॥

दो सेना दो ओर थीं उन में एक तो चीतोड़ को
घेरे ज़ुवे थी और दूसरी दक्खन को जाती थी ॥
मुगलोंने एक लाख बीस सहस्र सेना सहित सिंधु
नदी के पार होने की फिर इच्छा की उन्होंने सब
देश में लूट मचा दी और दिल्ली के बाहर तक के
स्थानों को लूटा जिस रीत से वे हटाये गये उसको
इतिहासवेत्ताओंने नहीं लिखा है परंतु केवल इतना
लिखा है कि बादशाहने किसी ऋषी की प्रार्थना की
और उसने बादशाह को कुछ दैवी सामर्थ दी थी ॥
ईसवी संवत् १३०५ और १३०६ में वे फिर सिंधु के पार
ज़ुवे परंतु दोनों चढ़ाइयों में हार गये ॥ डरा देने के
लिये बादशाहने सब कैदियों का सिर कटवा के
उनको खोपड़ियों की एक लाट दिल्ली में बनाने की
आज्ञा दी और स्त्रियों और बालकों को दास पदवी
में बेच डालने की आज्ञा की इस वृत्तांत के पीछे
उसके राज्य में केवल एक और चढ़ाई ज़ुई और
फिर मुगल ठंडे पड़ गये बादशाह की सब चढ़ाइयों
में जय ज़ुई और इस कारण से अज्ञान मनुष्य ऐसा
बिचारते हैं कि उसको दैवी सहायता ज़ुई थी ॥

देव गढ़ के राजाने कर के भेजने पर कुछ ध्यान न
रक्खा इसलिये एक बड़ा कटक दक्षिण को जाने के

लिये उपस्थित हुआ इस कटक का सेनापति मलिक काफूर हुआ जिस का वर्णन आगे कर चुके हैं कि बादशाह उससे ऐसा मोहित होगया था कि राज-कुल के सब लोगों का अधिपति बना दिया था॥ मलिक काफूर इस पदवी के पाने योग्य ही था क्योंकि युद्ध विषय और देश संबंधी कामों में बड़ा कुशल था इस बात में उसने अपने स्वामी को निरास नहीं किया क्योंकि उसने सब चढ़ाइयों में जय पाई थी परंतु इतिहासवेत्ता यह बात प्रसन्नता पूर्वक लिखते हैं कि उसने देवल देवी को पकड़ लिया जो राणी से उत्पन्न हुई थी उन दिनों में जब कि वह हिंदू थी और पूर्व पति के निकट थी वह तरुण हो गई थी और सुंदरताई में ठीक अपनी मा के समान थी जब वह दिल्ली में आई बादशाह के पुत्रने उससे बिवाह किया देव गढ़ के राजा को काफूरने जीत लिया और वह बादशाह की सभा में आधीन बन-कर आया और आगे को दृढ़ मिलाप रहने के कारण बादशाहने उसका राज्य उसे फिर दे दिया वारंगोल की चढ़ाई में जो कि तिलंगाने में है जय न हुई इसलिये मलिक काफूर को सेना सहित उस नगर पर भेजा और उसने कई चढ़ाइयों के घेरने के पीछे उसको ले लिया वहां की उसके बहुत लूट हाथ लगी जिस को लेकर दिल्ली में चला आया दूसरे

बरस यह फिर दक्षिण में मुसलमानों का राज्य फैलाने के लिये बादशाह के कहने से आया और अपने चलने से तीन महीने पीछे द्वार समुद्र में पहुंचा यह एक नगर है और इसके नाम से जान पड़ता है यह नगर समुद्र के तीर पर होगा ॥ परंतु निश्चय करके वह थल में श्री रंग पत्तन से उत्तर को पचास कोस है करनाटक के राजा के देश का सत्यानाश करके और मंदरों में से सोने की मूरतें लूट काफूर समुद्र के तीर पर भी गया ॥ समुद्र के तीर पर उसने एक मस्जिद बनवाई और थोड़ेसे काल पीछे उसने पृथ्वी में से बड़ा भंडार पाया उसे यह अपने आधीन करके दिल्ली को चला और वहां आकर उसने नव्वे सहस्र मन सोने से घाट बादशाह को न दिया यद्यपि दक्षिण में चांदी को थोड़ा जानते थे और सोना बहुत था तो भी इतना सोना युद्ध में नहीं आता ॥ बादशाहने उदारता पूर्बक यह द्रव्य सेनापतियों और पंडितों को दिया परंतु उसकी उदारता शीघ्र लोग भूल गये क्योंकि उसने पचास सहस्र से अधिक मुग़लों को जो मुसलमानी मत में आगये थे और जिन को कहते थे कि ये राज काज में हान करेंगे उनको मरवा डाला।

यद्यपि उसके ऐसे अन्याय के कर्म थे तो भी कहते हैं कि देश उस बादशाह के समय में ऐसा बसता था कि ऐसा कभी किसी अगले बादशाह के समय में न

बसा था और सब से दूर दूर के स्थानों में न्याय और प्रबंध था और सब देश में और विशेष करके दिल्ली में बड़े बड़े स्थान मसजिद हम्माम ताल गढ़ और पाठशाला अच्छे प्रकार से बनते चले जाते थे जब अलाउद्दीन की अत्यंत प्रतिष्ठा हो गई तब आप आनंद में पड़ा और मलिक काफूर नाम जन जो उसके सब लोगों में मुख्य था राज लेने की इच्छा करने लगा जब बादशाह सामर्थ हीन हुआ तब देश देश के लोग उस से फिरने लगे और उन झगड़ों के सोच में उसका रोग अधिक होता गया ॥ वह ईसवी १३१६ संवत् में बीस बरस राज्य करके मरगया॥ संदेह करते हैं उसको उसी दासन विष दे दिया जिस को उसने ऐसी बड़ी पदवी दी थी धन और सामर्थ जो उसने प्राप्त की थी केवल महमूदग़ज़नवी को छोड़ कर और हिंदुस्थान के मुसलमान बादशाहों से अधिक था यह बादशाह उन हिंदुस्थानी बादशाहों और शाहनशाहों की गिनती में था जो बड़े उद्योगी और पराक्रमी थे ॥ उसने सिक्का जो चलाया था उस में अपना नाम दूसरा सिकंदर खुदवाया था और उसका यह नाम होना ठीक था हिंदुओं के राज्य जो पहले जय करनेवालों से बच रहे थे उनको उसने जीत लिया और बड़े नगर नरहवाला और प्राचीन धार और अवंती मंदोर और देव गढ़ और

सोलंकियों और परमरा के कुलवालों और टैक और सब अग्नि कुलवालों की राजधानियों का नष्ट कर दिया॥

मलिक काफूरने अपने बादशाह और हितकारी के मरण काल पीछे उसके बड़े पुत्रों की आखें निकलवा गेरीं और सब से छोटे पुत्र को जो कि अभी बालक था सिंहासन पर बैठाया इस आस से कि इसके नाम से मैं राज्य करूं परंतु पैंतीस दिन के भीतर राजा के प्रधान लोगोंने उसे मार डाला और मुबारक नाम खिलजी को बादशाह किया॥ इस बादशाहने उन लोगों के मरवाने का प्रारंभ किया जिन्होंने उसे सिंहासन पर बैठाया था और अत्यंत तुच्छ लोगों को बड़ी बड़ी पदवी देने लगा उसने निज पिता के कई कठिन कानून अच्छे भी दूर किये क्योंकि उसने कानूनों को बिना बिचारे दूर किया था॥ उसने गुजरात देश को अपने बस में किया जो बहुत काल से फिर रहा था और दक्षिण में चढ़ाई करके नये जय किये हुये देशों में अपना अधिकार स्थापन किया अपने दुर्भाग्य से उसने मिल कर खुसरो को अपना सभासद किया और उसने बादशाह होने की इच्छा की इसलिये मलिक खुसरोने बादशाह के तईं अनेक भांति के आनंद चैन में लगाया जो जो कुकर्म्म बादशाह से उसने करवाये उनका बर्णन नहीं

हो सकता है जब बादशाह की अत्यंत निंदा हो गई तब मलिकखुसरोने उसको मरवा डाला और इस भांति खिलजियों के कुल का अंत हुआ इस कुल में केवल चार बादशाह हुवे जिन्होंने दिल्ली के सिंहासन पर तेतीस बरस राज्य किया उनके समय में दिल्ली के राज्य की सीमा इतनी बढ़ी थी जितनी मुग़लों के आने तक कभी नहीं फैली थी॥ अमीर लोग नहीं चाहते थे कि इस रीत खुसरो बादशाह हो जाय और उसके अन्याय के कारण प्रजा उस से अप्रसन्न थी उसको बादशाह ऊवे एक बरस दिन नहीं हुआ था कि मुलतान और देवलपुर का सूबेदार जिस का नाम ग़ाज़ीबेग तुग़लक था वह एक बड़ी सेना लेकर दिल्ली को चला और आते ही अन्याई का जय करके सब प्रधान लोगों की प्रसन्नता से दिल्ली के सिंहासन पर बैठा॥

बारहवां अध्याय।

गियासुद्दीन—महमूद तुग़लक़—उसका अत्यंत व्यय—दौलताबाद को अपनी राजधानी करने के लिये उद्योग—मेवाड़ की स्वाधीनता—दक्खन का फिर जाना—फ़ीरोज़ तुग़लक़—उसकी सुचाल—उसकी वृद्धि—बंगाला फिर गया—उसके मरण काल पीछे दस बरस तक घबराहट—मालवा फिर गया—गुजरात फिर गई—खानदेश—जौनपुर—तैमूर—उसने दिल्ली को लिया—और उसे छोड़ दिया—खिज्रखांने सय्यदों के कुल को स्थापन किया॥

तुग़लक़ जिसने राज्य पाते ही अपना नाम गियासुद्दीन रक्खा वस्तुत वह बुलबुन का दास था और दिन दिन बड़ा काम पाते पाते निदान वह मुलतान का सूबेदार नियत हुआ था जिस सेवा से वह सिंहासनपर बैठा उसने राज सब अच्छी रीति से किया और व्योपार की बहुत सहायता की और विद्यावानों को अपने पास बुलाया, उसके बेटे अलफ़-खां को युवराज पदवी मिली थी॥ वह एक बड़ा

कटक लेकर दक्खन के सूबे पर गया जो पूर्व राज्य के पूरे प्रबंध के कारण बिगड़ गया था॥ उसने वारंगोल को घेरा जो तिलंगाने में है परंतु उसके बड़े बड़े प्रधान लोगोंने उसकी संगत छोड़ दी फिरकर आया तो केवल तीन सहस्र सेना उसके साथ रहगई थी शीघ्र फिर सेना इकठी की और अलफखां फिर दूसरी बेर दक्खन को गया और उसने वारंगोल को ले लिया और सहस्रों हिंदुओं को कटा की और राजा को उसके कुटंब सहित दिल्ली को भेज दिया॥ उस समय में बंगाले की ओर बहुत झगड़े की बातें आईं और गियासुद्दीन आप बंगाले को चला वहां के सूबेदारने उसकी आज्ञा मानी तब गियासुद्दीनने उसके राज का चिन्ह रखने के लिये उसे आज्ञा दी॥ जब वह दिल्ली को फिरा आता था तब अफगानपुर में अपने पुत्र अलफखां से मिला वहां उसके पुत्रने बाप से मिलने के हेतु तीन दिन में एक चोबी घर थोड़े दिन के लिये बनवाया था बाप बेटे दोनों उस स्थान में मिले और वहां भोजन किया परंतु बेटे के जाते ही घर गिर पड़ा और बाप और उसके संगी दब गये कहते हैं कि यह अलफखां का छल था, वह तीन दिन के भीतर ईसवी संवत् १३२५ में सिंहासन पर बैठा और अपना नाम महम्मद तुग़लक रक्खा॥

कहते हैं कि उस में अत्यंत उलटे गुण थे परंतु उस में बावलापन बहुत था और उसके समय में उसके राज्य पर उसकी अज्ञानता से ऐसी ऐसी आपत्ति आईं जो कभी किसी राज पर न आई थीं और उसकी प्रशंसा में लिखा है कि वह अपने समय में बड़ा कुशल बादशाह था प्रत्येक विद्या में सावधान था यहां तक कि यूनानी विद्या भी जानता था विद्या की बढ़वार बहुत चाहता था और रणभूम में बड़ा योद्धा था तो भी वह अपने अगले बादशाहों में सब से अधिक चल चित्त अन्याई और निर्दई था, मनुष्य जात के मारडालने में ऐसी थोड़ी ढील करता था कि जब पलटा लेता था तब जान पड़ता था कि मनुष्य कुल को नष्ट किया चाहता है कोई अठवाड़ा नहीं बीतता था कि जिस में एक दो अमीरों को कटा न हो॥ उसके राज्य के प्रारंभ में मुगल फिर पश्चिम के देशों की ओर आये॥ और बादशाहने देखा कि मैं उनका साम्हना नहीं करसकता इसलिये उनको बहुतसा द्रव्य देके उलटा फेर दिया॥ इस लज्जा को मिटाने के लिये उसने दक्षिण पर सेना भेजी और उन दूर के देशों में जिन में कि बादशाही राज्य केवल नाम मात्र था उनको ऐसा अपने आधीन किया कि वे दिल्ली के पास के देशों की भांति राज में मिल गये परंतु उसकी अत्यंत अज्ञानता से उसके

मरने से पहले नर्बदा के दक्षिण के सब देश राज्य से जुदे होकर स्वाधीन हो गये थे॥ भारी कर जो वह प्रजा से लेने लगा इतना था कि देश उसका सहन न कर सका॥ जमीनदार और किसान जंगले में भाग गये धरती बिना बोई जोती पड़ी रही और अच्छे से अच्छे देश काल के मारे उजड़ गये॥ बादशाहने अपनी आधीन प्रजा को बिगाड़ने के लिये एक तांबे का सिक्का बनाया और उसका मोल जो मनमाना ठहराया और प्रजा में चलाया जिस से राज्य भरका देन लेन बिगड़ गया परंतु जब इस उपाय से भी प्रजा कारुपैया बादशाह के सिर से न उतरा तब उसने लेखनी से सब रुपैये को काट दिया॥ उसने भंडार को रीता और प्रजा को अप्रसन्न देख इस बात का उपाय चीन पर चढ़ाई करने में बिचारा॥ उसने इस देश के द्रव्य की बड़ी प्रशंसा सुनी थी॥ यद्यपि उसके सभासदोंने उस चढ़ाई का निषेध किया था तो भी उसने एक लाख सेना देकर अपने भतीजे को भेजा वह हिमालय पहाड़ों में होके चीन की सीमा पर पहुंचा परंतु चीन वालों की बड़ी सेनाने उसका साम्हना किया और उनको हटा दिया और फिरते समय उनको अत्यंत दुःखी किया और उस दुःख से थोड़ेसे मनुष्य बचे वे लोग जो दिल्ली में फिर कर आये उनको बादशाहने मरवाडाला॥ ईसवी

संवत् १३३८ में बादशाह का भतीजा जिस का नाम खोराशिप था यह सागर का सूबेदार था राज्य लेने की इच्छा करने लगा और बादशाही सेनापतियों पर चढ़ाई करने लगा बादशाह आप रणभूमि में गया तब उसके भतीजे को पीछे हटना पड़ा और पहले भाग कर कंपला के हिंदू राजा के निकट और पीछे दक्षिण में द्वार समुद्र के राजा के निकट शरण लेने गया॥ उस राजाने उसके चचा को उसे सौंप दिया॥ तब बादशाहने उस जीते हुवे की खाल उतारने की आज्ञा दी और दक्षिण की ओर चलते चलते महम्मद तुग़लक देवगढ़ में पहुंचा और उस नगर का स्थान देख कर ऐसा मोहित हुआ कि उसको अपनी राजधानी करना विचारा और अपनी सदैव की अज्ञानता के अनुसार दिल्ली को रीती करदेने और पुरुष, स्त्री, लड़के और धन और चोपायों को वहां लेजाने की आज्ञा दी और छाया के लिये उसने आज्ञा की कि बड़े बड़े वृक्ष जड़ से उखाड़ कर लगाये जावें॥ यद्यपि दिल्ली ऊजड़ हो गई परंतु देवगढ़ जिस का नाम उसने दौलताबाद रक्खा वह भी अच्छी भांति न बसा क्योंकि एक दिन में राजधानी नहीं बन सकती है और इस रीत से बसाने में और बिगाड़ होता है॥ इस नवीन राजधानी के बसाने को उसने अपने सब छोटे

बड़े सरदारों को अपना अपना कुटुंब लाकर वहां बसाने के लिये आज्ञा दी इस कारण मलिक बहराम जो मुलतान का सूबेदार था फिर गया उसको दंड देने के लिये बादशाह आप चला और उसे जय करके दिल्ली के मार्ग से वह फिर चला और जब अपने प्राचीन नगर के निकट गया तब बहुतेरे उसके सिपाही उस से अलग होने लगे और बादशाह इस बात के बुरे फलों को दूर करने के लिये दो बरस तक प्राचीन राजधानी में बसा किया ॥ इस से लोगोंने जाना कि वह सदा वहीं रहेगा परंतु एक नवीन राजधानी के बनाने का विचार उसके चित्त से फिर आया और उसने दूसरी बेर नगर को उजाड़ दिया और सब नगर निवासियों को लेकर फिर दौलताबाद को चला परंतु जब उसने अनेक कुलों को हीन कर दिया तब उसको इस विचार का पूरा होना असंभव जान पड़ा और सामर्थहीन दरिद्री नगर निवासियों को फिर दिल्ली जाने के लिये आज्ञा दी॥ परंतु फिरने समय बहुत लोग अकाल से मरगये उसका जंगलीपन और चंचल सुभाव कुछ कहने में नहीं आता ॥ एक बेर उसने एका एकी कनोज पर चढ़ाई की और नगर के आस पास के लोगों को बिना अपराध कटा करवाई ॥ एक समय लड़ाई में उसके दांत दुखे और उसका एक दांत टूट गया तब उसने बादशाहों की

को धूम धाम के साथ गोर नगर में उसे गड़वाया और एक बहुत अच्छी कबर बनवाई जो चिरकाल तक उसकी अज्ञानता को प्रगट करती रही॥ उसके अमित खरच के कारण सब देश बिगड़ गये॥ और उसे खेती कराने के लिये अपना भंडार खोलना पड़ा परंतु जमीनदारों ने जो रुपैया बैल बीज मोल लेने के लिये पहले लिया था सो भोजन के मोल लेने में उठा दिया इसलिये धरती फिर बिन बोई पड़ी रही॥ आपत्ति उसके ऊपर इकठी हुईं निदान उसने अपने तईं आप समझाया कि ये आपत्ति इस कारण से आई हैं कि वह खलीफा की आज्ञा से सिंहासन पर नहीं बैठा जो पैगंबर का प्रतिनिधि है इसलिये उसने खलीफा की आज्ञा लेने के लिये अच्छी अच्छी वस्तु भेट रखने के हेतु देकर एक दूत को अरब में भेजने की इच्छा की जब उसको यह निश्चय हुआ कि खलीफाने भी एक दूत भेजा है तब महम्मद तुगलक कुछ कोस तक उसको आगे लेने गया और खलीफा के पत्र को अपने सिर पर रख लिया फिर उसने आज्ञा दी कि खुतबे में से हरेक बादशाह का और अपने बाप का नाम निकाल डालो क्योंकि ये खलीफा की आज्ञा से बादशाह नहीं हुवे थे और उसने खलीफा का नाम अपने कपड़ों और अन्य वस्तुओं पर खुद-वाया॥

इस छोटीसी पुस्तक में उस बादशाह के संपूर्ण चमत्कारगत कामों का वर्णन करना असंभव है जो आधा वीर और आधा बावला था और वस्तुतः संपूर्ण उसकी कहानी से कुछ फल भी नहीं दिखाई देता और उसके कामों का फल यह था कि उसकी प्रजा उस से अप्रसन्न हुई और सूबे फिर गये उसही के राज्य में पहले पहल सूबेदार स्वाधीन हो गये और इसी भांति हिंदुस्थान में से मुसलमानी राज्य का योग बिगाड़ गेरा और उस से ढाई सौ बरस पीछे अकबर के समय तक फिर यह योग हुआ उसके समय में फिरे हुवे सूबों को जय किया॥ महम्मद अपने राज्य के अंत के बरस में सिंधु नदी के तीर पर ठठा के अधिपत को दंड करने के लिये चला जब वह नगर तीसेक कोस रहा था तब वह मोहर्रम करने के लिये दस दिन ठहरा और बहुत मच्छियां खाईं इस से उसे ज्वर हुआ और उसके भारी उद्योगने उसे कुछ आनंद न लेने दिया जो आनंद उसके रोग के लिये आवश्यक था और वह एक छोटीसी नाव पर चढ़के वहां तक गया जहां से वह नगर १५ कोस रहा वहां ईसवी संवत् १३५१ में कुत्सित प्रबंध और दरिद्रता सहित सत्ताईस बरस राज्य करके मरगया॥

महम्मद तुगलक के राज्य के अंत में हमीरने जो चीतोड़ के राजाओं की संतान था उस देश में आकर

बादशाह के अधिकारी को वश किया और आप केवल उस देश का अधिपति ही नहीं हो गया था बरन मेवाड़ की सीमा को बढ़ा करके अपने प्राचीन कुल को प्रसिद्ध किया उस समय में उसके भिन्न उत्तर हिंदुस्थान में कोई और राजा स्वाधीन न था संपूर्ण और राजकुल नष्ट होगये थे परंतु उदयपुर जिस को अलाउद्दीनने धूल में मिला दिया था फिर सामर्थ प्राप्त करके दो सौ बरसतक बर्द्धित होता रहा अंत में सुलतान बाबर के समय में मुसलमानों की चढ़ाइयां भईं॥

महम्मद तुगलक के राज्य के अंत में दक्खन देश भी पचास बरस तक दिल्ली के राज्य में मिला रहकर जुदा हो गया और वहां के सूबेदार स्वाधीन बादशाह हो गये दक्खन के मुसलमान बादशाह जो बड़े बली और प्रसिद्ध हुवे थे वे बहुधा बहमनी कुल के थे महम्मद तुगलक के स्थानापन्नने जो किसी को दुःख नहीं दिया चाहता था उन फिरे हुवे सूबों को जो नर्बदा के पार हैं फिर लेने की इच्छा न की इस कारण दिल्ली और दक्खन में दो सौ बरस से अधिक२ तक कुछ संबंध न रहा इस कारण हम दक्खन का बर्णन एक अलग अध्याय में लिखेंगे जिससे मुसलमानों के राज्य का विषय लिखने में कुछ हान न होगी॥

महम्मद तुग़लक की गद्दी पर उसका भतीजा फ़ीरोज़ तुग़लक बैठा॥ इस बादशाह का सुभाव अपने चचा के सुभाव से बिपरीत था यह अपनी सुशीलता के कारण अति प्रसिद्ध था॥ फ़ीरोज़ अपने चचा के मरण समय सेना में था सेनापतियोंने मिल कर उसे बादशाह बनाया परंतु ख़ाजहजहां जो मृतक बादशाह का संबंधी और नब्बे बरस की अवस्था का उसने दिल्ली में आकर छह बरस के लड़के को सिंहासन पर बैठाया यह कह कर कि वह महम्मद तुग़लक का बेटा है कदाचित् यह बात संभव होय परंतु सेनापतियोंने राज के झगड़े दूर करने के लिये बड़ी बुद्धबानी से फ़ीरोज़ तुग़लक का सत्वस्थापन किया और ख़ाजहजहां को आधीन होना पड़ा ईसवी संबत् १३५१ में फ़ीरोज़ तुग़लक दिल्ली में आया और उस समय से लेकर अपनी बृद्ध अवस्था तक न्याय पूर्वक राज्य करता रहा यद्यपि उसको उन लड़ाइयों में जाना पड़ा जो उसके पूर्वजों के अपराध से हुई थीं परंतु वह संधि बहुत चाहता था और इसलिये वह अच्छे२ सूबों के अलग हो जाने से भी चुप चाप रहा वह देश का भला करने में बड़ा प्रसन्न होता था उसके ये काम हैं उसने पचास बंद बंधवाये जिन से सारी पृथ्वी में पानो सहज ही सींचा जाय, चालीस मसजिद तीस पाठशाला, बीस राजमंदिर, सौ

सराय, दो सौ नगर, तीस तड़ाग, सौ चिकित्सालय पांच मक़बरे सौ हम्माम, दस बड़े बड़े मीनार, दस बावड़ी, और डेढ़ सौ पुल बनवाये॥

हमने आगे वर्णन किया है कि मेवाड़ और दक्खन फ़ीरोज़ तुग़लक़ के पूर्व पुरुष के समय में जुदे २ हो-गये थे और फ़ीरोज़तुग़लक़ के समय में सिंधु और बंगाले के सूबों के फिर जाने से राज्य की सीमा और भी घट गई थी महम्मद तुग़लक़ के समय में जब वह बावलपन से दिल्ली को उजाड़ कर दौलताबाद के बसाने में लगा हुआ था तब नसीरुद्दीनने बंगाले में स्वाधीन हो कर सिक्का और खुतबा अपने नाम का चलाया॥ इतिहासवेत्ता इस को बंगाले का पहला स्वाधीन बादशाह कहते हैं॥ परंतु दिल्ली की राज-सभा उसको फिरा हुआ जानती थी॥ ईसवी संवत् १३४० में उसने अपने तईं बादशाह कहलाया परंतु दो बरस पीछे अलीमुबारक़ने उसको मार डाला और उसके कोके हाजी इलियासने फिर अलीमु-बारक़ को मार डाला॥ और हाजी इलियास के समय में फ़ीरोज़तुग़लक़ बंगाले को जय करने के लिये फिर सेना इकठी करके चला परंतु उसकी यह मनोकामना सुफल न भई॥

ईसवी संवत् १३५६ में उसने हाजी इलियास से बचन किया और उसका स्वाधीन होना अंगीकार

करके उसके देश की सीमा स्थापन की इसलिये बंगाले के मुसलमान हाकिमों के स्वाधीन होने का सच्चा काल यह निश्चय हो सकता है वे पूर्वी कहलाते थे ॥ हाजी इलियासने हाजीपुर बसाया जो अब बरसवें दिन के मेले और घुड़दौड़ के कारण प्रसिद्ध है और इस नगर के बसाने से बिचार में आता है कि उसके राज्य की सीमा बहार और गंदक था ॥

चोतीस बरस राज्य करके बादशाह फीरोज़ तुग़लकने १३२७ संवत् ईसवी में अपने बेटे महम्मद को राज्य सोंपा जो बहुधा दूसरा तुग़लक कहलाता था यह तरुण बादशाह राज्य पाते ही सुख भोग में लगा और अपने पिता के बुद्धमान प्रधानों को अपनी सभा से निकाल दिया ॥ कुलीनोंने बादशाह के संबंधियों से मिल कर एक लाख सेना इकठी की और दिल्ली में तब बादशाह की ओरवालोंने उस कटक का साम्हना परिश्रम पूर्वक किया दो दिन तक बड़ी कटा रही और गली चौराह मरे हुवों से भर गये तीसरे दिन वृद्ध बादशाह को लोगोंने लड़नेवालों के मध्य में ला रक्खा वृद्ध बादशाह को देख कर उसके बेटे के मिलापी उस से अलग हो कर बादशाह से आमिले और फीरोज़ तुग़लकने फिर राज्य लिया परंतु उसने देखा कि मैं राज काज नहीं कर सकता इसलिये उसने अपने ज्येष्ठ पुत्र फतहखां के बेटे गिया-

रुद्दीन को राज्य दिया और नब्बे बरस की वृद्धावस्था में ईसवी संबत् १३८८ के बीच मरगया ॥ यह बादशाह बुद्धवान, उद्योगी, और मिलापी था और उसके समय में देश बसा और प्रसन्न रहा ॥ पहले ही पहल उसीने अफगानों को हिंदुस्थान में प्रतिष्ठा दी उनको हिंदुस्थान में उस समय तक ऐसे तुच्छ समझते थे जैसे अब यूरप में यहूदियों को जान्ते हैं क्योंकि लोग कहते थे कि वे यहूदियों की संतान हैं ॥

फीरोज़ तुग़लक के मरण काल पीछे दस बरस के बीच दिल्ली के सिंहासन पर चार बादशाह बैठे सब देश में ऊलड़ मच गया ॥ सूबेदारोंने राज्य के निर्बल होने से अवसर देख कर आज्ञा माननी छोड़ दी और हिंदुस्थान में एक और अति भयंकर बादशाहने चढ़ाई की ॥ फीरोज़ तुग़लक का पोता गियासुद्दीन राज्य पाते ही सुख भोग में डूब गया और पांच महीने के भीतर मारा गया ॥ उसका चचेरा भाई अबुबकर नाम बादशाह हुआ परंतु मुग़लोंने जो मुसलमानों के मत में आ गये थे दूसरे तुग़लक को जो फीरोज़ तुग़लक के समय में सिंहासन पर बैठा और फिर निकाला गया जिस का हम पहले वर्णन कर चुके हैं राज्य का झगड़ा करने के लिये बुलाया वह एक कटक इकठा करके दिल्ली को चला परंतु हार गया ॥ हिंदू और मुसलमान बड़े बड़े लोगोंने उसकी सहायता

की और उसने फिर राज्य लेने के लिये उद्योग किया परंतु फिर हार गया उसने तीसरी बेर सेना इकठी की और छल से अबूबकर को एक नगर में जिसे जलेसर कहते हैं जो दिल्ली से बीस कोस है लाकर आप शीघ्र शीघ्र दिल्ली को चला और उस पर अपना अधिकार कर लिया अबूबकर उसके पीछे पीछे चला आया और तीसरी बेर राज्य प्राप्त किया॥ परंतु अबूबकर के सरदारोंने उसकी संगत छोड़ दी और उसे भागना पड़ा दिल्ली के द्वार उसके शत्रु के लिये खुल गये जो अब दूसरी बेर सिंहासन पर बैठा और कुछ सात बरस तक अप्रतिष्ठा पूर्वक राज्य किया तिस पीछे उसका बेटा हमायूं बादशाह हुआ परंतु वह थोड़े दिनों में मरगया और उसका भाई महम्मद तुग़लक़ तीसरा सिंहासन पर बैठा हिंदुस्थान के सब शाहनशाहों में यह बादशाह अधिक अभागा प्रसिद्ध था॥ उसके बालकपन के कारण राजसभा में विरोध हो गया और सूबेदार फिर गये॥ जुदे जुदे धड़ों का वर्णन करना कुछ आवश्यक नहीं॥ दो बादशाह आपस में शस्त्र बांधकर लड़ने को उपस्थित हुवे दिल्ली में रहे तीन बरस तक बड़ी बड़ी लड़ाइयों का रुधिर बहता रहा निदान महम्मद इकबालखां का सब अधिकार हो गया और महम्मद तुगलक केवल नाम मात्र बादशाह रहा॥

इन झगड़ों के कारण से बादशाही सामर्थ और प्रतिष्ठा जाती रही और चारों सूबे मालवा, खान देश, गुजरात और जौनपुर स्वाधीन हो गये॥ फ़ीरोज़ तुग़लक के समय में दिलावरखां गोरी मालवे का सूबेदार नियत हुआ था और फ़ीरोज़ तुग़लक के मरने के कारण से जो हुल्लड़ मचा तब वह स्वाधीन हो गया और उसने प्रथम निज राजधानी धारा नगर को जो राजा भोज की राजधानी के कारण प्रसिद्ध है॥ निदान मंडो नाम के दृढ़ गढ़ में रहा॥ मालवे का बादशाही कुल सुलतान कहलाता था॥ गुजरात के अधिपति को कुचाल का समाचार दूसरे महम्मद तुग़लकने जाना जो हिंदू मुसलमान हो गया था उसका नाम मुज़फ़्फ़रखां रक्खा और इसके भिन्न लाल और स्वेत डेरे भी उसे दिये जो बादशाही चिन्ह हैं॥ यह बात कुछ अचंभे की नहीं है कि जब मुज़फ़्फ़रखां वहां दृढ़ हुआ और दिल्ली का राज्य निर्बल तब वह स्वाधीन हो गया फ़ीरोज़ तुग़लक के समय में मलिक राजा खान देश का अधिपति नियत हुआ था यह देश दक्खन की सीमा पर है वह और सूबेदारों की भांति अवसर पाकर फ़ीरोज़ तुग़लक की आज्ञा में से निकल गया और उसने मालवे के अधिपति दिलावरखां से बड़ा मिलाप किया परंतु ऐसा जान पड़ता है कि वह गुजरात के बाद-

शाह के आधीन अपने तईं जानता था ॥ निश्चय है कि इन तीनों राज्यों में से गुजरात चिरकाल तक स्वाधी रहा ॥ खानदेश के राजाओं का नाम फारोखी-शब्द अंत में होने से जाना जाता था ॥ जोनपुर को राज्य का स्थापन करनेवाला ख़ाजहजहां था जो महम्मद तुग़लक तीसरे का मंत्री था वह इस सूबे का अधिपति नियत हुआ था उसने उस समय के झगड़े रल्ले सह कर अपने तईं बादशाह कहलाया और अपनी राजधानी जोनपुर नियत की और उसके बड़े बड़े खंडैरों से जाना जाता है कि वह स्वाधीन था सो अस्सी बरस तक रहा ॥ ख़ाजहजहां ने गोरकपुर, बहराच, दुआब और बहार को अपने देश में मिला लिया और ऐसा पराक्रमी हो गया था कि बंगाले के बादशाहों से कर लेने लगा जोनपुर का कुल शरकी के नाम से प्रसिद्ध है और बहुधा बाद-शाह पूर्वी कहलाते हैं इस रीत से दिल्ली का राज्य ईसवी संवत् के चौदहवें शतक के अंत में घटते घटते केवल राजधानी के निकट एक छोटासा सूबा रह गया अच्छे सूबे स्वाधीन अधिपतियों के हाथ में आगये और वे कर नहीं देते थे बरन उन्होंने अपने नाम का सिक्का और खुतबा चला दिया ॥ तैमरलंग इस देश के समाचार सुन कर इस देश को और दुःख बढ़ाने को अपनी निर्दई सेना लेकर हिंदुस्थान पर

चला जिस कटकने हिंदुस्थान के पश्चिम के देशों का सत्यानाश कर दिया ॥

तैमूर अत्यंत निर्दई और बड़ा बादशाह मुगलों के कुलीन कुल में था उसके कुलने चिरकाल तक चंगेज़खां की संतान की सेवा की थी सत्ताईस बरस की अवस्था में वह अपने स्वामी की बहुत सेवा में रहा था जो खुरासान और मावरूलनहर का बादशाह था इसलिये उसने अपनी बहन का विवाह इस से कर दिया ॥ चार ही बरस के मध्य में उसने आज्ञा माननी छोड़ दी और अपने साले के मरने के पीछे राज्य का स्वामी हो गया और समर कंद में रहने लगा वह ऐसे समय में बादशाह हुआ था जब आस पास के राजाओं के नष्ट होने से एक उद्योगी मनुष्य नवीन राज्य स्थापन और कर सकता था ॥ तैमूर ऐसा महा उद्योगी पुरुष था कि उसने बड़ी बड़ी जय करने का विचार किया और उनको प्राप्त किया इस से सब शत्रु उसके आधीन हुए और एशिया और यूरप उसके डर से थरराने लगे वह मनुष्य कटा करने में पशुओं की भांति प्रसन्न होता था और कभी कभी बड़ी कटा के पीछे आदमी के सिरों का एक ढेर बनाके पशुओं की भांति अपने चित्त को प्रसन्न करता था तीन बरस तक उसने ईरान देश की लूट की और बड़ी शीघ्रता पूर्वक बड़े तातार में

हो कर बाल्ला नदी पर पहुंच कर यूरप में खलबली डाल दी और हिंदुस्थान में मुसलमानी राज्य का बिगाड़ सुनके उससे कर लेने का बिचार किया जैसा कि उसने एशिया के पश्चिम के बहुतसे देशों को ड्या की थी इसलिये उसने अपने पोते पीर महम्मद को एक कटक देकर हिंदुस्थान पर चढ़ाई करने को भेजा परंतु मुलतान के सूबे में जिस को उसने लेलिया था उसको बहुत रोक टोक हुई इसलिये उसने अपने दादा से सहायता मांगी॥ ईसवी संवत् १३९८ में सितंबर महीने की बारवीं को तैमूर बानवें हज़ार सवारों के लेकर सिंधु नदी के तीर पहुंचा और पांव पांव उतर गया उस स्थान पर जहां कि सिकंदर सतरह सौ पचास बरस पहले उतर गया था अटक से दिल्ली को आते हुवे तैमूर कुछेक दक्षिण की ओर गया इसलिये कि पीरमहम्मद की सेना उसे मिल जांय॥ जब दोनों कटक मिल गये तब भटनेर को गए जो मरुभूमि के सिरे पर है और उसको एक बड़े कटक से घेर लिया नगर और गढ़वाले प्रथम कुछेक आधीन हुवे परंतु तैमूरने आज्ञा दी कि जो जो लोग पीरमहम्मद का साम्हना करने में थे उनको काटा करो इस बात पर गढ़के लोगोंने फिर शस्त्र लिये और अपनी स्त्रियों और लड़कों को मारकर अपने जीव को बड़ी वीरता से खोना बिचारा उनमें से एक

एक मनुष्य लड़कर मारा गया इस बात से तैमूर को क्रोध हुआ उसने नगर के प्रत्येक कुल की कटा की और नगर को राख करदिया फिर सरस्वती पर चढ़ाई की नगर जलवाया और नगर निवासियों की कटा करवाई निदान तैमूर जमना के तीर तक पहुंचा और दुआब में आया और बादशाही सेना उसके पीछे हुई उस कटक का सेनापति इकबालखां था जिस से कुछ न हो सका और वह फिर दिल्ली को गया कि मैं उस पर किस भांति चढ़ाई करूं॥ उस समय उसकी सेना में बंदुवे भरे पड़े थे उनको भोजन देना बड़ा कठिन पड़ता था॥ मुसलमान इतिहासवेत्ता कहता है कि उसने निश्चय किया कि उन बंदुओं में बहुतसे नास्तिक हैं॥ एक लाख मनुष्यों को मार डालने की आज्ञा दी और तैमूरने अपनी सेना सजाई और बादशाह भी कटक लेकर नगर से निकला और एक सौ बीस हाथी जिन के पाखर बंधी हुई थी अपने संग लाया पहली ही झपट में हाथीवानों को गिरा दिया तब हाथी निरंकुश होकर पीछे को हटे और बादशाही सेना में घबराहट डाल दिया॥ तैमूर के सुशिक्षित कटकने इस घबराहट के अवसर को अच्छा जान बड़े पराक्रम पूर्वक चढ़ाई करके शत्रु को भगा दिया और नगर के द्वार तक पीछा किया रात को बादशाह गुजरात की ओर भाग गया और

उसके मंत्रीने बिरन नाम नगर में शरण ली और नगर के बड़े बड़े मनुष्योंने नगर तैमूर को सोंपना बिचारा उसने नगर की लूट और कटा के न करने में बहुतसा धन लिया और शुक्रवार के दिन तैमूरने अपने तईं हिंदुस्थान का राजाधिराज प्रसिद्ध किया और जय की प्रसन्नता अपनी सेना में की जिसने नगर में प्रवेश नहीं किया था॥ उसी समय में नगर के बड़े बड़े ब्योपारियोंने अपने अपने बट का रुपैया देने में निषेध किया और निज घरों में बैठ रहे इसी लिये उन पर सेना भेजनी पड़ी जो मुग़ल कि जय के मारे प्रसन्न हो रहे थे और लूट की जिन्हें चोट थी अपन स्वाभाविक अन्याय करने लगे जब नगर निवासियोंने देखा कि हमारा धन लुटता है और स्त्री जनों की अप्रतिष्ठा होती है तब उन्होंने निज स्त्रियों और लड़कों को मार गेरा और घरों में आग लगा दी और सिपाहियों पर आटूटे आग लगी हुई के भभूके देखने से तैमूर को इस बखेड़े के समाचार जान पड़े तब सब मुग़लों की सेना नगर पर टूटी और ऐसी एक आपत्ति मची जिस का कुछ वर्णन नहीं हो सकता है नगर निवासियोंने बड़ी बीरता दिखाई परंतु इतिहासवेत्ताओं के कहने के अनुसार उनकी अमित बीरता उन्ही के मरने से मिटी॥ सब उत्तर हिंदुस्थान की लूट जो दो सौ बरस से इस राजधानी

नगर में इकट्ठी होती थी इस जयवंत के हाथ लगी परंतु उस लूट की संख्या जो लिखी हुई है ऐसी अधिक है कि मन में नहीं आ सकती ॥

सोलह दिन नगर में रहकर तैमूरने चलने का विचार किया क्योंकि उसका आशय लूट और नाम प्राप्त करने का था न राज्य लेने का सो पूरा हुआ ॥ फिरते हुवे उसने मेरठ को लेलिया और लूटा और हिंदू देवपूजकों का गंगा नदी के निकास तक पीछा किया हिमालय पहाड़ के सिर तक पहुंच के और मार्ग में प्रत्येक देश को बिगाड़ के निदान सिंधुनदी के तीर पर पहुंचा जहां उसने खिजरखां को मुलतान और दिवालपुर का सूबेदार नियत किया और काबुल के मार्ग से समरकन्द को फिरा और केवल शाहनशाह हिंदुस्थान के नाम पर संतोष करके देश को बिना प्रबंध किये छोड़ दिया जिस से दिन दिन आपत्ति बढ़ती रही ॥

तैमूर की चढ़ाई और फिरजाने के चोबीस बरस पीछे तक अर्थात् ईसवी संवत् १३९० से १४१४ के बीच में एक दो सूबे जो दिल्ली की आज्ञा को मानते थे उनमें भी आपस के झगड़ों के कारण बखेड़ा मच गया ॥ राज्य म कुछ योग और प्रबंध न रहा था जिलों के छोटे छोटे अधिपति अपने२ अधिकार में फिरगये और दिल्ली की आज्ञा माननी छोड़ दी ईस

बात को दिल्ली का अधिपति कुछ न रोक सका॥ महमूद तुगलक केवल नाम के लिये बादशाह था परंतु अपनी संपूर्ण आयु में कभी उसने संपूर्ण राज्य का भोग न किया॥ जब तैमूरने दिल्ली के बाहिर उसकी सेना को हरा दिया था उसी रात गुजरात को भाग गया था परंतु वहां के बादशाहने उसकी कुछ शिष्टाचारी न की इसलिये वह शीघ्र मालवे के अधिपति दिलावरजंग के पास शरण लेने गया फिर वह दिल्ली को फिरा॥ यहां बखेड़े के मिटतेही. इकुबालखांने आनकर बादशाह का मंत्री होने के कारण सब राज्य लेलिया था निदान महमूद तुगलक को केवल कनोज की प्राप्त पै संतोष करना पड़ा और उसका मंत्री राज्य का अधिपति बन के उन सरदारों के आधीन करने में लगा जो लोग फिरे हुवे थे॥ कितनों को उसने आधीन कर लिया परंतु खिज़रखां के साथ लड़ाई करने में हार गया जिस को तैमूरने मुलतान और दिवालपुर का अधिपति नियत किया था इकुबालखां ईसवी संवत् १४०५ में मारा गया॥

महमूद तुगलक जो दुर्भाग्य से अबस हो गया था दिल्ली में आकर अपनी सामर्थ के अनुसार बादशाह हुआ परंतु खिज़रखां राजसिंहासन को अपना ही जानता था इस बलहीन बादशाह को उसकी राजधानी में खिज़रखांने दो बेर घेरा पर दोनों बेर अस

न पाई और निरास होके चला गया उसके चलेजान के पीछे महमूद तुगलक अहेर को गया और वहां उसे मय चढ़ी जिसके कारण वह बीस बरस अप्रतिष्ठा पूर्वक राज्य करके मरगया इस बीस बरस के काल में उसने कभी राज्य नहीं किया यद्यपि कभी कभी वह सिंहासन पर बैठा उसी के साथ तुगलकों का कुल गया उसके मरने के पीछे दो बरस के बीच में खिज़र-खांने तीसरी बेर साठ सहस्र घोड़े लेकर दिल्ली पर चढ़ाई की और उसको अपने आधीन करके ईसवी संवत् १४१४ में सिंहासन पर बैठा और मुसलमानों का पांचवां बादशाही कुल स्थापन किया जिस को सइयदों का कुल कहते हैं॥

जो सूबे दिल्ली के निर्बल होने के कारण से स्वाधीन हो गये थे उन में जोनपुर बड़े बखेड़े का कारण था जो उन सूबों के पास था जहां अबतक बादशाही आज्ञा मानी जाती थी और उसके फिर जाने के दिन से दिल्ली के प्रत्येक बादशाह को उसका आधीन करना आवश्यक था॥ इस समय में जो सइयदों का कुल स्थापन होने से पहले सब देश में ऊजड़ फैल गया था और उसी समय जोनपुर पर तीन बेर चढ़ाई हुई परंतु दोनों ओर के कटक गंगाजी के दोनों तीर पर आमना साम्हना करके बिना लड़े थक गये॥ इबराहीम शाह अपने बाप के मरने के पीछे जोनपुर

क सिंहासन पर बैठा उसका बाप इस राज्य का स्थापक था॥ और यह इबराहीम शाह ऐसा प्रसिद्ध हुआ कि सब हिंदुस्थान उसके होने से अपने को धन्य मानने लगा यद्यपि वह कई लड़ाइयों में लगा रहा परंतु प्रजा का सुख और विद्या की वृद्धि बहुत चाहता रहा॥ उसके समय में यह राज्य अत्यंत प्रसिद्ध और प्रतिष्ठित रहा और उसके अगाड़ी दिल्ली के राज्य की कुछ भी चमत्कारी न रही इबराहीमने चमत्कार सहित चालीस बरस राज्य किया॥

१३ अध्याय ॥

सइयद कुल—बिलोली लोधी का बड़ा अधिकार—उसने अलाउद्दीन सइयद को निकाला—और दिल्ली के सिंहासन पर बैठा—सुलतान ऊभंग मालवे का बादशाह—चितोड़—महमूदखां खिलजी मालवे के सिंहासन पर बैठा—उसके गुण और उसकी चढ़ाई—वह गुजरात में गया ॥

सइयदों का कुल केवल ३६ बरस अर्थात् ईसवी संबत् १४१४ से १४५० तक दिल्ली के सिंहासन पर बैठा॥ महम्मद के कुल में होने के कारण उनको सइयद का नाम मिला था इस कुल के पहले बादशाह खिज़रखांने सात बरस से अधिक राज्य किया परंतु किसी के मन में न आवे कि एक आधीन मनुष्य सिंहासन पर बैठा इस बात को रोकने के लिये खिज़रखांने कभी अपने तईं बादशाह न कहाया और सदा तैमूर का अधिकारी कहलाने पर संतोष किया और उसी के नाम का सिक्का और खुतबा रक्खा और जब तक उसने राज्य किया उस सब काल में वह उन आस पास के छोटे छोटे सरदारों के आधीन करने में लगा

रहा जो फिरे हुवे थे॥ कितनों को उसने आधीन करलिया परंतु बड़े बड़े लोग फिरे ही रहे॥

उसके पीछे ईसवी संवत् १४२१ में उसका मुबारिक नाम बेटा सिंहासन पर बैठा उसने १३ बरस राज्य किया उस काल में वह अपने पिता की भांति लड़ाइयों म लगा रहा॥ जसरतखां पंजाब का लुटेरा था उसके पास निज देशवालों की बड़ी सेना थी वह मुबारिक का बड़ा शत्रु था॥ उसके बस करने के लिये लगातार कई बेर सेना भेजी परंतु जय न पाई॥ जब बादशाही कटक उसे जा दबाता था तब पहाड़ों में जा छिपता था और सेना के उलटे फिरजाने पर वह वहां से निकलकर अच्छी से अच्छी वस्तु लूट लेजाता था वह ऐसा निडर होगया था कि निकट के राजाओं से बचन करके मिलाप कर लिया था इस कारण बादशाह को बहुत चिंता हुई॥ मुबारिक बड़ा सुशील और अक्रोधी था परंतु वह ऐसा दृढ़ चित्त न था जैसा उस समय में होना चाहिये था दिल्ली के सिंहासन पर बैठते समय जैसा छोटा सा राज्य उसने पाया था वैसा ही थोड़ासा छोड़ा उसको १४३५ संवत् ईसवी में कई हिंदुओंने मस्जिद में मार डाला जिन को उसने कभी कुछ दुख नहीं दिया था॥

सरवरुल मुल्कने जो मुबारिक की हत्या करने का कारण था हत्या किये हुवे बादशाह के पुत्र महम्मद

को सिंहासन पर बैठाया उसने सरवुल्ल मुल्क को अपना बड़ा प्रधान नियत किया॥ उसने अपने हिंदू मित्रों को बड़े बड़े काम सोंपे और कुलीखां को अपना नायब नियत किया कई कुलीनों को जिन्होंने पहले बादशाह के समय में बड़े बड़े अधिकार मिले थे निश्चय हुआ कि सर्व सामर्थवान प्रधान हमारी जागीरें लिया चाहता है इसलिये वे बादशाह से फिर गये॥ उनको आधीन करने के लिये कालेखां को भेजा॥ परंतु यह आप अपना प्रताप बढ़ाया चाहता था इसलिये यह उन से मिलगया और दोनों ओर की सेना इकठी होकर दिल्ली पर चलीं॥ प्रधान की ओर वाले नित नित सामर्थ हीन होने लगे बादशाहने इन फिरे हुवों से मेल करना चाहा और निदान उनके कहने से अपने प्रधान को मरवा डाला॥ फिरे हुवे अधिपतियोंने बड़े बड़े काम आपस में और अपने मित्रों में बांट लिये और कालेखां को प्रधान का काम दिया इसी काल में बादशाह को अपने पिता के प्राचीन और उद्योगी बैरी जसरतखां पर चढ़ाई करनी पड़ी और उसके देश को लुटवाया महम्मद फिर दिल्ली आकर सुख भोग में लगा इसलिये राज्य निर्बल पड़गया॥ एक उद्योगी बिलोली लोधी नाम अफग़ान मुलतान का अधिपति बन बैठा परंतु बाद-शाह। सेनाने जाकर उसको हरा दिया उसने फिर

कटक इकठा किया तब बादशाही सेना को घेर दिया और दिल्ली पर आने को धमकी दी परंतु उसने पहले बादशाह को कहला भेजा कि जो वह अपने बड़े मंत्री को मरवाडाले तो हम उसके आधीन हो जांय ॥ बादशाहने निर्बलता के कारण यह बात अंगीकार की यह निर्बलता का चिन्ह और सबों के भी फिरजाने का कारण हुआ ॥ उस समय में मालवे का बादशाह सेना लेकर दिल्ली से एक कोस पर आपड़ा तब बादशाहने बिलोली लोधी से सहायता मांगी इसलिये वह हिलते हुवे राज्य को बचाने के अर्थ शीघ्र आया और मालवे के कटक के साम्हने हुआ परंतु कुछ फल न निकला॥ मालवे के बादशाहने लड़ाई की रात को एक कुस्वप्न देखा इसलिये उसने डरकर मिलाप करने के हेतु प्रार्थना की और दिल्ली का बादशाह ऐसा सोचग्रस्त था कि जो जो मालवे का बादशाह उस से कहता वह सब अंगीकार करता तो मालवे की सेना से बचता परंतु वह बिलोली लोधी जो पहले की अपेक्षा अब अपने स्वामी को तुच्छ जानता था वह बादशाह के बचनों को उल्लंघन करके मालवे की सेना पर चढ़गया और उनको सब रीत से हरा दिया बादशाहने इस सेनापति को नये नये अधिकार दिये और मुलतान का अधिपति नियत किया उसे चाहिये था कि जसरतखां को आधीन

करता परंतु उसने सेना इकठी करके दिल्ली पर चढ़ाई की और उसे चार महीन तक घेरे रहा पर उसे न ले सका सय्यद महम्मद दस बरस तक अप्रतिष्ठा पूर्वक राज्य करके ईसवी संवत् १४४५ में मरगया और उसके पीछे उसका बेटा अलाउद्दीन बादशाह हुआ॥

अलाउद्दीन सय्यद निज पिता से भी पराक्रम हीन था और प्रत्येक बात से ज्ञान पड़ा कि इस कुल में से शीघ्र राज्य नष्ट हो जायगा॥ इस पराक्रम हीन राज्य की आज्ञा केवल दिल्ली के आस पास थोड़े से कोस तक रह गई थी॥ और देश२ में स्वाधीन मुसलमान बादशाह तेरहसे न्यून राज्य न करते थे और राज्य बहुत डिग मिगा रहा था और अज्ञान बादशाह बदाऊं में अपने बाग के सुधारने में लगा हुआ था॥ बिलोली लोधी अबतक उसी राजधानी के लेने की इच्छा करता था॥ और बादशाहने राज्य के काम बिगड़े हुवे देखकर उनका विचार करने के लिये अपने मंत्रियों को इकठा किया उन्होंने छल से मुख्य मंत्री हमीद को दूर करने का विचार बताया और कहा कि सब उपद्रवों का मूल यही है बादशाहने उनकी बात मानकर उसको बंद में डाल दिया इस आस पर कि उसे शीघ्र मरवा डालें परंतु उसने बदाऊं से भागकर दिल्ली में आ अपने स्वामी की

संपत्ति को अपने हाथ में कर लिया और उसके सब स्त्री जनों को उसके पास भेज दिया और बहलोली लोधी को सिंहासन पर बैठने के लिये बुलाया यह महाशय अब दिल्ली को चला और राज्य का प्रभु होकर सइयदों के कुल को नष्ट किया॥ इस बादशाहने बहलोली लोधी के लिये सिंहासन छोड़ दिया और प्रसन्नता से कुछ मासिक पर संतोष करके अपने आनंद के स्थान बदाऊं को चला गया वहां उसने अठाईस बरस गांव में काटे सइयदों का कुल ईसवी संवत् १४५० में पूरा पड़ा॥

अब हम उन बातों का संक्षेप रूप से वर्णन करते हैं जो इस छत्तीस बरस के काल में गुजरात मालवे और खान देश के विषय में हैं॥ दिलावर सुलतान जो स्वाधीन और मालवे के राज्य का स्थापन करनेवाला था १४०५ ईसवी में मरगया और अपने बेटे सुलतान होशंग को राज्य देगया यह बादशाह बखेड़िया और चंचल था उसने अपने सत्ताईस बरस के राज्य में यद्यपि नित्य लड़ाई करता रहा पर एक बेर भी जय न पाई॥ संदेह है कि उसने अपने पिता को मरवा डाला हो और मुज़फ्फ़र शाह बादशाह गुजरात के ने जो दिलावर सुलतान का परम मित्र था इस पितृघातक पर चढ़ाई की और उसको कैद करके मालवे का अधिकार अपने एक सरदार को सौंपा

सुलतान होशंग कैद में अहमद के आधीन था जो गुजरात के बादशाह का पोता था परंतु मालवे में बखेड़े होने लगे और अहमदने अपने दादा को समझा कर होशंग को छुड़वा दिया उसने पीछे इस कृपा के अपनी हान का विचार किया होशंगने अपने बड़ों के देश का फिर अधिकार पाकर अपने आस पासवाले से बैर किया और विशेष करके उसका ध्यान गुजरात की ओर लगा हुआ था वह उस समय अहमद शाह के अधिकार में था॥ हम उन युद्धों का वर्णन नहीं करा चाहते हैं जिन में पास पास के बाद-शाह लगे हुवे थे इन युद्धों से केवल प्रजा का सुख जाता रहा और राज्यों की कुछ सामर्थ न बढ़ी परंतु यह वर्णन के योग्य है कि अहमदने एक समय मांडू को घेरा था जो मालवे में बड़ा दृढ़ गढ़ विंध्याचल पर है जिस के नीचे नर्बदा बहती है और होशंगने विचारा कि यह गढ़ छह महीने के घेरने से न्यून में न टूटेगा इसलिये आप घोड़ों के व्योपारियों का भेष करके उड़ीसे तक लूटता हुआ गया और वहां के बादशाह के अच्छे अच्छे हाथी लूट लाया और मांडू में आकर देखा तो अहमद शाह उसे घेरे ही हुवे पड़ा था॥

हमने पिछले अध्याय में लिखा है कि ईसवी संवत् के चौदहवें शतक में जब चारों ओर लड़ाई झगड़े हो

रहे थे तब एक हिंदू राज्य अर्थात् चीतौड़ का राज्य या मेवाड़ फिर स्वाधीन हो गया और दो सौ बरस स्वाधीन रहा होशंग के समय में वहां के सिंहासन पर कंबोह राज्य करता था जो अपने कुल में अत्यंत नामी था और कमल नीर का स्थापक॥ उसने पचास बरस से अधिक राज्य किया और अपने राज्य में अच्छे अच्छे गढ़ मंदिर और विजय सूचक लाठें बनवाईं॥

सुलतान होशंगने अपने अंत का समय आता हुआ जान ईसवी संवत् १४३२ में अपने बड़े बेटे गज़नीखां को सिंहासन सौंपने की इच्छा की॥ उसको संदेह हुआ कि मेरा बड़ा प्रधान महमूदखां जो राज्य करने के अत्यंत योग्य है कोई दिन मेरे कुल को दूर करके आप बादशाह बन जाय इसलिये उसने महमूदखां से अपने कुल के सत्व बचाने के लिये सौगंध ली॥ होशंग मरगया और गज़नीखां बादशाह हुआ यद्यपि बड़े२ लोगोंने उसके बादशाह होने में बड़ी रोक टोक की परंतु उसको प्रधानने सिंहासन पर बैठाया पर बादशाह के चित्त में महमूदखां की ओर से संदेह हुआ और महमूदखाने बिचारा कि जब स्वामी को जिस की ओर का संदेह हो तो उसका बचना कठिन है क्योंकि संदेह होना मरने का चिन्ह है इसलिये उसने बादशाह को बिष दिलवाया और

आप सिंहासन पर बैठकर ईसवी संवत् १४३५ में मालवे के बीच खिलजिओं का नवीन कुल स्थापन किया॥

गुजरात के मुसलमानी राज्य का स्थापन करने-वाला मुजफ्फरखां था जिस का हम पहले वर्णन कर चुके हैं उसने ईसवी संवत् १४११ में अपने पोते अह-मदशाह को राज्य दे दिया जो अत्यंत योग्य महा उद्योगी बादशाह था उसके इक्कीस बरस आस पास के मुसलमान बादशाहों से या गुजरात के हिंदू राजाओं से जो अब तक आधीन नहीं हुवे थे लड़ने में लगे॥ अपने राज्य के प्रारंभ में उसने एक नवीन राजधानी नगर साबरमती के तीर बसाया॥ जो अब उसके नाम के अनुसार अहमदाबाद कह-लाता है॥

मुसलमान इतिहासवेत्ताने इस नगर की अत्यंत प्रशंसा की है और कहा है कि वह हिंदुस्थान में अत्यंत सुंदर नगर है॥ कदाचित् वह सब पृथ्वी में हो अहमदने दक्खन ओर जीतते जीतते महीम नाम उपद्वीप को जिसे अब बंबई कहते हैं जीत लिया और समुद्र के तीर पर देश लेते लेत दक्खनी राजा बहमनीवालों की सेना से साम्हना किया जो समुद्र तट पर उत्तर की ओर देश जीतते आते थे और इस कारण से दोनों बादशाहों में लड़ाई ठहरी॥ अहमद

शाहने सुना कि मालवे के राज्य को अधिकार करके महमूद ख़िलजीने लेलिया है इसलिये उसपर चढ़ाई की परंतु महमूद ख़िलजी की अत्यंत सावधानी के कारण यह चढ़ाई सुफल न भई और वह निडर होकर राज्य का स्वामी बना रहा॥ अहमद शाह ईसवी संबत् १४४३ में मरगया और उसका बेटा महम्मद शाह बादशाह ऊआ उस की प्रजा उसको कृपालु कहती थी परंतु वह इस अधिकार के अत्यंत अयोग्य था॥ महमूद ख़िलजी मालवेवालेने उस बादशाह की निर्बलता के कारण अवसर पाकर गुजरात से उस दुख का पलटा लेने की इच्छा की जो उसने अहमद शाह से पाया था और एक लाख सेना लेकर गुजरात को चला॥ डरपोकना बादशाह भाग गया और अपने संपूरण थल के राज्य को छोड़कर देव नाम उपद्वीप में शरण ली जहां कि उसके सरदारोंने उसकी स्त्री से उसको विष संबत् १४५१ ईसवी में दिलवा दिया॥ गुजरात अब महमूद के हाथ लगा और जान पड़ा कि उसकी स्वाधीनता जाती रहेगी परंतु उसके वैसेही रहने का बर्णन आगे लिखेंगे॥ अब हम दिल्ली के उन बृत्तान्तों का बर्णन करेंगे जो लोधी नाम जाति के अफगानों के समय में ऊवे थे॥

१४ अध्याय ॥

बहलोली लोधी—जौनपुर दिल्ली के राज्य में मिल गया—सिकंदर लोधी—इबराहीम लोधी—सुलतान बाबर—मुगलों के कुलका स्थापन—मालवे का महमूद शाह गुजरात से निकाला गया—संगाम मेवाड़ का राना—मालवे में आलसीगयासउद्दीन का राज्य—गुजरात के महमूद शाह की चढ़ाईयां—जहाजों पर पोर्तुगीज और गुजरातवालों की लड़ाई—मालवे का महमूद नाम पिछला बादशाह हार गया और उस राज्य की स्वाधीनता जाती रही॥

ईसवी संवत् १४५० में बहलोली लोधी ने दिल्ली के राज्य को दबा लिया और अपने स्वामी अर्थात् बादशाह का कुछ मासिक करदिया जिस से वह बदाऊं में जाकर अपने बाग का सुधारा करे और अफगानों के कुल को स्थापन किया॥ ये लोग सिंधु नदी के पश्चिम तट पर बसते थे और बहुधा हिंदुस्थान और पारस में व्योपार किया करते थे वे फीरोज के समय तक अत्यंत नीच गिने जाते थे उसने पहले ही पहल

उनकी प्रतिष्ठा बढ़ाई इस कुल में तीन बादशाह हुवे उन्होंने ७६ बरस राज्य किया॥ बहलोली का इबराहीम नाम दादा फीरोज की सभा में रहा था और वहां उसने अपना इतना विश्वास बढ़ाया कि वह मुलतान का अधिपति होगया निदान वह राज्य बहलोली के हाथ लगा यद्यपि बहलोली के संबंधियोंने बहुत रोक टोक की॥ इस काम में उन्होंने दिल्ली के बादशाह के पास फुकार की और उसने बहलोली पर सेना भेजी परंतु उसके आधीन करने में जो जो उपाय हुवे वे सब उसकी बुद्धवानी से व्यर्थ हो गये बहलोली की सामर्थ नित नित बढ़ती थी और दिल्ली की घटती जाती थी॥ हम उस रीत को लिख चुके हैं जैसे उसने दिल्ली का राज्य लिया इसलिये अब फिर उसका लिखना कुछ आवश्यक नहीं॥ उसके बादशाह होनेमें हमीदखां कारण था इसलिये बहलोलीने उसे अपना प्रधान नियत किया परंतु उसकी सामर्थ को अधिक देखकर उसने गद्दी पर दृढ़ होते ही उस प्रधान को दूर किया॥ बहलोली सरीखा उद्योगी मनुष्य कभी नहीं ऐसे छोटे राज्य पर संतोष कर सकता है जैसा अब दिल्ली का रह गया था॥ उसने झट उन सूबों को आधीन करना विचारा जो पहले बादशाहों के समय में फिर गये थे॥ कई छोटे छोटे सरदारों को उसने आधीन कर लिया परंतु

जोनपुर के राज्य लेने में उसका बड़ा मन लगा हुआ था॥ हम आगे कह आये हैं कि इस सूबेने आशा मात्रको छोड़ दी थी और अपने द्रव्य और चमत्कारी के अगाड़ी दिल्ली के राज्य को तुच्छ कर डाला था इसलिये दिल्ली के बादशाह की आंखों में जोनपुर खटकता था इस कारण बहलोली के बादशाह होने के पीछे दो बरस के बीच इस में और जोनपुर के बादशाह में दो बेर लड़ाई हुई परंतु दोनों से कुछ निमटेड़ा न भया॥ थोड़े दिनों के पीछे महमूद शाह जोनपुर का बादशाह मरगया तब और बादशाह होने के कारण झगड़ा उठा और बहलोली लोधीने फिर चढ़ाई की और हुसेनखां जो अब राज्य को दबा बैठा था चार बरस के लिये संधि करली॥ बहलोली पंजाब में लोगोंने सिर उठा रक्खा था उसका निमटेड़ा करने के लिये वहां गया था तब हुसेनखांने सेना लेकर झटपट दिल्ली पर चढ़ाई की इसलिये बहलोली को शीघ्र फिरना पड़ा कई युद्ध हुवे परंतु कुछ निमटेड़ा न भया॥ फिर कुछ काल के लिये संधि होगई पर यह भी थोड़े ही काल पहले की भांति रही॥ बहलोली के राज्य के अठाईसवें बरस तक जोनपुर की सामर्थ दृढ़ रही यहां तक कि कुछ भी उस में अंतर न पड़ा परंतु अब उसके बिगाड़ का समय आगया था।

सइयद अलाउद्दीन दिल्ली का बादशाह जिसे बह-

लोलीने सिंघासन से उतार दिया था वह आज से आगे अपनी जागीर पर संतोष करके बैठा था बहुत बरस राज्य छोड़ने से अठाईस बरस पीछे तक अर्थात् ईसवी संवत् १४७८ तक अपने चित्त की प्रसन्नता के कामों में लगा रहा॥ उसके मरने के पीछे हुसेन शाह जौनपुर-वालेने उसकी जागीर लेली और देखा कि बहलोली अपनी राजधानी में नहीं है इसलिये दिल्ली के द्वार तक लूट करता हुआ चला गया॥ बहलोली लौट फिरा और हुसेन शाह से कई लड़ाई लड़ा जिन में हुसेन शाह की बहुधा जय हुई फिर बचन ठहरे और गंगाजी दोनों राज्यों की सीमा ठहरी गंगाजी के पूर्व ओर के देश जौनपुर के हुये और पश्चिम के दिल्ली के ठहरे॥ इस बचन पर हुसेन शाह अपने राज्य में निडर चला जाता था कि बहलोलीने एका एकी उस पर चढ़ाई की और उसे हरा दिया॥ दूसरी बेर चढ़ाई हुई जिस में दोनों ओरवालोंने कहा कि हमारी जय हुई॥ तिस पीछे फिर झूटी संधि हुई और नवीन सीमा ठहरी परंतु बहलोली के छल का कांटा हुसेन के मन में खटकता था उसने फिर सेना इकठी करके युद्ध का प्रारंभ किया परंतु फरिश्तह नाम इतिहास में लिखा है कि अब ईश्वर की इच्छा थी कि जौनपुर का बिनाश होय॥ एक बरस के बीच चार बेर युद्ध हुआ और चारों बेर हुसेन शाह की

की हार ऊई बहलोली अपनी जय के बढ़ाने में बऊत लगा रहा॥ ऊसेन शाह इधर उधर भागता फिरा निदान अपने राज्य से निकाला गया और पराये देश में उसे शरण लेनी पड़ी॥ बहलोली अपनी राजधानी में आया और जोनपुर के राज्य का सत्यानाश किया और उसके सूबे को फिर ८० बरस पीछे दिल्ली में मिलाया और यह देश बारबक नाम बादशाह के बेटे को दिया॥

बहलोली अब बऊत वृद्ध होगया था इस कारण अपने राज्य का विभाग अपने बेटों में करने का विचार किया यह बात ऐसी थी कि जानो वह आगे को झगड़े की नीम रक्खा चाहता था॥ उसका बड़ा बेटा उसके पीछे सिकंदर लोदी नाम दिल्ली के सिंहासन का अधिकारी ऊआ उसके छोटे बेटों को बरन उसके भतीजे को भी एक एक सूबह विभाग में आगया और बहलोली ईसवी संवत् १४८८ में अड़तीस बरस राज्य करके मरगया॥ वह बऊत सावधान और यशवान् और धर्मशील था और देश के प्रबंध में अति निपुण और विद्यावानों को बऊत चाहता था॥

सिंहासन के रीते होते ही बड़े२ मनुष्यों ने मिलकर उपद्रव करना ठहराया और उनकी इच्छा यह थी कि सिकंदर लोदी की मा सुनार की लड़की थी इस

मिस से उसे सिंहासन पर न बैठने दें परंतु उसने उनके विचार को तोड़कर सिंहासन पर बैठ २८ बरस राज्य किया उसने पहले अपने भाइयों को उन सूबों से निकालना बिचारा जिन सूबों को फिर उसने बादशाही राज्य में मिला लिया यह काम उसने विना परिश्रम करलिया॥ परंतु अपने भाई बारबक का जय करना सहज न था उसको जोनपुर का सूबह मिला था और उसने तरवार की सहायता से अपने राज्य को बना रखना बिचारा परंतु बादशाहने उस का हरादिया और बादशाहने उस समय की रीत के बिपरीत केवल उसका अपराध ही क्षमा नहीं किया बरन उसका राज्य उसे देदिया इस बचन पर कि आगे को वह आधीन बना रहे॥ उसने यह काम इसलिये किया कि जोनपुर का बादशाह हुसेन शाह जो राज्य से निकाला गया था उसकी मनो कामना पूरी न हो उस बादशाहने बिहार के सूबे को फेर लेलिया था और अपने बड़ों के शेष राज्य के लने में परिश्रम करता था॥ परंतु सिकंदर लोदी के राज्य के छटे बरस में वह पिछली बेर हारा और एक लाख बादशाही सेनाने बंगाले की सीमा तक उसका पीछा किया उस देश में मंद भागी बादशाहने शरण ली और अयशपूर्वक वहां ही मरा॥

सिकंदर लोदी वर्द्धमान चिरकाल के राज्य भर में

अपनी सेना को सुधारना रहा परंतु बज्ञत दिन के फिरे ज्ञवे हवों के लेलने के विचार में उसने केवल चंदेरी को जय किया उसकी लड़ाइयों और घेरों का वर्णन कुछ मनोहर नहीं दिखाई देता उन में देश उजड़ होगया और राज्य की कुछ भी सीमा न बढ़ी इसलिये बज्ञतेरी चढ़ाईयों का वर्णन छोड़ देते हैं॥ यद्यपि सिकंदर बुद्धिवान् और वीर बादशाह था परंतु हिंदुओं की देव पूजा का बड़ा शत्रु था और देवमंदरों को ढवा कर उनके मसाले से मसजिदें बनाईं मथुरा तीर्थ में जमना की सीड़ियों के साम्हने मसजिद बनवाई और बाजार बसाये निदान जमनाजीके न्हाने से लोगों को बंध किया और यात्रिकों के भद्र करनेवाले नाईयों को दंड दिया उसने अपनी हिंदू प्रजा के संग वैसी ही रीत रक्खी जैसी और मुसलमान हिंदुस्थान के जय करनेवाले रखते थे॥

सिकंदर लोदी के मरे पर ईसवी संवत् १५१७ में उसका पुत्र इबराहीम लादी बादशाह ज्ञआ उसके अभिमान से बड़े२ मनुष्योंने उसका साथ छोड़ दिया और उसके कुल का नाश करने के लिये उपाय किया उन्होंने उसके भाई जलालखां को जोनपुर का राज्य लेने को बहकाया यद्यपि उसने उस राज्य का अधिकार पाया परंतु उसके मित्रोंने उसका साथ छोड़ दिया इसलिये उसे गुवालेर में शरण लेनी पड़ी यह

छोटासा राज्य दिल्ली के निकट था जो सो एक बरस से पहले दिल्ली से अलग होगया था बादशाहने चढ़ाई करके उसे जीत लिया अलाखखां भागकर प्रथम मालवे के बादशाह के पास शरण लेने को गया फिर दक्षण की ओर भागा परंतु गंधवाने से भागते ज़ुवे उसे पहाड़ियोंने पकड़ के उसके भाई को सोंप दिया जिसने उसे हांसी में बंध रखने की आज्ञा दी परंतु उसके रखवालों को मार्ग में उसको मारने के लिये जता दिया ॥ मुसलमान इतिहासवेत्ता कहता है कि राज्य में क्या क्या भलाई हैं कि जिन के लिये मनुष्य अपने भाई के मारने को उपस्थित होता है फिर बादशाह अपने सूबेदारों पर ऐसा संदेह और अन्याय करने लगा कि उन में से कोई फिर गये॥ इसलामखां करा नाम सूबे के अधिपतिने अपने बाप और भाई पर अन्याय होता ज़ुआ देख बादशाह के कहने को उलंघन किया औरों को अपने साथ मिलाकर चालीस सहस्र सवार इकठे किये इन फिरे ज़ुवोंने इसलामखां के बाप को छोड़ देने के बचन पर शस्त्रों को रखदेना अंगीकार किया परंतु बादशाहने इस बात का अभिमान पूर्वक निषेध किया॥ एक युद्ध ज़ुआ जिस में इसलामखां मारागया और उसकी सेना हार गई तिस पीछे बादशाह राजसभा के लोगों पर अत्यंत क्रोध करने लगा और बहादुरखां

बिहार की सूबे के अधिपतिने अपने ताईं बादशाह कहलाया और एक लाख सेना इकठी करके कई बेर बादशाही कटक को हरा दिया उसी काल में दौलत-खां मुलतान के लिये इबराहीम लोदी के संग में सुख और बचने की आस न देख बाबर को जो मुगलों का बादशाह काबुल में था हिंदुस्थान की जय करने के लिये बुलाया॥ परंतु उसकी चढ़ाई से पहले इबराहीम के भाई अलाउद्दीनने जो भाई के पास से भागकर काबुल को चला गया था एक कटक लेकर दिल्ली पर चढ़ाई की और बादशाही सेना को संपूर्ण रीत से हरा दिया परंतु मंद भाग से अपने कटक को लूट के लिये जुदे जुदे होकर जाने की आज्ञा दी और इबराहीमने अपनी शेष सेना इकठी करके संपूर्ण जय प्राप्त की॥ दूसरे बरस में सुलतान बाबर सेना लेकर इबराहीम पर चला पानीपत में एक लड़ाई हुई जिस में इबराहीम मारा गया और उसकी सेना हार गई और ईसवी संबत् १५२६ में हिंदुस्थान का राज्य मुगलों के कुल में आया॥

जब अफ़गानों का कुल दिल्ली में राज्य करता था उस समय के मालवा गुजरात मेवाड़ का बर्णन करते हैं ये देश उस समय में पचासेक बर्ष से अधिक अधिक स्वाधीन रहे थे॥ जान पड़ता है कि खानदेश का राज्य बारी बारी से दोनों पराक्रमी आस पास के

राज्य मालवे और गुजरात के आधीन रहेगा रक्खा था जिस समय बहलोली लोदी ईसवी संवत १४५० में दिल्ली के सिंहासन पर बैठा था तब अहमदशाह गुजरातवाले के स्थानापन्न निर्बल महम्मदशाह को महमूद मालवेवालेने उसकी अत्यंत दूर सीमा तक भगा दिया था और मेवाड़ के सिंहासन पर उस समय नामी कंबोह राज्य करता था॥

गुजरात के सरदारों को उस देश में उस शत्रु के चले आने से अत्यंत लज्जा हुई और उन्होंने अपने बादशाह की बेगम को जिस का कि हम वर्णन करचुके हैं बादशाह को विष देने का विचार बताया उसके बेटे कुतबशाह को सिंहासन पर बैठाकर अपने स्वाधीन होने के लिये बड़ा उद्योग किया महमूद मालवेवाला गुजरात को लूटता खूटता उसकी राजधानी अैमदाबाद तक पहुंचा उससे डेढ़ कोस पर लड़ाई हुई मालवे की सेना संपूर्ण रूप से हार गई और देश खाली कर देना पड़ा॥ कहते हैं कि महमूद मालवेवाले की केवल यही हार हुई थी जा हिंदुस्थान के मुसलमान बादशाहों में बड़ा वीर था जब उसने देखा कि हम हार गये तब तेरह सवार लेकर और मार्ग से हरएक रोक टोक को मिटाता हुवा गुजरात के बादशाह के तंबू की ओर चला और बादशाही साहित्य को लेलिया यह लड़ाई

ईसवी संवत् १४५३ में हुई थी यह जान पड़ता है कि महमूद उस समय में उत्तर हिंदुस्थान में बिना रोक टोक फिरता था क्योंकि वह दूसरे बरस उत्तर की ओर बयाने तक गया और अपने बेटे को अजमेर का अधिपति किया फिरते समय पहले दक्षण के बहमनी कुल के बादशाह पर चढ़ चला और फिर खानदेश पर अंत में चितौड़ के राना पर उसने चढ़ाई की ॥

ईसवी संवत् १४५६ में महमूदने कुतबशाह गुजरातवाले से बिचार किया कि हम आपस में मिलकर मेवाड़ पर चढ़ाई करें और बचन ठहरा जय के पीछे वहां के सूबे समान बांट लें इसीलिये उसी बरस चंपानीर में बचनपत्र लिखा गया और दूसरे बरस दोनों कटक एक२ ओर से मेवाड़ पर चले कहते हैं कि कुंभोह गुजरात की सेना से हार गया और चौदह मन सोना देकर मिलाप कर लिया ॥ अब मालवे का कटक मेवाड़ में गया और मुसलमान इतिहासवेत्ता कहता है कि राणाने महमूद के आधीन होना अंगीकार किया परंतु तिस पीछे एक युद्ध हुआ उस में दोनों ओरवालों में से एकने भी जय प्राप्त न की और दोनों को भागना पड़ा परंतु इस बृत्तांत के होने का दिन कोई ईतिहासवेत्ता कुछ लिखता है कोई कुछ और इस संदेह का दूर करना अति

कठिन है अबुलफजल और राजपूत इतिहासवेत्ता मालवे और गुजरात के बादशाहों के बचनपत्र को कहते हैं कि ईसवी संवत् १४४० में ऊआ था जो मेवाड़ के जय करने और बांटने के विषय में था और कहते हैं कि हिंदू बीरने इस मिले ऊवे कटक का सामना एक लाख सेना पैदलों को लेकर मालवे के मंडल में किया और उनको संपूर्ण रूप से हराकर महमूद को पकड़कर चीतोड़ में लेआया और उदारता पूर्वक विना कुछ द्रव्य लिये केवल उसे छोड़ ही नहीं दिया वरन उसे बऊत द्रव्य और साहित्य भी दिया ॥ परंतु फरिश्ता जो उन युद्धों का बर्णन अच्छी भांति लिखता है वह कहता है कि ईसवी संवत् १४५६ के पहले कोई दंगा बखेड़ा नहीं ऊआ और महमूद की हार की कुछ बात नहीं लिखता है और उसके लिखने से जाना जाता है कि जिस लड़ाई का वह बर्णन करता है और जो कि महमूद और कंबोह में ऊई थी उससे कुछ हार जीत को निश्चय न ऊई ॥ अलीमहम्मदखां भी अपने गुजरात के इतिहास में दोनो मुसलमान बादशाहों के मिलाप होने का वृत्तांत ईसवी संवत् १४५६ में लिखता है इसलिये लड़ाई का दिन ठीक निश्चै नहीं हो सकता है परंतु जो अबुलफजल और राजपूत इतिहासवेत्ता के लिखे को मानें तो पूरी जय ऊई थी वह पहली जय थी जो हिंदुओंने कई सौ

बरस पीछे मुसलमानों से पाई थी और मेवाड़ के राणाने उस जय को स्मरण रखने के लिये चितोड़ में बड़े ऊंचे स्थान पर जयस्तंभ बनवाया॥ जो नगर के बीच में अति सुंदर स्थान था और इस स्तंभ के बनवाने में दस बरस लगे थे॥

जाना जाता है कि मह्मूद तिस पीछे मेवाड़ पर लगातार चढ़ाई करता रहा एक बेर उसने मेवाड़ पर उत्तर की ओर से चढ़ाई की और फिर वह मंडल गढ़ की ओर गया जो चितोड़ से पंदरह कोस है और थोड़े ही काल पीछे वह उस दृढ़ गढ़ पर सेना लेकर चढ़ा जिस को कंबोहने बनाया था और वह कामल नीर कहाता था वह बड़ा उद्योगी था इसलिये सदा रणभूमि में रहता था॥ ईसवी संवत् १४६१ में यह समाचार सुने कि दक्षण के सिंहासन पर एक लड़का बैठा था और देश में कई धड़े हो गये थे उसने उस देश को जय करने का विचार किया और राजधानी बीडर नगर की ओर चला उस नगर के निकट एक युद्ध हुआ दिन के अंत में मह्मूद की जय हुई परंतु ऋतु के कारण हटना पड़ा दूसरे बरस फिर दक्खन पर चढ़ाई की॥ बीडर के प्रधानोंने अपने लड़नेकी सामर्थ न देख गुजरात के बादशाह से सहाय के लिये प्रार्थना की और वह बादशाह अपना कटक ले मालवे की ओर आया और दक्खन

वालों की सहायता करने लगा महमूद दौलताबाद के देश को लूटकर आप अपने देश के बचाव के लिये वहां से चला गया और यह लड़ाई ईसवी संवत् १४६७ में समाप्त भई ॥ और दक्खन के बादशाहने महमूद से यह वचन ठहराया कि आगे चढ़ाई न करो तो हम कराला अथवा ईलचीपुर तुम्हें दे दें इन वचनों की लिखा पढ़ी के दो बरस के भीतर महमूद अड़सठ बरस की अवस्था में और चौंतीस बरस राज करने वाला मरगया मालवे के बादशाहों में वह सब से अधिक सामर्थ और बलवान् था और राज्य को उसने अधिक सोभा दी यद्यपि उसने बहुतसे मंदर ढवाकर मस्जिदें बनवाईं थीं तथापि वह अपनी हिंदू और मुसलमान प्रजा में मिला चाहता था कोई ऐसा बरस नहीं बीता था कि वह रणभूम को न जाता था और तंबू उसका घर और रणभूमि उसका सुखदाई स्थान होगया था ॥

अगले वर्ष में अर्थात् ईसवी संवत् १४६८ में महमूद का परम मित्र राना कंभोह चितोड़वाला भी मरगया उसने अपनी वीरता और बुद्धवानी से उस देश की ऐसी शोभा की थी कि वैसी कभी नहीं हुई थी और वह पचास बरस के राज्य में अपने बेटे के हाथ से मारा गया यद्यपि बाप की निर्बलता के कारण उसके हाथ राज्य शीघ्र ही लगता परंतु राज्य की

लोभ से उसने सदैव को यह कलंक का टीका लिया इस अधर्म के छुपाने के लिये इतिहासवेत्ताने उसका नाम राज्यकुल की वंशावली में नहीं लिखा परंतु उस पितृघातक का अधर्म छुपाने से और भी प्रगट हुआ॥

सूरबीर महमूद के मरने के पीछे चंचल सुभाव बादशाह अर्थात् उसका बेटा गयासुद्दीन मालवे के सिंहासन पर बैठा उसने बादशाह होते ही अपने बड़े मनुष्यों की बड़ी जोनार की और उन्हें यह बात समझाई कि मैं चोतीस बरस से अपने प्रसिद्ध पिता के साथ सदैव युद्धों में रहा हूं अब मैं यह चाहता हूं कि पिछली अवस्था सुख में काटूं और राज्य का अधिकार और प्रतिष्ठा अपने लिये रक्खूं॥ और अपने पुत्र अब्दुलकादिर को सब देश का प्रबंध सोंपूं इसी कारण उसका पुत्र मुख्य मंत्री प्रसिद्ध हुआ और बादशाह जो पंद्रह सहस्र स्त्री इकठी की थीं उनके साथ केलि करने के लिये अंतःपुर में गया॥ इस स्त्री सभा में बादशाह की प्रतिष्ठा का बड़ा बिचार था बादशाह के पास तुरक जाति की ५०० स्त्रियां धनुष बान लिये पुरुष बेष किये निज चोकी में रहती थीं और ५०० हबशने बंदूक बांधे चोकी में रहती थीं हिंदुस्थान के मुसलमानी इतिहास में यह बात बड़ी अचरज की है कि तेतीस बरस तक इस बादशाहने अंतःपुर में केलि की और उस समय में कोई उपद्रव

न उठा उसके राज्य भर में कोई बात लिखने के योग्य नहीं है केवल इतना ही कहना बहुत है कि जब उस बादशाह के अंत समय के दिन निकट आने जान पड़े तब उसके बेटे ने जिसने इतने दिन राज्य का प्रबंध चलाया उसने भाई के बादशाह होने के भय से उस पर शस्त्र उठाया और राजमंदर तक उसका पीछा करके उसे मार डाला और थोड़े दिनों पीछे बूढ़ बादशाह भी राजमंदर में मरा पाया और उसके बेटे अब्दुलकादिर पर जो बहुधा नासिरुद्दीन कहाता था बादशाह के मारने का संदेह हुआ और आप सिंहासन पर बैठा और उसने १२ बरस तक राज्य किया॥ और उसका नाम बिषयी अधर्मियों में प्रसिद्ध हुआ और ईसवी संवत् १५१२ में ज्वर से मर गया और अपने तीसरे बेटे महमूद नाम दूसरे को मालवे का बादशाह किया और यह वहां का सबसे पिछला बादशाह था॥

आलसी गयासुद्दीन के राज्य में और उसके मालवे के अधिपति अधर्मी बेटे के समय में उनका प्रतिपक्षी गुजरात का राज्य पहले महमूद शाह के अधिकार में था गुजरात देश में पहला महमूद राज्य करता था जिसने ईसवी संवत् १४५९ में सिंहासन पर बैठ कर ईसवी संवत् १५११ तक अर्थात् चिरकाल ५२ बरस तक राज्य किया॥ और जैसा उस समय में इसका राज्य

चमत्कार से प्रसिद्ध था वैसा ही आलस्य में मालवे का॥ परंतु उसको लड़ाइयों का वर्णन संक्षेप से लिख सकते हैं॥ यह ईसवी संवत् १४६९ में उस गिरनार अर्थात् गिरपुर को गया जो गुजरात का दक्खन भाग सूरत में था और यह हिंदुस्थान के सब गढ़ों में दृढ़ गढ़ अनुमान किया जाता था और इसके जय करने की दिल्ली के बादशाहों को बड़ी अभिलाषा थी और जो परंपरा की बात माने तो प्राचीन हिंदुओंने भी उसपर बहुत सी चढ़ाइयां की थीं परंतु उसे कोई जय न कर सका अब उसका जय होना गुजरात के बादशाह के लिये रहा था॥ कहते हैं कि उन्नीस सौ बरस तक उस में हिंदू राजाओं के कुल का अधिकार रहा महमूद शाहने इस देश पर तीन बेर चढ़ाई की परंतु पहली दो चढ़ाईयों में कहते हैं कि उस राजाने आधीनता की और भेट दे अपने वैरी को बिदा किया परंतु महमूद को गढ़ और देश की जय करने के भिन्न और किसी बात से संतोष न हुआ और थोड़े ही काल में तीसरी चढ़ाई करने का मिस मिल गया और निदान गिरनार उसके हाथ आ गया और राजा बहुत बिवाद के पीछे मुसलमानी मत में आ गया और गुजरात के बादशाहने उस सब देश को अपने मत में लाने के लिये एक नगर बसाया और उसका नाम मुसतफाबाद रक्खा और मुसलमानी मत

को प्रवृत्ति के लिये अपने मत के बड़े बड़े मनुष्य बसाये॥

ईसवी संवत् १४७२ में गुजरात का बादशाह कच्छ देश को चला और उसे जय करलिया और वहां से आगे बढ़ के सिंध के देश को संपूर्ण रीत से आधीन कर लिया और सिंधु नदी तक अपने राज्य की सीमा बढ़ाई॥ थोड़े काल पीछे एक बुद्धवान मुसलमानने जिसने कि दक्खन के बादशाहों की सेवा में बहुत धन इकठा किया था बादशाह से पुकार की कि ऊर-मज जो फारस में है उसको और फिरतो बेर जगत नगर निवासियोंने मुझे लूट लिया यह स्थान हिंदुस्थान की परम सीमा पै है और द्वारका के समीप है और समुद्र के मार्ग से लूट लेने के लिये अच्छा स्थान है॥ इस बुद्धवान मनुष्य की हान होने से बादशाह ने अपनी सेना को चमकाया यद्यपि वह तीन बरस से लड़ते लड़ते थक गई थी परंतु फरिश्ता लिखता है कि जिन अधम ब्राह्मणोंने बुद्धवान मुसलमान को सताया था उनके ऊपर सेना चढ़ाई करने को भेजी और जगत नगर आधीन हुआ और वहां के रहने-वाले बेट नाम स्थान को भाग गये यह कैंबे के मुहाने का टापू है और समुद्र के ठगों को जितनी दृढ़ता चाहिये उतनी सब इस टापू के रहनेवालों में थी यद्यपि वह टापू तीन कोस के फेर में भी न था परंतु

जब बादशाह बेड़े के बनाने में लग रहा था तब उस टापू के रहनेवालोंने बाईस बेर से न्यून चढ़ाई न की थी निदान वह टापू जय करलिया ॥

ईसवी संवत् १४८२ में महमूद एक बड़ा कटक लेके चंपानीर को आधीन करने के बिचार से चला यह नगर हिंदुओं का एक छोटा सा खाधीन राज्य था और उसकी राजधानी एक ऊंचे पहाड़ पै थी और उसका सब ओर कोट बंधा हुआ था और वहां का अधिपति बैनिराय रजपूत था और यह ऐसे पुराने कुल में से था जो इस की उत्पत्ति इतिहास और लोगों के कहने से नहीं जानी जाती है ॥ गुजरात के बादशाहने उसे सब ओर से घेर लिया बाहर भीतर उसकी रक्षा के लिये सात सहस्र रजपूत थे परंतु गुजरात के कटक की शूरता से निदान यह दब गया बादशाह की वीरता और दृढ़ता से वह कटक भी बीर और दृढ़ होगया था बहुतसे राजपूत मारे गये और निदान बैनीराय पकड़ा गया उसको और उसके मंत्री को मुसलमान करने के लिये बहुत उद्योग किया परंतु बादशाह की युक्तैं अकारथ गईं निदान बादशाहने उन दोनों को मरवा डाला यह बात बड़ी अचंभे की है कि यद्यपि चंपानीर गुजरात के बीचों बीच है और उसकी राजधानी गुजरात की राजधानी से दक्खन की ओर पैंतीस कोस से न्यून है परंतु गुजरात के राज्य

की स्थिति होने से चंपानीर सा गढ़ अबलों बरस तक स्वाधीन रहा इसी से जान पड़ता है कि मुसल्मानों का दबाव हिंदुस्थान पर थोड़ा था बादशाहने उसी के पास एक नया नगर बसाया इस कारण कि हिंदू उसे फिर न दबालें और उसका नाम महमूदाबाद चंपानीर रक्खा ॥ और जान पड़ता है कि फिर बादशाह अपनी प्राचीन राजधानी और इस नगर में बारी बारी से रहने लगा ॥

इस बादशाह के समय में पुरतगेजोंने ईसवी संवत् १४९८ में पहले ही पहल हिंदुस्थान में स्थान लिया सो हम इस बात का वर्णन आगे विशद करके कहेंगे और यहां केवल फरिश्तेके अनुसार ही कहना बहुत है कि यूरप के म्लेच्छोंने जो कई बरस तक समुद्र के अधिपति रहे थे मालवे के निकट नदी के तीर पै पहुंचने से दस बरस पीछे गुजरात के किसी बंदर में बसना चाहा ॥ मिसर देश के ममलूक नाम बादशाहने हिंदुस्थान में उनके आने से डाह खाकर उनका सामना करने को जहाजों का एक बेड़ा भेजा और वह गुजरात के उस कटक से मिला जिस का अधिपति मलिक अयाज़ था वे दोनों कटक मिलकर माहिम से जिसे पीछे बंबई कहने लगे वहां से चल के पुरतगेजों के जहाजों से लड़े ॥ मुसल्मान इतिहास-वेत्ता कहता है कि शत्रुओं का जहाज डूबा उस में

करोड़ रुपये से न्यून द्रव्य न होगा चार सौ तुरक और तीन चार सहस्र पुरतगेज मारे गये परंतु पुरतगेजों का इतिहासवेत्ता कहता है कि इस लड़ाई में हमारे देसवालों के इक्यासी मनुष्य मरे और हमारे शत्रुओं के कुछ सौ ॥ ईसवी संवत् १५११ में महम्मद शाह मर गया कि जिस की आयु भर में अनेक उपद्रव होते रहे और सब बादशाहों के नाम से इसके नाम को बगरा की पदवी विशेष थी और वह जैसे गाय के सींग मुड़े हों हैं इस भांति अपनी मूछों को मुड़वाया करे था गुजरात की बोली में बगरा गाय को कहते हैं इसीलिये उसे बगरा पदवी दी थी उसके पीछे उसका बेटा मुजफ्फरखां बादशाह हुआ ॥

ईसवी संवत् १५१२ में मालवे के सिंहासन पर दूसरा महमूद बैठा था परंतु उसके बादशाह होते ही बड़े मनुष्योंने उस राज्य में बिघ्न डाल दिया और उसका साथ छोड़ शाहावखां को सिंहासन पर बैठाया इस आपत्यके समय में केवल एक सरदारने उसकी सहायता की और यह सरदार मेदनीराय हिंदू था और उसने बादशाह की सहायता के लिये अपना कटक इकठा कर बादशाह को शत्रुओं से जीतने के योग्य किया इस कारण वह बादशाह को बहुत प्रिय होगया और मुख्य मंत्री ठहरा जिस कारण उसको बहुत अधिकार प्राप्त हुआ था और उसने सब कामों पै

अपने धर्मवालों को अधिकारी किया और मुसलमान सरदार इन अधिकारों में अपना स्वत्व समझते थे उन्होंने इस प्रबंध से बड़ा बुरा माना परंतु यह उनकी उद्धतता का फल था और इसी कारण मुसलमान इतिहासवेत्ताने मेदनीराय की बहुत बुराइयां लिखी हैं परंतु जान पड़ता है कि वह बहुत अच्छा प्रबंध करनेवाला था पर उसमें केवल हिंदू होने का दोष था॥ मुसलमान उसकी निंदा किया करते थे निदान इस कारण बादशाह का मन उससे फिर गया और बादशाहने उसके कटक के चालीस सहस्र रजपूत छुड़ा दिये वरन अपने प्रधान के मारने के लिये एक वधिक को आज्ञा दी और वह अपने प्रारब्ध से दो तीन घाव खाके भाग गया॥ कटकने बादशाह का यह आचरण देख अपने देशवाले अधिपति को बादशाह करने का विचार किया परंतु मंत्रीने उन्हें संभावित उत्तर दिया यद्यपि बादशाहने हमारे प्राण लेने का उद्योग किया था परंतु हम को उसके ऊपर शस्त्र उठाना उचित नहीं अपने बचने के लिये अनेक उपाय करें परंतु अपने स्वामी पर चढ़ाई करना योग्य नहीं इसी कारण उसने अपने कटक को अपने अपने घर जाने की आज्ञा दी यह बात सुनके उसके स्वामी धर्म का निश्चय हुआ और उसे फिर कर अपना अधिकारी किया परंतु मंत्री अपने जी की रक्षा करना

उचित जान कभी बादशाह के साम्हने अकेला न गया इस बात से फिर बादशाह का मन खट्टा ज़ुआ और एक रात अपने स्थान मांडू से थोड़ेसे सवार और कुछ साथी लेकर अकस्मात चल दिया और जब तक गुजरात की सीमा पर न पज़ंचा तब तक कहीं न ठहरा॥

यह बात ईसवी संवत् १५१७ में ज़ुई॥ मुजफ्फर शाहने महमूद शाह को अपने देश में भाग आने का कारण सुनके अच्छी भांति से उसकी सहायता करनी बिचारी परंतु हिंदुओं की बीरता और बल से उसके मन में भय था॥ मेवाड़ गुजरात और मालवे की उत्तर सीमा पर है उस समय वहां का राज्य सिंगा राणा करता था और उसके समय में देश बज़त सुखी था अस्सी सहस्र सवार और सात बड़े प्रतापी राजा एक सौ तेरह छोटे सरदार और पांच सौ लड़ाई के हाथी उसके साथ युद्ध को जाया करते थे और उसके देश के इतिहासवेत्ता कहते हैं कि मालवे और दिल्ली के कटक को अठारह बेर हराया उत्तर की ओर पीलो नदी जो बयाने के निकट है पूरब की ओर सिंधु नदी दक्खन की ओर मालवा उसके राज्य की सीमा थी पश्चिम की ओर पहाड़ों की रोक से चढ़ाई न हो सकती थी इसी भांति संपूर्ण राजपूताने पै राज्य करता था और उसके पास के मुसलमान बादशाह उसका

बहुत भय करते थे और वे इस बात से डरते थे कि मेदनीराय उसका एक देशी कहीं मालवे पर अधिकार न पा जाय और रजपूत इकठे होकर पहले गुजरात का सिंहासन लें पीछे हिंदुस्थान के बीच का राज्य स्थापन न करें॥ इस कारण मुजफ़्फ़रखांने एक बड़ी सेना इकठी की और महमूद को साथ ले मांडू को चला जो मालवे की राजधानी और भीमराय मेदनीराय के बेटे के पास था और यह ठहराया कि जब तक राणा सिंगा सहायता न करने पावे तब तक उसे जीत लूं॥ मेदनीराय को अपने बचाव के लिये अपने स्वामी के साम्हने रणभूमि में आना पड़ा और चीतोड़ के राणा से मिलना पड़ा परंतु मांडू को मेवाड़ की सेना के आने से पहले जीत लिया था और उन्नीस सहस्र रजपूत मारे गये थे॥ सुलतान महमूदने निज राज प्राप्त करके अपने छुड़ानेवाले को सिष्टाचार पूर्वक भोजन करवाया बरन उसकी टहल में रहा मुजफ़्फ़रखां उसकी सहायता के लिये बहुतसी सेना छोड़ अपने देश को चला गया परंतु महमूद के भाग में सुख नहीं था ईसवी संवत् १५१९ में वह अपनी सेना और गुजरात के कटक को लेके राणा सिंगा पर चढ़ा यद्यपि उसकी सेना यात्रा करते २ थक गई थी और शत्रु की सेना परिश्रांत थी परंतु महमूदने लड़ने के लिये हट किया और संपूर्ण रूप से हारा और यह

अपने शरीर से जैसा बीर था वैसा ही मूढ़ था जब उसे हार होती जान पड़ी तब दस सवार लेकर जो उसके साथ रहगये थे शत्रु से लड़ने को चला और घायल हो उसके हाथ लगा और यशस्वी सिंगा आप उसके घाव देखने को गया और जब उसके घाव अच्छे होगये तब बिना कुछ लिये उसकी राजधानी को भेज दिया परंतु उसके अप्रबंध के कारण सूबेदार स्वाधीन होगये थे और जब फिर कर आया तो उसने देखा कि मेरा अधिकार तुच्छ हो गया॥

मुजफ्फर शाह मांडू से गुजरात को फिर आया और मेवाड़ के राजपूतों से पहले की भांति बैर रखता रहा तीनेक बरस तक युद्ध रहा और इस काल में दोनों देशों के खेत बारी बारी से ऊजड़ होते गये और केवल प्रजा के खेद के भिन्न और कुछ फल न निकला जान पड़ता है कि राणा संगा की जय हुई उसने एक बेर अहमदाबाद तक आकर शत्रु को कोट के भीतर घेरा दिया॥ निदान दोनों बादशाहों में मिलाप होगया गुजरात का बादशाह इस मिलाप से पांच बरस पीछे ईसवी संवत् १५२६ में मरगया और उसके पीछे प्रथम उसका ज्येष्ठ पुत्र सिंहासन पर बैठा और चार ही महीने के बीच मारा गया तिस पीछे उसका लघु पुत्र बादशाह हुआ और कई महीने पीछे उसका भाई बहादुरशाह उसे निकाल आप

बादशाह हो गया॥ यह बादशाह पहले निज पिता की अप्रसन्नता के कारण हिंदुस्थान के देशों में भ्रमता फिरा सो अब प्रजा और प्रधान लोगों की सहायता से सिंहासन पर बैठा॥

अब मालवे के स्वाधीन राज्य का वर्णन पूरा हुआ और बहादुर शाह गुजरातवाले का भाई मालवे में भाग गया और उसके ऊपर अज्ञान महमूदने बहुत कृपा की और उसको राज्य लेने के लिये उपाय करने की आज्ञा दी॥ बहादुर शाह जानता था कि महमूद पर हमारे कुल के लोगोंने बहुत कृपा की थी इसलिये वह उसके कृतघ्नीपने पर क्रोध करके पलटा लेने के लिये उपस्थित हुआ पश्चिम की ओर यह बखेड़ा मच ही रहा था और उसी काल में प्रारब्धहीन महमूदने अज्ञानता से मेवाड़ के राणा से बैरभाव किया और वह शीघ्र गुजरात के बादशाह से मिल गया महमूदने अपने सेनापतियों का इकठा किया और उन्हीं को बड़ी बड़ी पदवी दी परंतु उस कठिन काल में उसको इस बड़ी उदारता करने से अधिक अविश्वास उपजा और वे भी उसके शत्रु होगये ईसवी संवत् १५२६ में गुजरात के कटकने मांडू पर चढ़ाई की और वहां पहुंचते पहुंचते सब ओर से बादशाह का संग छोड़ बहादुर शाह में जा मिले सब लोगों का मन महमूद की ओर से फिरा हुवा था इस-

लिये उसे अपनी राजधानी में छुप रहना पड़ा॥ केवल तीन सहस्र मनुष्य उसके साथ रह गये थे और उनसे ही उसने राज्य बचाने के लिये बहुत साम्हना किया परंतु गढ़ के लोग नित नित की चढ़ाई के कारण व्याकुल होगये और परिणाम वे आधीन हुवे और मई महीने की बीसवीं को ईसवी संबत् १५२६ में गुजरात के झंडे मांडू के बड़े कोट पर फहराये बहादुर शाह इस आधीन बादशाह पर अच्छी भांति अनुग्रह किया चाहता था बरन वह उसका देश फिर उसी को फेर देना चाहता था परंतु अभिमान से उसने बादशाह को मोंह के ऊपर ही बुरा कहा इसलिये वह और उसके सातों बेटे कैद हुवे और चंपानीर को भेजे गये मार्ग में थोड़ेसे भीलोंने दोहद नाम स्थान पर महमूद के लेजानेवालों पर चढ़ाई की और गुजरातियोंने इस डर से कि बंदुवे भाग न जावें उसको और उसके सब बेटों को मार डाला॥ महमूद खिलजी मालवेवाले के कुल में केवल एक बेटा बचा और यह देश सौ वर्ष से अधिक स्वाधीन रहकर उसी वर्ष से गुजरात के राज्य में मिल गया जिस वर्ष में मुग़ल का कुल दिल्ली के सिंहासन पर बैठा॥

॥ १५ अध्याय ॥

दक्खन की जय—विजयनगर की वृद्धि—
दक्खन का फिरना—बहमनी कुल—अला-
उद्दीन—महम्मद—मुजाहिद—फिरोज़—
अहमद शाह वली—दूसरा अलाउद्दीन—
हुमायूं—निज़ाम शाह—महमूद शाह—
उसके राज्य की अत्यंत सामर्थ—महमूद
गावां को कटा—उसका राज्य बिगड़ गया
और उस से पांच नवीन राज्य बन गये॥

नर्मदा के दक्खन के सूबों को दक्खन कहते हैं मुसलमानोंने अलाउद्दीन के समय में जैसा कि पीछे वर्णन हो चुका है उन्हें जय करलिया था अलाउद्दीन ईसवी संबत् १२९४ में जब तक वह अपने बाप अर्थात् बादशाह की ओर से केवल कराका अधिपति नियत हुआ था प्रथम ही प्रथम उस देश पर चढ़ाई की थोड़े ही काल में दिल्ली के सिंहासन पर बैठकर उसने दक्खन को संपूर्ण रीत से अपने आधीन करने का विचार किया और उसके सूबों को अपने राज्य में मिलाना चाहा उसके समय में बहुतेरी चढ़ाइयां हुईं और उसके सेनापति मलिक काफ़ूर को बहुधा उन चढ़ाइयों के करने का अधिकार मिला था और हिंदू राज्य देवगढ़ और तिलंगान और मैसोर का

सब भांति से डिग मिगाया॥ उन राज्यों के बिगड़ने से बिजैनगर के राज्य की सामर्थ और अधिकार बढ़ गये यद्यपि उसके प्रकृति बर्णन भांति भांति के हैं और एक एक से मिलता नहीं परंतु उस राज्य के स्थापक बका और हरीहर दो सरदार थे और वारं-गोल से उस समय में भाग गये थे जब तिलंगाने की राजधानी अलाउद्दीन के हाथ लगीथी॥ उस देश की कहानियों में इस भांति प्रसिद्ध है कि ये दोनों सर-दार बन में भागते समैं बिद्यारण्य स्वामी से मिले उसने उन्हें उस नगर का राज्य दिया जो तुंगभद्रा के तीर पर उसने बसाया था प्रथम वह नगर उसके नाम से बिद्यानगर कहाता था परंतु तिस पीछे उसका नाम बिजयनगर ठहराया गया॥ इस नई राजधानी को कोई कोई लोग कहते हैं कि यह सुग्रीव और हनूमान की प्राचीन राजधानी है उन्होंने राम को दक्खन की चढ़ाई में बड़त सहायता दी थी कवि बाल्मीक उनको बंदर लिखते हैं और हिंदू उनको भ्रम से देवता मान्ते हैं परंतु इतिहासवेत्ताओं का यह बिचार है कि वे दोनों राजा थे और दक्खन में उन लोगों पर राज्य करते थे जो बुद्ध में पशुओं की अपेक्षा कुछेक अच्छे थे भांति भांति के संपूर्ण बर्णन जो बिजयनगर के स्थापन होने के विषय में हैं उनसे उसके बसने का दिन ईसवी संबत् १३३६ में

जाना जाता है उसका राज्य शीघ्र फैल गया और उसकी सामर्थ बहुत बढ़ गई ॥ तिलंगाने का राज्य बिगड़ने के पीछे और मैसोर के राज्य को बड़ा धक्का लगने से निश्चै करके दक्खन में कोई ऐसा राजा न रहा जो मुसलमानों का साम्हना कर सके और जो उस समय में बिजैनगर का राज्य सामर्थवान न होता तो प्रत्यक्ष में कोई ऐसा कारण न था मुसलमानों के बढ़ते हुवे राज्य को कुमार का अंतरीप तक रोकता॥

हिंदुस्थान में मुसलमानोंने जो राज्य स्थापन किया था वह पहले महम्मद तुगलक बादशाह के समय में जुदा होने लगा और दक्खन की ओर पहले होपहल दंगा बखेड़ा उठने लगा इससे ५३ बरस पहले अला-उद्दीनने दक्खन में मुसलमानी झंडा खड़ा किया था महम्मद तुगलकने एक सेना साथ लेकर गुजरात के फिरहुवे सरदारों को हरा दिया उन में से बहुते-रोंने दक्खन में जाकर शरण ली और इस कारण से बादशाह ऐसा क्रोधित हुवा कि उसने उन सब भागे हुवे लोगों को दंड पाने के लिये भेज दो ऐसा लिखा और सूबेदारने उन्हें बादशाही दूत को सोंप दिया परंतु उन्हों को बादशाह की निर्दयता निश्चित थी इसलिये वे मार्ग में से बादशाही आज्ञा भंग करके फिर वहां गये जहां और लोग बादशाह के अन्याय के कारण फिरने को उपस्थित थे और कुछ हिंदू

सरदार भी उन से शीघ्र मिल गये उन्होंने दौलता-बाद को अपने अधिकार में कर लिया और एक बड़ा कटक इकठा करके बादशाही सेना का साम्हना करने को उपस्थित ज़ुवे और इसमाईल अफगान को शाह दक्खन की पदवी दी और हसन जो पूर्व काल में गंगू नाम ज्योतिषी का भृत्य था और अपनी बुद्धवानी के कारण से सहज २ बादशाह के यहां उसने बड़ी प्रतिष्ठा पाई अब वह फिरेङ्गवों का संगी हो गया और इसमाईलने उसको सेना में बड़ा अधिकार दिया॥

महम्मद तुगलकने इन फिरेङ्गवों के समाचार सुनके शीघ्र चढ़ाई की और उन फिरेङ्गओं के पास जाकर उसने उस स्थान पर युद्ध किया जहां दक्खन के हिंदुओं से पहली बेर अलाउद्दीनने साम्हना किया था निदान उसकी संपूर्ण रूप से जय ज़ुई और दौलताबाद को घेर लिया परंतु दिल्ली में बखेड़े होने का समाचार सुनके वह सेना छोड़ के उस अपनी राजधानी को फिरना पड़ा जिन सरदारों को वह छोड़ आया था उन पर फिरेङ्गवोंने शीघ्र चढ़ाई कर उन्हें हरा दिया और नर्मदा के तीर तक पीछा किया इस चढ़ाई में वीर हसनने. बड़ा नाम प्राप्त किया और बादशाही सेनापतियों को बीडर नाम स्थान पर बज़ुत हराकर दौलताबाद को चला आया॥

नय बादशाह इसमाईल का शीघ्र जानापड़ा कि प्रजा मेरी अपेक्षा हसन को बहुत चाहती है उसने बुद्धवानी से हसन को राज्य दे दिया इसीलिये हसन ईसवी संवत् १३४७ में दक्खन का बादशाह हुआ और उसने अपना नाम अलाउद्दीन रक्खा उसने अपने नाम पर बहमनी वा बाहमनी यह शब्द बढ़ा दिया इसके बादशाह होने का वृत्तांत इस के पूर्व स्वामी एक ब्राह्मण ज्योतिषीने अनुग्रह करके बता दिया था यह कुल उस पदवी से इतिहासों में प्रसिद्ध है उसने अपनी राजधानी कुलबर्गा स्थापन किया और उस राज्य का प्रबंध बड़ी बुद्धवानी से किया और दक्खन संपूर्ण के वे सूबे जो मुसलमानोंने किसी समय में जय कर लिये थे और तिलंगाने के राजा से भी जो सूबे लिये गये थे उन सब को अपने राज्य में मिला लिया और गंगू ब्राह्मण को भंडार का अधिकार देकर प्रसन्न करदिया अलाउद्दीन के समय में कुलबर्गा के राज्य की ये सीमा थीं उसके राज्य की उत्तर सीमा मालवा जो दिल्ली के राज्यमें लगता था और उसके उत्तर और पूर्व के बीच में हिंदू राज्य करोला का था और पश्चिम को समुद्र का तीर और चोल का बंदर था और दक्खन में बिजेनगर का देश था और अग्नि कोण में तिलंगाने का हिंदू राज्य था हसन अच्छी भांति ग्यारह बरस राज्य करके

ईसवी संवत् १३५८ में सड़सठ बरस का होकर तप से मर गया जो अहेर में अति परिश्रम करने के कारण आई थी ॥

तिस पीछे उसका पुत्र महम्मद बादशाह ऊआ उसने अपनी राजसभा की नाम्ना बढ़ाने में अति परिश्रम किया और दक्खन में पहले ही पहल मुसलमानों का सिक्का फैलाया इस में एक ओर महम्मद का कलमा और चारों खलीफों का नाम लिखा ऊआ था दूसरी ओर अपना नाम और संवत् लिखा ऊआ था बिजैनगर और तिलंगाने के बादशाहोंने इस नवीन बादशाह के सिंहासन पर बैठने से अवसर पाकर वे सूबे फिर मांगे जो पहले बादशाहने उन से छीन लिये थे महम्मदने तिलंगाने के राज्य पर दो बेर चढ़ाई की और उसके बेटे को पकड़ के उसकी जीभ काट डाली और लकड़ियां जलाकर उसे आग में डाल दिया इस बात से आस पास के सूबों के रहनेवाले ऐसे क्रोधित ऊवे कि उन्होंने महमूद की अप्रतिष्ठा करके देश में से निकाल दिया परंतु वह एक भारी कटक लेकर फिर आया और तिलंगाने के राजा को ऐसा दबाया कि वह बऊतसे अच्छे२ पदार्थ और पहाड़ी गोलकंडा और उसके आसपास के देश देकर आधीन ऊआ परंतु शीघ्र उन में बचन हो गया और तिलंगाना के राजाने इस बचन पर कि

महमूद दोनों राज्यों की सीमा नियत कर दे और आगे को बचन न तोड़े एक सिंहासन जो उसने बज्जत अच्छा बनाया था वह बादशाह को भेट में दिया उस सिंहासन को तख्त फीरोज़ कहते थे और बाहमनी बादशाह उस समय से बज्जधा सभा के समय उसी पर बैठते थे और लगातार उसी कुल के कई बादशाहोंने इतने रत्न जड़वाये कि पीछे उन्हें जब कुछ काम पड़ा उसको तुड़वाया तो उसका मोल चार करोड़ से न्यून न ज्जआ॥

अब तक सेनाने तिलंगाने पर लगातार दो बरस तक चढ़ाई करके सांस भी न लिया था कि उनको विजैनगर के बादशाह पर चढ़ाई करने की आज्ञा ज्जई॥ महम्मदने मदोन्मत्त हो कर उस राजा का भंडार लेलेने के कारण उसकी अप्रतिष्ठा की थी इस हिंदू राजाने उस अप्रतिष्ठा के पलटे के अपराध में कटा करनी ठहराई यद्यपि बर्षा के कारण कृष्णा नदी चढ़ी ज्जई थी तो भी वह कटक लेकर उसके पार हो गया और मुदगल को लेकर वहां के प्रत्येक मनुष्य की कटा की महम्मदने इस कटा के समाचार सुन कर शपथ खाई कि जब तक मैं एक लक्ष हिंदुओं को कटा न करूंगा और मुदगल में कटा ज्जवे लोगों की आत्मा संतुष्ट न करूंगा तब तक भोजन और निद्रा न लूंगा इस लड़ाई का प्रारंभ ईसवी संवत् १३६८ में

हुआ महम्मद ने अपने बेटे को युवराज प्रसिद्ध करके उसको फिर कुलबर्गा नगर में भेज दिया और इस रीत का प्रबंध किया कि जानो मरने को चला था तब वह तुंगभद्रा के पार हुआ इस नदी के पार जब तक दक्खन के मुसलमान बादशाह कभी नहीं हुवे थे हिंदुओं के कटक को हरा दिया और प्रत्येक मनुष्य उसके हाथ लगा उसकी कटा को और कृष्णा-राव बिजयनगर के राजा का तीन महीने तक पीछा करता रहा निदान उसे अपनी राजधानी में शरण लेनी पड़ी महम्मद ने उसको घेरा परंतु एक महीने के पीछे जान लिया कि उसे कुछ कष्ट नहीं हुआ और अपने दृढ़ गढ़ से बाहर नहीं निकल सकता और निरुपाय हो कर फिरने की इच्छा को हिंदुओं ने बिचारा कि वह हमारे साम्हने से भागा जाता है उसका पीछा किया और बादशाह न कहीं ठहरा और न पीछा फिरके देखा जब तक कि वह उस स्थान पर पहुंचा जिस को शत्रुओं से लड़ने के लिये बहुत अच्छा बिचार रक्खा था॥ वह सोने के लिये संध्या ही समैं चला गया परंतु उसने एकाएकी अपनी सेना को उसी रात शत्रु पर चढ़ाई करने को आज्ञा दी हिंदुओं ने रात आनंद में बिताई और उस समय तक आनंद ही में थे कि मुसलमानों को अपने तंबू के पास देखकर वे घबराये राजा अपनी राजधानी को

भाग गया दस सहस्र हिंदू लड़ाई में मारे गये सिवा पीछे और बहुत कटा हुई क्योंकि बादशाहने सब हिंदुओं की कटा करने की आज्ञा दी थी निदान विजयनगर के राजा को मिलाप करना पड़ा और महम्मदने केवल उसकी मनबान्छित बात ही अंगीकार न की वरन उसने कटा की थी इसका भी बहुत पश्चात्ताप किया और प्रतिज्ञा की कि लड़ाई के पीछे किसी मनुष्य को और शस्त्ररहित शत्रु को आगे से कटा न करूंगा महम्मद इस प्रकार अपने शत्रुओं को आधीन और पांच लाख हिंदुओं की कटा करके अपने राज्य के सुधारने में लगा और १७ बरस राज्य करके ईसव संवत् १३७५ में मरगया॥

उसके पीछे उसका बेटा मुजाहिद शाह उन्नीस बरस की अवस्था में सिंहासन पर बैठा वह अपने कुल के सब बादशाहों में अत्यंत सुरूपवान् था बीरता और दृढ़ता में कोई उस से विशेष न था और उसने राज्य केवल चार बरस तक किया उसने बैठते ही बिजैनगर के राजा से चोल और मुद्गल और शेष देश मांगे जो कृष्णा और तुंगभद्रा के बीच में हैं और जिन के पीछे हिंदू और मुसलमान बादशाह सदैव झगड़ते रहते थे यह बात अंगीकार न की गई और उसका फल लड़ाई हुई मुजाहिद शाह बिजैनगर पर चढ़ गया और राजा तुरंत भाग गया और

मुजाहिद शाह कुछ महीने तक कर्णाटक के सब देश भर में उसका पीछा करता रहा निदान वह अपनी राजधानी में आया और मुसलमानोंने उसको घेर लिया यद्यपि उन्होंने नगर के निकटवर्त्ती स्थानों को अपने बस कर लिया परंतु दुर्ग के लेने में उनका कुछ पराक्रम न चला निदान हिंदू निकले और दोनों ओरवालों में धुंवांधार लड़ाई हुई जिस में मुजाहिद शाह की जीत हुई विजैनगर के राजा को आधीन करके वह अपने घर को चला परंतु फिरते समें उसको उसके चचाने मार डाला इस बात पर कि मुजाहिद शाहने उसे लड़ाई में एक बुरी बात कही थी जब वह लड़ाई में एक अच्छे स्थान से हट गया था इस चढ़ाई में तरुण बादशाह की बुद्ध इस कारण से और भी प्रसिद्ध हुई कि उसके शत्रु के राज्य की अपेक्षा उसका राज्य बहुत छोटा था क्योंकि उस समय में विजयनगर के राज्य की सीमा समुद्र के पूरब पश्चिम तक थी और मालाबार और सिंगल द्वीप के राजा उसको नालबंदी देते थे॥

दाऊदखां कटा करनेवाला सिंहासन पर बैठा परंतु उसको चालीस दिन के भीतर ही मुजाहिद शाह की बहनने मार डाला उसने महमूद को सिंहासन पर बैठाना चाहा उस कुल स्थापन करनेवाले का यह एक ही पुत्र उस समय तक जीता था उसको

इच्छा के अनुसार वह ईसवी संवत् १३७८ में सिंहासन पर बैठा उसने सब देश का सुख ऐसा चाहा जैसा उसके पूर्वजोंने युद्ध चाहा था उसके राज्य में केवल एक बेर झगड़ा हुआ उसने विद्या और गुण की बहुत प्रतिष्ठा बढ़ाई और उसकी प्रजा उसको दूसरा अरस्तू जानती थी और उसके राज्य की बड़ी बात प्रसिद्ध यह है कि उसने फारस से हाफ़िज़ नाम कवीश्वर को अपनी राजसभा में रखने को बुलाया था कि वह उसके पास आने के लिये निश्चै करके नौका पर चढ़ा था कि इतने में आंधी आई उसे नाव के डूबने का भय हुआ और हाफ़िज़ने कहा कि अब मैं नाव पै कभी नहीं चढूंगा उसने बादशाह के पास न आने की बिनती में कुछेक कबिता लिख भेजी इस बात पर एक सहस्र मोहर का द्रव्य उसकी प्रसन्नता के लिये भेजा॥ यह बादशाह उन्नीस बरस राज्य करके पीछे ईसवी संवत् १३९७ में मर गया और उसके पीछे उसके दो बेटे लगातार बादशाह हुवे जिनका राज्य ६ महीने से अधिक न रहा॥ फीरोज़शाह जो कटा करनेवाले दाऊद का बेटा था सिंहासन पर बैठा उसके और उसके भाईयों का राज्य मिलकर सैंतीस बरस तक रहा इतिहासवेत्ता कहते हैं कि वह बहमनी कुल का समय सब से अच्छा था॥ फिरोज़शाहने २४ चढ़ाइयां कीं और अपने राज्य को बहुत

बढ़ा दिया उसका ध्यान उसके पूर्वजों की अपेक्षा बिजैनगर के राजा पर अधिक रहा उस पर कई बेर चढ़ाई कर जय पाई और करणाटक के सब देश को तरवार और आग से ऊजड़ कर दिया उसने उस राजा की सामर्थ ऐसी घटा दी कि उसे फीरोज शाह को बिवाह में अपनी बेटी देनी पड़ी और करोड़ेक रुपैया भी कर का दिया परंतु बिजैनगर और गढ़ उस्से कभी जय न हुआ फीरोज शाह के समय में तैमूरने हिंदुस्थान पर चढ़ाई करके दिल्ली को लेलिया फीरोज शाहने एक दूत अच्छी अच्छी भेट देकर भेजा कि मैं भी उसके आज्ञाकारियों की गिनती में हूं तैमूरने उसको गुजरात और मालवे का राज्य दे दिया परंतु इतिहासवेत्ता नहीं लिखते हैं कि तैमूरने अपने मन से यह कृपा उसके ऊपर की थी वा फीरोज शाह के कहने से॥ उन दोनों सूबों के सूबेदारों को जो स्वाधीन हो गये थे फीरोज शाह की उच्च दृष्ट जो तैमूर की उदारता से प्रगट हुई थी उस करके भय हुआ और उन्होंने फीरोज शाह के आशय को सिद्ध न होने के कारण से उसके उत्तर और दक्खन के पड़ोसियों से अर्थात् करोला और बिजैनगर के राजाओं से मिलाप किया दोनों मुसलमान बाद-शाहोंने बुद्धवानी से आप फीरोज शाह पर चढ़ाई न की परंतु बिजैनगर के राजाने फिर लड़ाई का

प्रारंभ किया और हारा और बहुत सा द्रव्य देकर संधि की॥

फीरोज शाह बड़ा गुणग्राहक था और उसने एक यंत्रालय बनाया और प्रति बर्ष नावैं गोआ और चोल के बंदर से सब देशों की नामी और अद्भुत बस्तु और विद्यावान् लोगों के लाने के लिये भेजा करता था और उसने इतनी स्त्रियां रक्खीं जितनी उसके मत में अधिक से अधिक कही थीं उसके रणवास में १३ देश की १३ स्त्रियां अति सुंदर थीं कहते हैं कि वह प्रत्येक स्त्री से उसके देश की भाषा में बातें करता था उसने चौथे दिन कुरान के आठ पन्नें लिखने का प्रबंध रक्खा था अपने राज्य के अंत में जब वह बिजैनगर के राजा से अन्याय पूर्वक लड़ाई करने में लगा था तब हिंदुओंने उसकी सेना को हरा दिया और बहुतसे मनुष्यों को कटा करके उनके सिरों का रणभूमि में एक चौतरा बांधा उन्होंने बहुतसे नगर जय किये मसजिदों को ढादिया और अपने सत्रुओं से अगला पिछला पलटा एक ही बेर लेना ठहराया ऐसी ऐसी आपत्तों से बृद्ध फीरोज शाह को अत्यंत शोक हुआ उसने अपने बेटे हसन को अपने जीते ही सिंहासन पर बैठाना चाहा बरन अपने भाई से भी एक लड़ाई लड़ा जिसने इस बात में रोक टोक की थी परंतु सब अपने सरदारों को

अपने भाई की ओर जान कर राज्य उसी को दे दिया और दस दिन के बीच में मरगया अहमद शाहवली अपने भाई फीरोज शाह के सिंहासन पर बैठा इसको वली की पदवी इसलिये मिली थी कि उसने ईश्वर की प्रार्थना करके अकाल में मेह बरसाया था॥ और बिचार किया कि बाहमनी कुल को सेना की जो पिछले बादशाह के समय में अप्रतिष्ठा हुई थी उसका पलटा लूं उसने बड़ी सेना लेकर बिजैनगर के राजा देवराय के देश पर चढ़ाई की उसने तिलंगान के बादशाह से उस हिंदुओं के शत्रु से लड़ने के लिये सहायता चाही यह बात उसने अंगीकार की परंतु जिस समैं उसे सहायता आवश्यक थी तब उसने उसका साथ छोड़ दिया हिंदू और मुसलमानों की सेना चालीस दिन तक तुंगभद्रा के दोनों तीर पर आमने सामने रहीं निदान अहमद शाहने पराक्रम से पार होकर देवराय की सेना पर चढ़ाई की और उसको संपूर्ण रूप से हरा दिया और अहमद शाहने उसका पीछा किया और देश को भली भांति से लूटा और पहले जो बचन बंधुवों के बिषय में हुवे थे उनपर कुछ बिचार न करके उसने पशुता से पुरुष स्त्री और लड़कों को कटा करवाई जब बीस सहस्र मनुष्यों की कटा हो चुकती थी तब वह तीन दिन तक ठहर जाता था और बड़ी २

जोनारें करता था सब देश को ऊजड़ करके उसने राजधानी को घेरा और राजा को निदान संधि करने के लिये कहना पड़ा जो केवल इस बचन पर अंगीकार ऊई कि जो शेष रुपैया रहा है वह दे देय अहमद शाहने फिर तिलंगाने के राजा पर सेना भेजी उस अपराध का दंड देने के लिये कि वह बिजैनगर की सेना का संगी ऊआ था तिलंगाने की राजधानी वारंगोल को जीत लिया और संपूर्ण भंडार जो वहां इकठा ऊआ था अहमद शाह के हाथ लगा उसने फिर उत्तर की ओर चढ़ाई को वहां उसे एक सोने की खान मिली उसने बज़ुतेरे हिंदुओं के मंदरों को जड़ से उखड़वाडाला और उनके स्थानो में मसजिदें बनवाईं इस चढ़ाई में उसने गायल के गढ़को बन-वाया वा सुधरवाया जो तिस पीछे बरार की राज-धानी ऊआ॥

इस चढ़ाई से फिरते ऊवे समय वह दैव गति से बीडर में हो फिर गया वहां के स्थान से ऐसा प्रसन्न ऊआ कि उसने इस प्राचीन हिंदू नगर के स्थान पर अहमदाबाद बसाया वह दक्खन भर के स्थानों में अच्छा गिना जाता था ईसवी संवत् १४३२ में यह नया नगर बन चुका और बीडर की राजधानी कुल-बर्गा ऊजड़ ऊआ और उसका नाम मिट गया अह-मद शाहने मालवे के बादशाह से दो लड़ाई लड़ीं

और दोनों में जयवंत हुआ तीसरी लड़ाई मालवे से होने को थी कि खान देश के बादशाहने बीच बिचाव कर दिया और दोनों बादशाहों में वचन होगये करोला से अहमद शाह और बरार से मालवेवाला निरास हुआ॥ अहमद शाहने कोकन को जय करने के लिये अपने सेनापति भेजे यह स्थान हिंदुस्थान के पश्चिम के समुद्र के तीर और बंबई और गोवा के पहाड़ों के बीच में है उसके सेनापति पहली बेर तो जयवंत हुवे परंतु जय की प्रसन्नता में उन्होंने बाहम नाम स्थान को जो गुजरात के अधिकार में था लेलिया और बादशाह से बैर किया इसलिये सब चढ़ाई निरर्थक हो गई अहमदशाह ईसवी संवत १४३५ में बारह बरस राज्य करके मरगया॥

अलाउद्दीन अपने बाप अहमद शाह के पीछे सिं-हासन पर बैठा और पूर्वजों के अनुसार उसने प्रथम ही प्रथम बिजयनगर के राजा से बैर किया कहते थे कि उसने पांच बरस से कर देना छोड़दिया था इस चढ़ाई में उसने जय प्राप्त की उसके बादशाह होने के दो बरस पीछे खान देश के बादशाहने इस छल से कि अलाउद्दीनने मेरी बेटी से दुराचरण किया जो उसको ब्याही गई थी इसलिये उससे प्रत्यक्ष बैर किया और गुजरात के बादशाह को समझा कर इस चढ़ाई में अपना संगी करलिया और बाहमनी बादशाहने

इस समैं सेना का अधिकार मलिकुत्तुज्जार एक मुग़ल को दिया जिसने दक्खनी और हबशियों की सेना में से किसी को संग न लिया और कहा कि कोकन की लड़ाई की हार उन्ही की कुचाल से हुई थी॥ अपने देशवालों के थोड़ेसे समूह से वह शत्रु पर चढ़ चला और उनको अपनी वीरता और सावधानी के कारण से हरा दिया और बादशाही नगर बुर्हानपुर को जीत लिया और वहां उसने बादशाही खानों को जलादिया और उनकी नीम तक उखेड़ गेरी और जब वह फिरके आया तब बादशाह मलिकुत्तुज्जार को लेने गया और केवल उसको बड़ी पदवी ही न दी वरन आज्ञा की कि आगे को मुग़ल दक्खनियों से प्रतिष्ठा में अधिक गिने जाया करेंगे और इस बात से चिरकाल तक दोनों सेनाओं में लड़ाई झगड़ा चला गया॥

इसी बीच देवराय विजैनगर के राजाने अपने यहां के बड़े लोगों को इकठा करके पूछा कि यद्यपि हमारा देश विस्तार और द्रव्य और जनता में बाहमनी कुल के राज्य से अधिक है परंतु हमारे बड़े सदैव से उन्हें कर देते आये हैं इसका क्या कारण है किसीने तो कहा कि देवताओं की यह इच्छा है और शास्त्र में लिखा है औरोंने कहा कि मुसलमानों के पराक्रमी घोड़ों की सेना और अच्छे धनुर्धर हैं इस बात के सुन्ने हो

देवरायने तुरंत ही मुसलमान धनुर्धरों की भरती करने की आज्ञा दी और उनके लिये एक मसजिद अपने राजधानी नगर में बनवा दी और वे जब उसके सनमुख आते थे तब उनकी प्रसन्नता के लिये वह अपने साम्हने एक कुरान की पुस्तक रखवा लेता था कि वे अपने जाने तो उस पुस्तक की प्रतिष्ठा करें परंतु वह निज मन में अपनी प्रतिष्ठा जानता था॥ उसने शीघ्र दो सहस्र मुसलमान और साठ सहस्र हिंदू धनुर्धर इकठे कर लिये और अलाउद्दीन का पराक्रम देखना चाहा दो महीने के बीच दोनों में तीन युद्ध हुवे और दोनों समान समान रहे परंतु दो मुसलमान सरदारों को हिंदुओंने पकड़ लिया और अलाउद्दीनने सोगंद खाई जो वे दोनों सरदार मार गये तो उन एक एक के पलटे में एक एक लाख हिंदुओं को कटा करूंगा इस धमकी से हिंदू राजाने संपूर्ण शेष कर देकर संधि करली॥

अलाउद्दीन बादशाह जो इस जय के पूर्व हिंदुस्थान के बादशाहों में सब से बड़ा बुद्धवान् और धरमात्मा समझा जाता था क्रीड़ा में लग गया और वर्ष भर में केवल एक वा दो बेर बाहर निकलता था और सदैव अपने रणवास में पड़ा रहता था इसी काल में उसने मलिकुत्तुज्जार को कोकन पर भेजा जिसने पहले बुढानपुर का जय करलिया था परंतु लोगोंने घात लगा

कर उसको और उसकी बहुतसी सेना को मार डाला और जो कुछ भागकर आये उन में से थोड़े लोगों को छोड़कर सब को बादशाही सेनाने मार डाला क्योंकि बादशाही कटक में दकखनी थ और मुग़लों पर बहुत जलते थे थोड़े लोगोंने उस कठिनता से भागकर बादशाह के पास आ समाचार कहे कि जिनके छल से उनके संगी मारे गये थे बादशाहने आज्ञा दी कि जो जो मनुष्य इस बुरे काम में मिला हुआ था उस२ को कटा करो॥ कुछ इस बात के जानने से और कुछेक अपने वृद्ध गुरु के लिखने से उसने फिर असावधानी को छोड़ दिया और कुछेक राज काज में मन लगान लगा ईसवी संवत् १४५४ में उसके पाव में फोड़ा हुआ इसलिये वह राजमंदर से बाहर न निकल सका और उसके मरने के समाचार प्रसिद्ध हो गये और मालवे का बादशाह और अलाउद्दीन के निज संबंधी लड़ने को उपस्थित हुवे परंतु उसके शत्रुओं का विचार सुफल न हुआ बादशाह ईसवी संवत् १४५७ में २३ बरस राज्य करके फोड़े के सड़ जाने के कारण मरगया॥

उसके मर जाने के पीछे उसका हमायूं नाम बेटा जो अन्याई था सिंहासन पर बैठा जिसने केवल साढ़े३ बरस राज्य किया और उस काल में केवल अधर्म ही के कर्मों करके प्रसिद्ध रहा था। तब उसीके भृत्योंने उसे

मदोन्मत्तावस्था में मार डाला ॥ तिस पीछे उसका बालक बेटा निज़ाम शाह ईसवी संवत् १४६१ में सिंहासन पर बैठा उसकी मा और उसके दो प्रधान राज्य का प्रबंध करते थे जिन्हों में महमूद गावां बड़ा प्रसिद्ध था उनके परिश्रम से पिछले राज्य के सब बखेड़े ठीक ठाक हो गये परंतु आस पास के राजाओंने छोटे से लड़के को सिंहासन पर बैठा जान लड़ाई करने का अवसर जाना और उड़ीसे के राजा शीघ्र ही वहां तक पहुंच गये जहां से राजधानी केवल पांच कोस रह गई थी परंतु शत्रुओंने उन्हें हटा दिया महमूद मालवेवाला भी रणभूमि में आया तिलंगाने और उड़ीसे की सेना उसकी संगी हो गई ॥ और इधर की सेनाने निज़ाम शाह बालक को बीचाबीच में रक्खा और बड़ी भारी लड़ाई हुई बाहमनी कुल के बाईं और दाहनी ओर के कटकने शत्रु को हटा दिया परंतु जय होने के समय में सिकंदरखां जो बादशाह का भाई था और बीचाबीच की सेना का अधिपति था जो जय प्राप्त करनेवालों से जलकर एका एकी बादशाह को और बादशाही झंडे को रणभूमि से लेकर चल दिया इस कारण से हार हो गई महमूद की जय हुई और उसने अहमदाबाद बीडर के नगर को लेलिया और बादशाह अपने सरदारों समेत फीरोज़ाबाद को चला गया आस पास के देशों

से भी कर ठहरा लिया और बाहमनी कुल के अंत होने का संदेह हुआ इस कठिन काल में गुजरात के बादशाहने इस कुल का पक्ष किया और मालवे पर चढ़ाई की इस कारण से महमूद अपना देश बचाने के लिये चला गया परंतु निज़ाम शाह इस छुटकारे के पीछे केवल थोड़े से काल तक जीता रहा सिंहासन पर बैठने से दो बरस पीछे मरगया ॥

ईसवी संवत् १४६३ में उसका भाई मुहम्मद शाह नौ बरस की अवस्था में सिंहासन पर बैठा और राज काज उसकी मा और प्रधान वैसे ही करते रहे जैसे पहले राजा के आगे करते थे ख़्वाजेजहां प्रधानने उसके पढ़ाने लिखाने में इतना परिश्रम किया कि फ़ीरोज़ शाह के पीछे अपने कुल में यह बादशाह बड़ा विद्यावान् गिना जाता था ॥ फिर भी जब यह जाना गया कि इस प्रधान का राज्य में बहुत अधिकार होगया है तब बालक बादशाहने जो अभी तक बारह बरस का नहीं हुआ था अपनी माता के कहने से उसको अपने आगे मरवा डालने की आज्ञा दी ऐसी छोटी अवस्था में स्वाधीन बादशाह ऐसा अन्याय किया करें थे इस राज्य में से पहली चढ़ाई करेला पै हुई जो उत्तर की ओर है और मालवे के अधिकार में था उसको जीत लिया परंतु यह अचंभा है मालवे के बादशाह के कहने पर वह गढ़ शीघ्र फिर

उसे देदिया॥ थोड़े ही काल पीछे महमूद गावां नाम प्रधान को कोकन पर भेजा जो समुद्र के तीर पर है वहां दो बेर हार हुई थी इस देश के बड़े बड़े लोग और विशेष करके खलना का अधिपति जंहाजों की सेना बहुत रखता था और उन्होंने मुसलमानों के ब्योपार में भंग डाल दिया॥ महमूद गावांने केवल समुद्र के तीर के देशों ही को नहीं जय कर लिया वरन पहाड़ी देशों को भी आधीन कर लिया फिर गोवा के द्वीप पर जल और थल के मार्ग से चढ़ाई की यद्यपि यह द्वीप बिजयनगर के राजा के अधिकार में था तीन बरस पीछे जय प्राप्त करके फिर आया तब बादशाहने उसको अत्यंत प्रतिष्ठा और सत्कार किया और एक अठवाड़े तक बादशाह उसके घर रहा॥

ईसवी संबत् १४७१ में उड़ीसे के राय के कहनेसे हसनबहरी को वहां के लिये एक कटक मिला उसने अंबर राय को उसका देश दिलवा दिया फिर कंडापल्ली और राजमंद्री को अपने स्वामी के नाम से जय किया मुख्य प्रधान के कहने से हसनबहरी उस सेवा के करने से तिलंगाने का अधिपति नियत हुआ और इसी रीत से बरार का अधिकार अमादुलमुल्क को मिला और यूसफ आदिलखां महमूदगावां के लेपालक पच्छ को दौलताबाद का अधिकार मिला जो

राज्य भर में अत्यंत अच्छा था उस काम को यूसफ-खांने ऐसी बुद्धवानी और उत्साह से किया कि उसको बादशाहने उसे बज्जत प्रतिष्ठित किया और सदैव उसको और उसके सहायक प्रधान मंत्री को अपने बिचार में रक्खा दक्खनी सरदारों को इन अधिकारियों से बज्जत जलन ज़ई और उन्होंने उनके मारने के लिये उपाय किया॥

उस समय उस देश में बड़ा अकाल पड़ा और दो बरस तक खेत न बोये गये कंडाशी के गढ़वालोंने अवसर पाके वहां के अधिपति को मार डाला और गढ़ भीमराय को दिया उसने उड़ीसे के राजा को लिख भेजा कि अब तिलंगाना मुसलमानों के हाथ से छीन लेने का अवसर है क्योंकि दक्खन अकाल के कारण ऊजड़ हो गया है इस बात से उडीसे के रायने बज्जत बड़ा कटक इकठा किया और हसन-बहरी तिलंगाने के अधिपति को उसके साम्हने से हट जाना पड़ा महमूदगावां के कहने से बादशाह आप रणभूमि में आया और उड़ीसे के राजाने अत्यंत भय खाकर बड़ी बिनती से संधि करने की प्रार्थना की बज्जतसा कुछ देने से वह बात अंगीकार की इस में पचीस हाथी देने पड़े जिन्हें वह राजा अपने जी की समान जानता था बादशाहने आप कंडाशी को घेर लिया और छह महीने के पीछे फिर

उसे ले लिया और आप तीन बरस तक आगे के लिये वहां का प्रबंध बांधता रहा और तिलंगाने का प्रबंध बांधके उसने नरसिंहराय पर चढ़ाई की इस का राज्य समुद्र के तीर दक्खन की ओर मछलीपुटाम तक था॥ इस सरदारने बिजयनगर के सूबे जय कर लिये थे और बाहमनी कुल के राज्य की सीमा पर कई चढ़ाइयां की थीं इस चढ़ाई में प्राचीन और बड़े कांजीवराम के मंदिर का वर्णन सुना जो मंदराज के पास था उसकी भींत और छतों पर सोने के पत्र लगे ज़वे बताते थे वह अपने सवारों में से कुछ सहस्र सवार छांट कर उस पर चला ऐसा शीघ्र चलता था कि वहां तक केवल चालीस सवार उसके साथ रह गये थे उसने उन्हीं के साथ चढ़ाई की और शीघ्र ही शेष सवार उस से आ मिले उसने मंदर को अपने आधीन कर लिया और संपूर्ण उसका चांदी सोना लूट लिया॥

इस चढ़ाई के पीछे बाहमनी कुलवालों का ऐश्वर्य जाता रहा इस राज्य की सीमा बज़त दूर तक फैल गई थी बिस्तार में पश्चिम के समुद्र से ले पूर्व के समुद्र तक और कोकन से मसूलीपुटाम तक थी प्रत्यक्ष है कि राज्य की जो बड़ी प्रतिष्ठा ज़ई थी उसके बढ़ाने में इतनी बादशाह की बुद्धिमानी न थी जितनी उसके मंत्री महमूद गावां की थी यह मंत्री अपने समय के

बरन और समय के मनुष्यों से भी बहुत बुद्धवान था उसने विचारा कि अपने स्वामी के विस्तृत राज्य का नवीन प्रबंध करना आवश्यक है पूर्व काल में इस राज्य के चार सूबे थे प्रत्येक सूबा एक एक सरदार के अधिकार में था उसने अब उस राज्य के आठ प्रधान भाग किये और इस रीत से सूबेदारों की सामर्थ घटा दी और इसलिये उनके फिर जाने का भय न्यून हो गया और पहले यह भी रीत थी कि प्रत्येक सूबे के संपूर्ण गढ़ सूबेदार के आधीन रहते थे और उसको उन में अधिपति नियत करने का अधिकार रहता था परंतु मंत्री ने बुद्धवानी से यह आज्ञा दी कि प्रत्येक सूबेदार के अधिकार में केवल वही एक गढ़ है जिस में वह आप रहता हो और शेष गढ़ों के अधिपति बादशाह की ओर से नियत हुआ करें उसने इस रीत से सरदारों और कटक का मासिक भी बढ़ा दिया परंतु आज्ञा दी कि जो किसी सेनापति के पास सिपाहियों की नियत संख्या में से एक भी न्यून जाना गया तो उसको उसके मासिक का रुपैया फिर भंडार में भर देना पड़ेगा यह प्रबंध ऐसा स्वाधीनता से हुआ था कि राज दृढ़ हो जाय और देश की सामर्थ और अधिकार बढ़े सूबेदारों को यह प्रबंध अत्यंत दुःसह लगा इसीलिये उन्होंने मंत्री के मारने का उद्योग किया परंतु उनको निश्चय हो गया

कि जब तक यूसुफ आदिलखां उस से मिला रहेगा तब तक हमारा विचार उन दोनों में से किसी के मारने के लिये सफल न होगा॥ उस समय में यूसुफ आदिलखां नरसिंहराय से लड़ने को भेजा गया था तब सूबेदारोंने महमूद गावां को दूर कर देने का समय अच्छा जाना॥

बखेड़ियों में से दो मनुष्योंने एक हबशी से मित्रता की जिस के हाथ मंत्री की मोहर रहती थी एक दिन उसको बहुत सी मदिरा पिला कर उस्से एक कोरे पत्र पर मंत्री की मोहर करवा ली और कहा कि यह पत्र हमारे मित्र का है और काज गामियों की मोहरें और चिन्ह हो गये थे फिर उस पत्र पर उन्होंने महमूद गावां की ओर से उड़ीसे के राय को शीघ्र यह आशय लिखा कि तुम बादशाह से फिरजाओ और हम तुम से मिले हुवे हैं वह पत्र ऐसे छल से बादशाह के सन्मुख पहुंचाया कि बादशाह को निश्चय हुआ कि यह पत्र दैव गति से पकड़ पाया है॥ हसनबहरीने भी जो अपने हितकारी महमूद गावां का शत्रु था बादशाह के यहां जा कर उसके मन में जो क्रोध उपजा था उसे अधिक भड़का दिया बादशाहने अत्यंत क्रोध में आकर मंत्री को बुलाया इस पत्र का समाचार और बादशाह के क्रोध का वृत्तांत प्रसिद्ध हो गया था मंत्री के मित्रोंने उसे बादशाह के पास

आने के लिये निषेध किया और सब भांति से उसको सहायता करने का विचार किया परंतु महमूद गावां अपने निरपराधी होने के कारण अकेला राजसभा को चला गया ॥ बादशाहने अत्यंत क्रोध कर के पूछा कि जो कोई मनुष्य कृतघ्नी निश्चै होय तो उसको क्या दंड देना चाहिये मंत्रीने निडर होकर उत्तर दिया कि उसपर किसी भांति दया न करनी चाहिये ॥ बादशाहने पत्र उसके हाथ में दिया उसको देख कर महमूदने कहा निश्चै यह बड़ा भारी छल है निस्सं-देह मोहर तो मेरी ही दिखाई देती है परंतु लिखा हुआ मेरा नहीं है और उस विषय की मैं कुछ बात भी नहीं जानता बादशाह मदिरा पिये हुवे था उसे क्रोध और भी अधिक हुआ उसने एक हपशी को मंत्री के मार डालने की आज्ञा दी मंत्रीने बड़ी दृढ़ता से कहा कि मुझ वृद्ध का मार डालना बड़ी बात नहीं है परंतु इस से बादशाह का अपयश होगा और राज्य नष्ट हो जायगा बादशाहने उसकी इस बात पर कुछ ध्यान न दिया और एकाएकी अपने रणवास को चला गया और वह दास मंत्री के पास आया उस काल में मंत्री की अवस्था ७८ बरस की थी मंत्रीने काबे की ओर मुख करके सिर झुका दिया तब बधिकने उसका सिर काट डाला सिर कटने से थोड़े दिन पहले मंत्रीने अपने बादशाह की प्रशंसा में कविता की थी ॥

बादशाह के चित्त में यह बात थी कि हमारे मंत्रीने बहुतसा रुपैया इकठा किया है और उसके भंडार में बहुतसा रुपैया होगा परंतु वही खाते से केवल इतना जान पड़ा कि मंत्री कैसा धर्मात्मा था उसके भंडार में दस सहस्र रुपैये से अधिक न निकला उसके भंडारीने थोडे रुपैये होने का यह कारण बताया कि मंत्री की जागीर में से जितना रुपैया आता था वह सब राज्य के भृत्यों के मासिक में दिया जाता था और २ जो कुछ शेष रह जाता था बादशाह के नाम दीन और दुःखी लोगों को दिया जाता था और मंत्री जितना रुपैया हिंदुस्थान में से लाया था उस में से यह ब्योपार किया करता था और उसकी बृद्धि से दो एक रुपैये उसके भोजन खरच में नित उठते थे और शेष को अपने नाम से पुण्य किया करता था वह सदैव चटाई पर सोआ करे था और मट्टी के पात्र में भोजन किया करता था बादशाह को यह बात ठीक निश्चय हो गई कि मैंने अपने राज्य भर के अत्यंत बुद्धवान और बड़े सावधान और धरमात्मा को जो पांच बादशाहों के आगे से लगातार मंत्री रहता आया था निरर्थक और लोगों के कहने से मरवा डाला इस से बादशाह को बड़ी ग्लानि और लज्जा हुई॥ मंत्री के मारने का फल तुरंत जान पड़ा क्योंकि जब बादशाहने राजधानी में जाने की आज्ञा

दी तब उसके कई बड़े २ सेनापति उसके साथ चले तो भी अपनी अपनी सेना बादशाही सेना से अलग अलग कर ली और कहा प्रधान मंत्री के मारने के पीछे छोटे २ सरदारों के बचने की क्या आस है राज्य में सब को निश्चय हो गया था कि इस कुल का अंत निकट आ चुका और प्रत्येक सूबेदार स्वाधीन होने को उपस्थित हुवे मंत्री के मारे जाने से एक ही बरस के भीतर मिरगी की पीड़ा से वह मरा और उसी पीड़ा की दशा में चिल्लाता था कि महमूद गावां मेरे टुकड़े टुकड़े करता है यह बादशाह ईसवी संवत् १४८२ के प्रारंभ ही में मरगया॥

बाहमनी कुल का और विशेष लिखना कुछ आवश्यक नहीं और महमूद गावां के भिन्न किसी मरनेवाले की बात ऐसी सच्ची नहीं निकली थी जब फरसा उसके साम्हने चमका तब उसने कहा कि मेरा सिर काटना राज्य का भ्रष्ट करनेवाला होगा निश्चय इस निपुण प्रधान के मारे जाने से दक्षिण का राज्य नष्ट हो गया॥ तिसपीछे इस बादशाह का बेटा सिंहासन पर बैठा और सैंतीस बरस राज्य किया परंतु राज्याधिकार उसके कुल से जाता रहा उसने हसनबहरी को मुख्य निज मंत्री नियत किया जो पहले मंत्री के मरवाडालने में बड़ा कारण था॥ थोड़ेही काल पीछे उसके मारने की आज्ञा दी और कासम बरीद इस

पदवी पर नियत हुआ उसने और उसके बेटे अमीर बरीद्ने सब राज्य का प्रबंध अपने अधिकार में कर लिया और अपने स्वामी को केवल नाम मात्र बादशाह रक्खा ॥ सूबेदार फिरनेलगे उन्होंने अपने अपने नाम का सिक्का और खुतबा चलाया ॥ अहमद्-नगर बीडर का राज्य पांच स्वाधीन बादशाहों में बिभाग हुआ, और उस समय उन्होंने अपने अपने बिभाग को अच्छी भांति अपने अधिकार में कर लिया उस काल बाबर नाम मुग़लने दिल्ली का राज्य लेने के लिये उद्योग किया ॥

१ महमूद्गावां के लेपालक प्रिय पुत्र युसुफ आदिल शाहने दक्षिण और पश्चिम के बीच में एक राज्य स्थापन किया और बीजापुर को अपनी राजधानी बनाया जिस के खंडेर अब तक बड़े मनोहर हैं॥ इस कुल के बादशाहों की पदवी आदिल शाही प्रसिद्ध रही ॥

२ अहमद निज़ाम जिस का बाप हसनबहरी मह-मूद् गावां की कटा करवाने के पीछे महमूद् शाह की आज्ञा से मारा गया अपने बाप की कटा का समा-चार सुनके निज राजधानी अहमद्नगर को चला गया जो उत्तर और पश्चिम में है और फिर गया और नवीन राज्य स्थापन किया वह अहमद्नगर का राज्य कहाने लगा और उस कुल की पदवी निज़ाम शाही प्रसिद्ध हुई ॥

३ अमादुल मुल्कने जो बाहमनी कुल के प्राचीन मंत्रियों में से एक था राज्यों के जुदे जुदे होने की व्यवस्था देखकर उत्तर में बरार का देश जो उसके पास था उसको अधिकार में कर लिया और स्वाधीन हो गया उसके कुल की पदवी अमाद शाही थी और बरार की राजधानी गावलगढ़ निश्चित हुआ॥

४ कुली कुतुबने दक्खन और पूर्व के बीच में जो गोलकंडे का सूबेदार था अपने कुल के लिये एक अलग राज्य स्थापन करने का अवसर पाया और उसका कुल कुतुब शाही कहाने लगा॥

५ अहमदबरीद था जिसने अपने बाप के स्थान में बीडर के बादशाह का मंत्री होकर संपूर्ण अधिकार अपने हाथ रक्खा और क्रम क्रम से इस सूबे का राज्य अपने कुल के लोगों को सौंप दिया॥ इस भांति विभाग होने के पीछे बाहमनी कुल के प्राचीन सूबों में यह सूबा शेष रहा था निदान अहमद बरीद अह-मदाबाद बीडर का बादशाह नियत हुआ और उसका कुल बरीद शाही पदवी करके प्रसिद्ध रहा॥

॥ १६ अध्याय ॥

पुरतगीजों का आगमन—यूरप में समुद्र के मार्ग से आने जाने की वृद्धि—डैसने दूसरी बेर उत्तमाशा अंतरीप को देखा—आमेरीका पाई—वासको डिगामा हिंदुस्थान में आया; और कालीकट की पृथ्वी पर और मालावार की छट पर—केब्रल् आल्मीड़ा और आल्बूकर्कका आगमन—आल्बूकर्कने पुरतगीजों के पूरव के राज्य को स्थापन किया—इसके स्थान में एक और मनुष्य नियत हुआ और आल्बूकर्क गोआ में मरगया॥

जब दक्खन के पहले मुसलमानों के राज्य इस भांत अलग अलग हो गये उसी काल नवीन शत्रुओंने समुद्र के मार्ग से हिंदुस्थान के दक्षिण समुद्र के तीर पर आकर बास किया और देशों के प्रबंध और ब्योपार और ही रीत से करदिये ये शत्रु पुरतगीज़ थे जो महम्मद शाह बाहमनी के समय में जब सिकंदर लोदी दिल्ली के सिंहासन पर बैठा राज्य करता था तद वे आये पुरतगीजों के साथ हिंदुस्थान पर ईसाइयों की भी चढ़ाई का प्रारंभ हुआ उन्होंने दो सौ से

अधिक २ बर्षों में हिंदुस्थान का राज्य मुसलमानों से लेलिया जैसे उन्होंने हिंदुओं से लेलिया था॥

इस बृत्तांत से कुछेक काल पहले यूरप के लोगों को जो अब सब वस्तुओं में और विशेष करके जहाज खेवने की विद्या में निपुण हैं समुद्र द्वारा हिंदुस्थान का मार्ग ढूंढने के लिये बहुत लालसा हुई॥ वैनिस्वाले जो उस समय में यूरप के सब पूरव में ब्योपार करनेवालों से धन में अधिक थे और ब्योपार से बहुत धन संचय किया था और पुरतगीज़ उस समय में समुद्र के मार्ग से बहुत आवा जाई किया करते थे उन्होंने समुद्र द्वारा आफिरका के तीर ही तीर बहुत दूर तक यात्रा की थी और नाना वस्तुओं के ढूंढने की बड़ी इच्छा थी॥ ईसवी संबत् १४८६ में पुरतगीज के जान नाम बादशाहने बिचार किया कि जो बन-सके तो आफिरका की सब पृथ्वी के चारों ओर समुद्र के मार्ग से फिर आवें बरथालेमिउ डैस बड़ा बीर और सावधान जहाज चलाने में था एक समूह जहाजों का देकर इस इच्छा को पूरण करने के लिये भेजा वह समुद्र के तीर ही तीर गिनी देश के पास तक पहुंचा जहां एक आंधी आई जो तेरह दिन तक रही और उसको अन जाने स्थान पै बहा लेगई तीर पर पहुंचने के लिये यूरप की ओर चला और कई दिन के पीछे फिर भी पानी के भिन्न और कुछ न

देखा निश्चय है कि वह बिना जाने उत्तमाशा अंत-रीप के आस पास फिरता रहा और पूरब की ओर की पृथ्वी देखने की आस न रही और वह उत्तर की ओर को चला और निदान उस तीर के निकट पहुंचा जो इस अंतरीप के पूरब में है वहां पृथ्वी को देखकर उसको पूरब की ओर अधिक ढूंडढांड करने का उद्योग हुआ परंतु उसके डरपोकने संगियोंने बखेड़ा किया उसके मिटाने के लिये उसे अपने देश की ओर फिरना पड़ा पश्चिम को चलते चलते वह इस अंतरीप के साम्हने आया जिसका होना अगले मनुष्य अनु-मान से जानते थे परंतु यूरपवालोंने अपनी आंखों से पहले ही पहल अबकी बेर देखा था डैसने तो वहां आंधी के कारण बहुतसा दुःख सहा था इसलिये उसका नाम केप आव् ष्टार्म अर्थात् आंधी का अंत-रीप रक्खा॥ पुरतगाल में जब वह पहुंचा तो बाद-शाह इस यात्रा के सुफल होने से ऐसा प्रसन्न हुआ कि उसने इस नाम को पलट करके इसका नाम केप् आव् गुडहोप अर्थात् उत्तमाशा अंतरीप रक्खा जिस नाम से वह अब तक प्रसिद्ध है॥

इस यात्रा से जो कि इस अंतरीप के चारों ओर हुई थी उस्से थोड़े काल पीछे क्रिस्टोफरकलंबस् जनवानगर निवासीने समुद्र के पश्चिम की ओर से हिंदुस्थान में जाने के लिये बीरता पूर्वक समुद्र में नाव

डाली और थल को अपनी दृष्टि से छोड़कर आमे-
रिका की धरती को जाकर देखा जो अब नया महा
द्वीप कहाता है इस अनुपम समुद्र की यात्रा के समय
से सब यूरप् को आश्चर्य हो गया और पुरतगीज़ का
बादशाह अति दुःखी हुआ उसने इस बड़े नाविक की
बात को न माना था इसलिये नये देशों को अपने
राज्य में न मिला सका ॥ परंतु इस निरासता से
उसको कुछ डर न हुआ पुरतगीज़ के बादशाहने
इस हान के पलटे का उपाय किया और डैसने जो जो
कुछ बातें ढूंढी थीं उनके अधिक खोज में लगा रहा
और उस अंतरीप के चारों ओर फिरके और पूरब
की ओर चलके हिंदुस्थान में पहुंचने का उद्योग
किया ॥ निश्चय करके उस काल में हिंदुस्थान को
समुद्र के मार्ग से जाने के लिये बड़े २ उद्योग हुआ
करते थे और हिंदुस्थान के ढूंढने में यूरप के लोगों को
आमेरिका मिलगई और जब ये उपाय हो रहे थे
उसी काल पुरतगीजों का जान नाम बादशाह मर-
गया और उसके चचा के बेटे भाई अमैन्यूअलने जो
उसके पीछे बादशाह हुआ ऐसी बीरता से इस यात्रा
को पूरी करने की इच्छा से और हिंदुस्थान में जाने
को मार्ग निकालने के लिये बहुत सामग्री इकठी की ॥
डैस के प्रबंध में जहाज बन गये यद्यपि जहाजों का
अधिकार उसको न मिला और यह अधिकार वैस

को डिगामाने पाया जा जहाजों के बनाने की विद्या में बहुत प्रसिद्ध था जब जहाज चलने को प्रस्थित हुवे थे तब सब लिसबननगर निवासी उनका चलना देखने के लिये आये सिपाही और मल्लाहोंने बहुतसी अपने२ धर्म की रीतें की इस बिचार से कि हम फिर जीते हुवे उलटे नहीं फिरेंगे॥

ईसवी संवत् १४९७ में जोलाई महीने की अठवीं को लिसबन के बंदर स्थान से तीन जहाज लेके चला चार महीने से अधिक२ में वह इस अंतरीप तक पहुंचा और जब बायु समान चल रही थी और आंधी जिस का बड़ा भय था नाम को भी न थी वह इस अंतरीप के चारों ओर फिरा और थोड़े काल पीछे उसने मलिंदा के बंदर स्थान में लंगर डाला यह स्थान आफिरका में समुद्र के तीर पर है वहां के लोगोंने मित्रों का सा आचरण किया और एक अगवा हिंदुस्थान में पहुंचा देने के लिये साथ दिया ईसवी संवत् १४९८ के मई महीने की बाईसवीं को अर्थात् लिसबननगर से चलने के दस महीने चौदह दिन के पीछे वह मालावार के तीर पर पहुंचा जो कालीकट-नगर के साम्हने समुद्र के तीर पर है और वहां बड़ा मैदान था और उसकी सीमा पर ऊंचे पहाड़ हैं उस समय में कालीकट के बीच ब्योपार बहुत होता था उस में एक स्वाधीन हिंदू का राज्य था और मुसल-

मानों के जय किये हुये देशों की सीमा के दक्षण को था वहां के अधिपति को जैमोरिन् कहते थे और यह नाम कुछ समुद्र के साथ संबंध रखता था और ऐसा बिना बिचारे यह नाम नहीं हो सकता जैमोरिन्ने उन मनुष्यों को देखने से जिन के शस्त्र और डौल डौल और आचरण उन मनुष्यों से भिन्न थे जो पहले उस बंदर में आया करते थे और उनके आने का मार्ग नहीं जाना गया था॥ अचंभे में आकर बटोही की बड़ी सिष्टाचारी की और उनकी इच्छा पूरी करने के लिये सब भांति की कृपा की इसी तौर पर समुद्र द्वारा ब्योपार उस समय में मिसर और अरब के मुसलमानों की भांति होता था जो हिंदुस्थान के पूरब ओर के सब बंदर स्थानों में सामर्थ रखते थे उन्होंने इन लोगों पर जो बिघ्न करता था बहुत डाह की और सब भांति से उनको इस यात्रा के बिगाड़ने में परिश्रम किया उन्होंने आपस में बहुतसा रुपैया इकठा करके बादशाह के मंत्री को अपनी ओर करने के लिये घूंस दी कि वह अपने स्वामी को समझावे कि ये लोग पांथ नहीं हैं जो अपने ताईं कहते हैं वरन ये समुद्र के लुटेरे हैं और अपने देश से भाग के और आफिरका के तीर को लूटकर आये हैं और अब हिंदुस्थान पर भी इनकी बुरी दृष्ट है इस रीत से बादशाह का मन पुरतगीजों से अप्रसन्न हुआ और

नवीन ब्योपारियों को धमकाने के लिये आज्ञा दी परंतु बादशाह के बिना जताये उनके ऊपर बड़े२ अन्याय ऊए और जब गावां चीज वस्तु के लादने में लग रहा था उसी काल में उसके संग के दो सरदार जो तीर पर थे पकड़े गये उनके पलटे में वहां के ६ लोगों को जो दैवयोग से उसके जहाज पर आ गये थे पकड़ लिया और अपने सरदारों के छूटने बिना उनको छोड़ने का निषेध किया इस बात के जानने से बादशाह को बिचार ऊआ गावां बंदर से वहां के निवासियों के समेत चला तुरंत कई नावें तीर की ओर से आती देखीं उन में एक पर दोनों पुरतगीज सरदार थे जहाजों के निकट जाने से कई वहां के लोगों को फेर दिया और कई को लिसबननगर लेजाने के लिये रखलिया इसलिये कि जब कालिकटनगर निवासी फिरके आवें तो लिसबन के चमत्कार का बर्णन करें॥ यह बिचार अच्छा नहीं था क्योंकि उनके लुटेरे होने का संदेह इस बात से बादशाह के चित में बऊत दृढ़ होगया॥ गावां सब बड़े मोल की वस्तु लाद कर घर को चला और ईसवी संवत् १४९९ के अगस्त महीने की उनतीसवीं को अर्थात् दो बरस दो महीने की यात्रा करके टेगस नदी में पऊंचा जो लिसबननगर के नीचे बहती है छोटे और बड़े सब लोग आगे बढ़ के उसको लेने को आये और उसने

राजाओं की सी धूमधाम सहित नगर में प्रवेश किया बादशाहने इस यात्रा के सुफल होने के कारण कई दिन तक बड़ी प्रसन्नता मनाई और उसको बहुतसा द्रव्य और प्रतिष्ठा दी इस यात्रा का स्मरण रखने के लिये जो ईसाइयोंने पहले ही पहल समुद्र के मार्ग से हिंदुस्थान की ओर की थी एक बड़ा भारी गिरजा बनाया॥

पुरतगीज़ के बादशाहने वैस को डीगीमा की यात्रा का पीछा न छोड़ा और दूसरी यात्रा के लिये बड़ी सामग्री इकठी की और तेरह जहाज जिन में बारह सौ मनुष्य थे चलाने को उपस्थित हुवे और उनका अधिकार काब्रल नाम मनुष्य को मिला॥ हिंदुस्थान में ईसाई मत के फैलने के लिये आठ पादरी उसके संग चले और आज्ञा मिली कि जिस देश के लोग उनकी शिक्षा न सुने तो उस देश को काब्रल् आग और तरवार से नष्ट करे॥ ईसवी संवत् १५०० में काब्रलने हिंदुस्थान में आते हुए ब्रेजल देश की सीमा देखी जो दक्षण आमेरिका में है उसनें उसको तुरंत पुरतगीज् के बादशाह के नाम से अधिकार में फिर लिया और इस काल से थोड़े काल पहले तक पुरतगीजों के आधीन रहा काब्रलने उत्तमाशा अंतरीप के चारों ओर फिरने में अत्यंत भयानक आंधियों का दुःख सहा और उसके चार जहाज डूबगये जिन में

एक नामी डैस था जो इस समुद्र में सब यूरपवालों से पहले आया था कालीकट में पहुंच कर काब्रलने पहले उन लोगों को छोड़ दिया जिन्हों को पुरतगीज़ में बलात्कार से पकड़ लेगये थे और जिन पर बहुत कृपा की थी पुरतगीजवालों का काम पहलेही पहल अच्छा जम गया जहाजों का अधिपति तीर पर उतरा और जैमोरिन् से मित्र भाव से मिलाप किया और अच्छे २ बड़े मोल के बहुत पदार्थ उसकी भेट किये परंतु मिसर और अरब के मुसलमान इन लोगों के फिरआने का सहन न करसके जिन लोगों को अपने जाने सदा के लिये भगा दिया था और पुरतगीजों के निकाल देने के लिये सब प्रकार के उपाय करने लगे निदान कुछ पदार्थ उनके हाथ न आने दिये काब्रलने बादशाह से प्रार्थना की और उसकी ओर से अपने जाने मुसलमानों के जहाजों में जो पदार्थ उस समय में कालीकट के बंदर स्थान में थे लेलेने की आज्ञाप्राप्त की॥ इतिहासवेत्ता अनुमान करता है कि यात्रियों के फसाने के लिये यह केवल एक छल बनाया था क्योंकि मुसलमानों का एक जहाज जिस में बड़े बड़े मोल के पदार्थ भरे थे उनके साम्हने किया गया जिन को उन्होंने पकड़के सब पदार्थ अपने जहाजों में भर लिये मुसलमान शीघ्र बादशाह के पास भागे गये और कहा कि इन पर-

देशिओं का आचरण आपने देखा और इनके प्रत्यक्ष दुराचरण में कुछ संदेह न रहा यह सुनके बादशाह- ने उनके निकाल देने की आज्ञा दे दी तुरंत उन्होंने पुरतगीजों की कोठी पै चढ़ाई की जिस को उनने बनाली थी और उस में के प्रत्येक मनुष्य को मारडाला काब्रलने इस अप्रतिष्ठा के पलटे में उस से भी अधिक हानि की ॥ उसने मुसलमान के दस जहाज पकड़ लिये और उनका सब पदार्थ अपने जहाजों में भर- लिया और उन में आग लगा दी और फिर तीर के निकट जाकर अपनी तोपों से नगर को जला दिया और कोचीन को चला गया जहां का अधिपति कालीकट के बादशाह को बलात्कार से कर दिया करता था इस अधिपति से इसने बचन करलिया और बज्जतसे पदार्थ वहां से लेकर लिसबननगर को चला जहां वह ईसवी संवत् १५०१ के जोलाई महीने के बीचोंबीच पज्जंचा ॥

यद्यपि इस बृत्तांत के समाचार इच्छा पूर्वक न थे फिर भी उन से पुरतगीज़ के बादशाह के चित्त में पूरब की ओर एक राज्य स्थापन करने का उत्साह ज्जआ उसने आप अपने ताईं हबश् अरब फारस और हिंदुस्थान में जहाज चलाने जय करने और ब्योपार का अधिपति कहाया और पहलो दोनों बेर की अपेक्षा अब एक बज्जत बड़ा बेड़ा जहाजों का उप-

स्थित किया उसका अधिपति वैस को डिगामा को किया जो हिंदुस्थान में दूसरी बेर निर्भय पहुंचा और कालीकट के साम्हने लंगर डाला और काबूलने जो अपनी अप्रतिष्ठा का पलटा लिया था उसकी अपराध क्षमा करवाई परंतु यह बात न मानी गई तब उसीने शीघ्र पंचास वहां के निवासियों को जो उसके जहाज पर आये थे कटा करवाया तुरंत कालीकट नगर को तोप से बहुत सताया और लंगर उठाकर कोचीन के बंदर स्थान को चला जहां के अधिपति से मित्रता हो गई थी और वहां बहुधा पुरतगीज़ जाते थे और वहां से जहाज भरके यूरप को चलता हुआ तिस पीछे तीन बेर उनके जहाज हिंदुस्थान को आये परंतु उनका समाचार कोई लिखने योग्य नहीं है जहाजों में कुछ सामग्री अलटा पलटा करके और कुछ वस्तु धमकी से लेकर फिर लिसबननगर को चले आये॥ बड़ी अज्ञानता से पाशीको को वहां छोड़ गये थे जो पुरतगीजों की कोठी की रक्षा के लिये कोचीन में रहा करता था और केवल थोड़ेहीसे सिपाही उसके पास छोड़ आये थे यद्यपि उस समय बहुधा संपूर्ण देश उन से फिरा हुआ था॥ कालीकट का अधिपति जैमोरिन् कोचीन के फिरे हुवे सरदार को असहायक जानकर सब सेना लेके उस पर चढ़गया॥ बड़ा बीर पाशीको यद्यपि जानता था कि इस कठिन

काल में यूरपीय सिपाही के भिन्न और किसी का बिश्वास नहीं तो भी शत्रु की धूमधाम को निडर होकर देखता रहा कालीकट की सेना इसके कटक से पचास गुनी थी परंतु उसने अपनी सावधानी और सेना की बीरता से शत्रु के प्रत्येक धावे को हटा दिया जो उसके ऊपर समुद्र द्वारा और स्थल द्वारा हुए थे और इसी बात से पहले यूरप की सेना की प्रतिष्ठा हिंदुस्तानी सेना की प्रतिष्ठा से अधिक हुई इस बात का प्रमाण तीन सौ बरस के बीच में भली भांति प्रगट हुआ॥

ईसवी संबत् १५०५ में पुरतगीज़ के बादशाह ने फरासीस आलमीड़ा को हिंदुस्थान का अधिपति नियत करके भेजा यद्यपि उस समय में पुरतगीजवालों का अधिकार हिंदुस्थान में एक बिस्वेभर पृथ्वी पर न था आलमीड़ा अपने पहले आनेवालों में बुद्धवानी में किसी से न्यून था और निश्चय है कि पुरतगीज के जय होने का बड़ा कारण यह हो सकता है कि उन्हों ने बड़े बुद्धवान सरदारों को छांटके हिंदुस्थान में भेजा कहते हैं कि आलमीड़ा के पहुंचते ही बिजयनगर के राजा ने ऐसे उत्तम पदार्थ देकर दूत को उसके पास भेजा कि उनके समान उत्तम वस्तु पुरतगीजों ने अब तक उस से पहले हिंदुस्थान में न देखी थी बरन यह भी कहा है कि यद्यपि वह पक्का हिंदू था तो भी उसने

पुरतगीज के बादशाह के बेटे से अपनी बेटी का ब्याह करना चाहा इस रीत से उन से संबंध करने का विचार चाहा। इस समाचार से आलमीड़ा का चित्त प्रसन्न ज़ुआ परंतु शीघ्र एक बिनचाहाडर आने से बज़ुत घबराहट ज़ुआ हमने बर्णन किया था कि अंतरोप की ओर से हिंदुस्थान का मार्ग ढुंढने से पहले वैनिसवालोंने पूर्व द्रव्य और सामग्री का ब्योपार अपने आधीन करलिया था और कई ओर से पदार्थ लाकर यूरप के देशों में फैला देते थे और इसी रीत से इतना द्रव्य इकठा किया था कि वैनिसनगर से और बिद्यावान् देश जलने लगे उनके बंदरस्थान में कदाचित् मिसर बज़ुत बड़ा था इस कारण पुरतगीजों का ब्योपार उनके ब्योपार को बज़ुत हानि कारक था वैनिसवालों को बज़ुत भय उत्पन्न ज़ुआ और उन्होंने मिसर के सुलतान को जिसका देश तुरकोंने उस समय तक जय नहीं किया था रैडसी अर्थात् रक्त समुद्र में जहाजों का बेड़ा बनाने के लिये कहा कि वह हिंदुस्थान के समुद्रों में उन हानिकारक लोगों का चिन्ह न रहे॥ उन्होंने डलमेशिया के जंगलों में से लकड़ी काटकर लादीनी और उस लकड़ी के सिकंदरिया में जहाज बने और कुछ थल के मार्ग से और कुछ जल के पथ से स्वएज् नाम डमरू मध्य में लेगये॥ इस मिसरवालों के जहाज के बेड़े का अधिपति मीर-

ऊकम होकर हिंदुस्थान को चला और गुजरात के बादशाहने मलिक अयाज़ नाम जहाजों के प्रसिद्ध सेनापति को उनकी सहायता करने के लिये आज्ञा दी पुरतगीजों के जहाज आलमीड़ा के पुत्र लारिंजों के अधिकार में थे वे उत्तर की ओर शत्रु के ढुंढने में फिरते रहते थे और चोल के बंदरस्थान में लंगर डाला था जब शत्रुओं के जहाजों के बेड़े उनको दिखाई दिये पुरतगीज दो दिन तक बड़ी बीरता सहित लड़े परंतु उनके जहाज बऊत टूट गये और बऊतेरे सेनापति लारिंजों सहित घायल ऊवे और शत्रु से जय पाने की आस न रही इसलिये पुरतगीजोंने पीछे को हटने का बिचार किया परंतु लारिंजों का जहाज मच्छी पकड़ने के स्थान में अटक गया और उस पर शत्रु के जहाजों से गोले बरसते रहे जो उसके चारों ओर घिरे ऊए थे ऐसी बीरता दिखाने से उसके शत्रुओं को बड़ा बड़ा अचंभा ऊआ और निदान वह घायल होकर मरगया॥ आलमीड़ाने यह समाचार दृढ़ता से सुने वरन उसने बड़ी कठोरता से पलटा लेन का बिचार किया॥

उसने सुना कि दावल जो समुद्र के तीर पर बड़ा बसता ऊआ नगर था मिसरवालों की ओर होगया उसने बड़े पराक्रम सहित चढ़ाई की और उसे संपूर्ण भांति से लूटकर और आग से जलाकर राख किया

इन मनुष्यों को कटा और अयश के पीछे वह उस बेड़े को ढूंढने चला जिसने उसके पुत्र को हराया था इस बेडे को उसने देव के बंदरस्थान में पाया उसके अधिपति मीरहुकम और मलिक अयाज़ थे बड़ी देर तक लड़ाई रही परंतु अंत में सब बड़ी बड़ी नावें मुसलमानों की जलाईं या लूटो गईं और छोटी २ नावें नदी में भागीं इस शत्रु के हाथ न लगने सकीं निदान आपस में मिलाप होगया और अयाज़ने सब इरप के बंदवे सोंप दिये आलमीड़ा अपने बेटे के मारे जानेका पलटा अब तक लिया चाहता था और उसने सब बंदुवों को जो उसके साथ गये थे कोचीन जाने के समय मरवा डाला॥

आलमीड़ा को कोचीन में आकर पुरतगीजी सेना का अधिकार छोड़देना पड़ा और अलबूकर्क को इस कटक का अधिकार मिला जो थोडे ही काल पहले यूरप से आया था॥ वह सब उन पुरतगीजी अधिपतियों में अत्यंत बड़ा योग्य था जो हिंदुस्थान में आये थे अलबूकर्क का यह बिचार था कि अपने देश-वालों का एक बड़ा राज्य पूरब में प्राप्त करूं और उसको यह यात्रा सब भांति सुफल भई वह ईसवी संवत् १५०६ में आया और डाकूपने के कामों पर संतोष न करके एक स्थान ढूंढा और वहां एक दुर्ग बनाना बिचारा और अपने जहाजों के बेडे का लंगर

स्थान करना ठहराया इसलिये कि हमारे जय करने के उपाय सुफल होंय और वहां उसने नई बस्तियां बसाईं इन कामों के योग्य गोवा नाम द्वीप को जाना जो मालाबार के तीर पर २३ मील के घेर में है उस द्वीप को उसने लेलिया तिस पीछे वहां के पहले अधिपतिने उसे निकाल दिया परंतु उसने फिर जाकर उसे लेलिया और एसा दृढ़ कोट बनवाया कि आगे को वहां के रहनेवालों की चढ़ाई उसके लेने में कुछ सुफल न होसके उस समें गोवा पुरतगीजों के राज्य की राजधानी हुआ और अलबूकर्क ऐसी धूमधाम से अपने राजदूत भेजने लगा कि हिंदुस्थान के किसी राजा की सभा इस दूत से अधिक चमत्कार ना रखती थी और इसी रीत से उसके पास भी राजदूत आने लगे इस नये स्थान का प्रबंध अत्यंत बुद्धवानी से किया पुरतगीजी ब्योपार को बढ़ाया दृढ़ और सुचित किया उसने और दूर दूर के देशों पर चढ़ाई करने का उद्योग किया बहुधा पूरब की ओर चला और मालाबार को अपने बस में करलिया इस रीत से पुरतगीजों के ब्योपार के लिये सब पूर्बी द्वीपों में एक नवीन प्रबंध कर दिया॥

तिस पीछे उसने हुरमज पर ध्यान किया जो फारस के खाल में है और उसे लेलिया इस रीत से पुरतगीजों के लिये फारस और अरब के आखात के ब्योपार का

अधिकार प्राप्त किया॥ निस्संदेह अलबूकर्क पुरतगीजों के लिये पूरब में राज्य स्थापन करनेवाला ठहर सकता है॥ उसके अधिकार के अंत में पुरतगीजों का राज्य समुद्र के तीर बारह सहस्र मील अर्थात् छह सहस्र कोस तक व्याप्त था उस में ३० कोठी थीं॥

पुरतगीजवालों का हिंदुस्थान में गोवा द्वीप को छोड़ न और कोई रहा न था परंतु सौ बरस से अधिक २ हिंदुस्थान में ब्योपार करते रहे और पूरब के समुद्रों के अधिपति रहे उस काल में उनका कोई प्रतिपक्षी न था॥

अलबूकर्कने हिंदुस्थान में पुरतगीजों का राज्य दृढ़ और स्थिर किया तिस पीछे उसका अधिकार अन्याय पूरवक छिन गया और उसके स्थान में नया अधिपति आया यहां तक कि उसके छुड़ाने के विषय में उसके पास कोई आज्ञा पत्र भी न आया यह अगुणग्राहकता उसके मन में बैठ गई और वह शोक में ईसवी संवत् १५१५ के दिसंबर को १६ को जब वह जहाज पर चढ़ा हुआ था गोआद्वीप में पहुंचने से पहले मरगया तब बड़ी धूमधाम से तीर पर लेगये पुरतगीज और वहां के निवासी जो उसकी सुशीलता के कारण अत्यंत प्यार करते थे शोकाकुल होकर ऐसे रोए कि उनके आंसू से उसकी समाधि भीग गई॥

इति।

शुद्धिपत्र ।

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
७	७	उन क	उन के
९	३	जुगां में	जुगों में
१०	११	ह	है
११	१	लगें	लगे
११	१	हिंदुओं क	हिंदुओं के
११	५	जा	जो
१२	९	सिंदुस्थान में	हिंदुस्थान में
१४	१५	गुजेरात	गुजरात
१४	२१	इन्हों	इन्ही
१६	१६	उत्तर के	उतर के
१६	२१	परिश्रभ	परिश्रम
१६	२३	धर्भ को	धर्म को
१७	१७	बोलि ों में	बोलियों में
२०	२३	अपन	अपने
२१	३	देवते	देवता
२२	२	हिन्दुस्थान वे	हिन्दुस्थान में
२७	११	ढेते	देते
२९	१	जसा	जैसा

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३१	१	युधिष्ठिर क	युधिष्ठिर के
३८	८	जुयें	जूए
[redacted]	१	गय	गये
४३	११	चिन्दस्थान में	हिन्दुस्थान में
४४	३	बरस क	बरस के
४४	१७	हमने	मने
४५	१४	आलस्यी	आलसी
५१	१	समबत् के	सम्बत् के
५२	१५	सिंदुस्थान से	हिंदुस्थान से
५२	१६	प्रथ्वी	पृथ्वी
५३	२१	उन्हों में	उन्हों में
५४	२	आश्चर्य की	आश्चर्य की
५५	५	हा	हो
५६	२०	है	हैं
६४	२०	स	से
७१	१०	संबधना रहे	संबधवना रहे
८९	२३	चंध्र	आंध्र
९४	४	चढाइयों	चढाइयां
११३	७	फिरेस्तः	फ़रिस्तः
१२८	१०	प्रतिमा	प्रतिभा
१२८	२३	जात	जोत
१४०	२१	कुतुबुद्दीन	कुतुबुद्दीन